ATMANAND STAVANAVALI

MUNI SHRI KARPURVIJAYAJI MAHARAJ

Second Edition.

(Thoroughly Revised and Enlarged)

PUBLISHED BY

BABU SUMERMAL SURANA,

OF

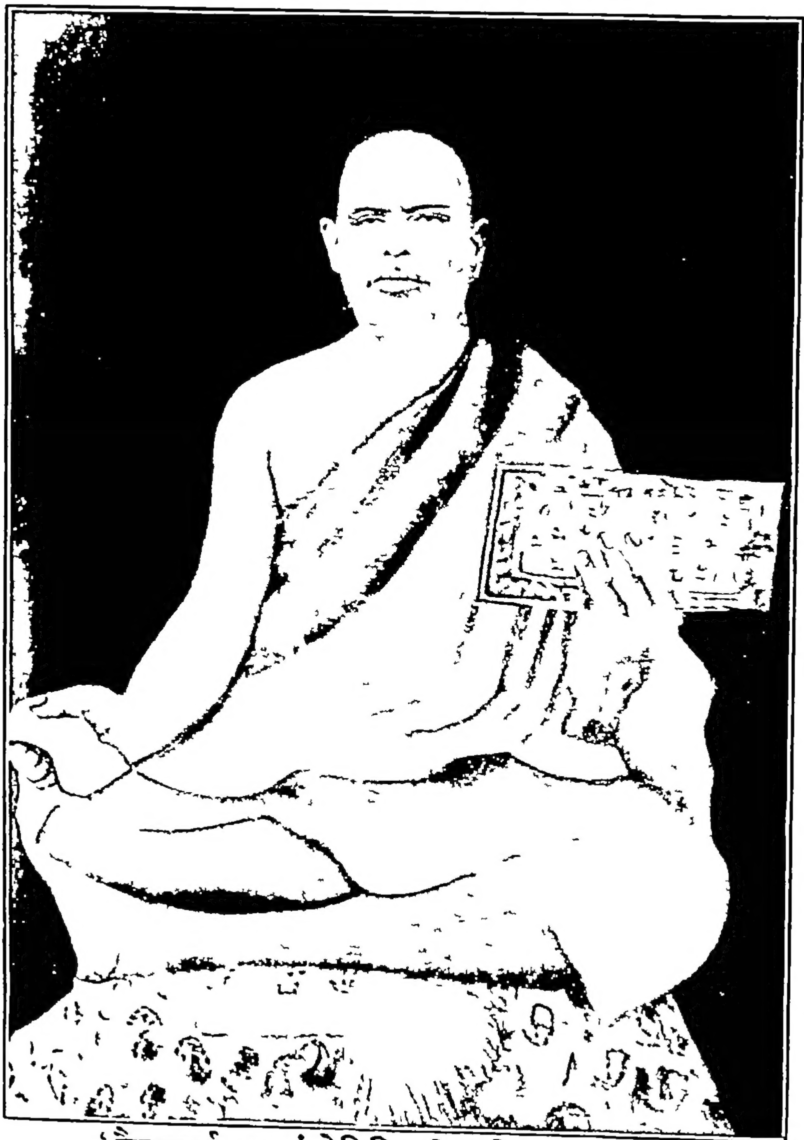
CALCUTTA.

1000 Copies] *Free Distribution* [*1917*

PRINTED BY
PANDIT ATMARAM SHARMA
at the George Printing Works, Kalbhairo, Benares City
PUBLISHED BY
BABOO SUMERMAL SURANA,
CALCUTTA

"न्यायांभोनिधि श्रीमद्विजयानंद सूरि—
(आत्मारामजी) महाराज"

जन्म संवत १८९२—स्वर्गवास संवत १९५३



'जैनाचार्य न्यायांभोनिधि श्रीमद्विजयानंदसूरि—
(आत्मारामजी) महाराज"



॥ उपाध्यायजी ॥

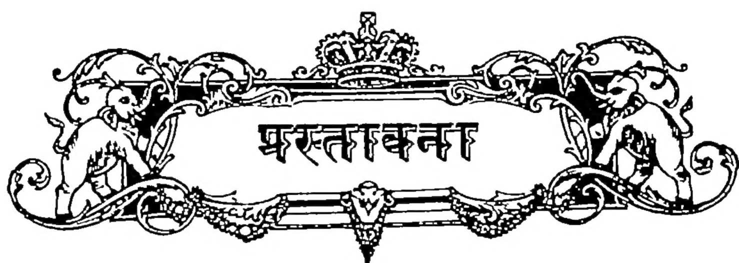
"श्रीमद् वीरविजयजी महाराज"



पी० आर पारख

❀ पारख-निवास ❀

वेटरीनरी होस्पीटल रोड,



वंदन ! कोटिशः वंदन ! ! ते जगद्वंद्य श्रीविजयानंद सूरीश्वरना पाद पंकजमां । कालनो अनंत महासागर तेमना उज्ज्वल अस्तित्व उपर फरी वल्योछे, ए महासागरनुं प्रत्येक मोजुं सूरीश्वरनी मधुर स्मृतीओ भुंसाडवा अहोनिश गर्जारव करी रह्युंछे । छतां आजे एक पण एवो जैन बतावशो के जेनुं हृदय श्रीमान् आत्मारामजीना स्मरण मात्रथी उल्लसित न थतुं होय ? एवो कोइ हीनभागी जैन बतावशो के जे आत्मारामजी महाराजना देवचरित्रमांथी पुरुषार्थना, साहसिकताना, भूतदयाना अने अशेष मनुष्य प्रेमना पाठो न शीखतो होय ? जेमणे एक काले जगतनुं अज्ञान-तिमिर टालवा अद्भुत ज्ञान भास्कर प्रकटाव्यो हतो । भास्करना प्रचंड छतां स्वास्थ्यकर किरणोए जगत्ने सत्यनुं स्वरूप समजाव्युं हतुं, विश्वमां उत्तेजना अने कर्तव्य प्रेरणानुं मधुर संगीत छेड्युं हतुं। आजे विश्ववंद्य श्रीविजयानंद सूरिजी सशरीरे

जो के विद्यमान नथी, तो पण तेमनो अक्षय कीर्तिदेह अने अक्षर देह अमारां मानस चक्षुओ पासे नित्य नवारूपे दृष्टिगोचर थायछे। तेमनो जलद गंभीर स्वर आजे संभलातो बंध पड्योछे, तो पण तेमनी जे वीर गर्जनाए अमेरिकानी सर्वधर्मपरिषद् पर्यंत प्रतिध्वनि पाड्यो हतो, ते वीरहाक हजी पण अमारा कर्णोमां गुंजारव करी रह्योछे। कालनी शताब्दीओ पण ए पुण्यश्लोक गुरुवरनां मधुरां स्मरणो लुप्त करी शके तेम नथी। जगतना अनंत नाम भंडारमांथी जैन समाजे "आत्मारामजी किंवा श्रीविजयानंदसूरीश्वर" नुं जे नाम हृदय मंदिरमां संग्रही राख्युंछे, जे नाम जैनमात्रनी उपासना अने पूजाने पात्र छे, जे नाम भक्तिना सुवर्ण सिंहासने विराजित छे, ते नामनो क्षुद्र कालबल केवी रीते लोप करी शकशे ? श्रीमान् आत्मारामजीना अशेष उपकारोथी दबायेली जैनप्रजा ज्यांसुधी पोताना भूतकालने हृदयथी चाहती रहेशे, त्यां सुधी ते भूली शकशे नहीं। अमारी वाणी के लेखिनीमां एवुं ते शुं सामर्थ्य छे के अमे तेमनी गुणावलीनुं गान निःशेष करी शकीए ? पंजाब—अनेक संत महंतोनी पवित्र जन्म भूमि· पंजाब—धर्मवीर योद्धाओनी चरण रजथी अंकित थयेली वीरभूमि—पंजाब, ए श्रीविजयानंद सूरीश्वरनुं कीर्तिनिकेतन छे, सहस्र नर-नारीओ--आबाल-

वृद्ध वनिताओ तेमनी भव्य वाणीनुं अमृतपान करी नवुं जीवन पामेछे—नवुं चैतन्य स्फुरावेछे। पंजाबना ए धर्मवीर योद्धानुं शौर्य-वीर्य पंजाबनी जैन प्रजानी नसे नसे व्याप्त थइ रह्युछे। गुजरातीओ पण कंइ तेथी वंचित नथी। दयानंद सरस्वती जेवा सबल शत्रुओनी सामे जेमनी सुयुक्ति पूर्ण वाणी अमोघ सुदर्शन स्वरूप गणाती हती, स्थानकवासीओना पुष्पास्त्र सामे जेमनुं वज्रास्त्र निरंतर झझुमतुं हतुं, जेमनी तेजोमय मूर्त्ति निरवपणे यथार्थ मनुष्यतानुं ज्वलंत चित्र प्रकटावती हती, ते युग प्रभावक मुनिवरनी कीर्त्तिगाथा सहस्रकंठे गाइए, तो पण अधुरीने अधुरीज भासेछे। व्याख्यान--वाचस्पति पण जेमनी सबल वक्तृत्वशैली पासे लज्जित थाय, एक "मार्टीयर" पण जेमनी धर्मार्थप्राणाहुति पासे निस्तेज थाय, जेमनी मुखमुद्रा सागरनी गंभीरतानुं सूचन करती हती, जेमनां शांत, उज्ज्वल अने वीरत्वभर्यां नेत्रोमांथी विश्व प्रेम, अखंड मैत्री अने जगदुद्धारना दीप्तिमय किरणो वर्षतां हतां, ते श्री आत्मारामजी अमारा आत्मरूपी आरामने आजे पण अमूल्य रमणीयता अर्पी रह्याछे। अमारी पासे एवी ते कइ संपत्ति छे, एवी ते शी सामग्री छे, के अमे ते प्रातःस्मरणीय मुनीश्वरना चरण युगलमां ढाळी दइए? नथी धन संपत्ति, नथी बुद्धि-

संपत्ति, के नथी आत्म संपत्ति। आपनीज संपत्ति आपने अर्पिए तो? आपनांज स्तवनो, आपनांज पद्यो अने आपनीज भावनाओनो स्वर्गीय पुष्पहार आपना कंठमां आरोपीए तो? आपना अवतरणथी अमारो समाज सौभाग्यशाली बन्यो छे, आपनी निर्मल बुद्धि शक्तिना विद्युत चमकाराओए भूतलना सर्वश्रेष्ठ पंडितोने आश्चर्य चकित बनाव्याछे। अत्यारे कई देवभूमि आपना अस्तित्वथी अहोभाग्य बनी छे ते अमे नथी जाणता। मात्र एटलुं जाणीए छीए के आपना जन्मोत्सव समये जे अमरोए स्वर्गमां विजयी जैन शासननी विजयध्वजा फरकावी हती, जे देवोए अलक्षमां रही अदृश्यपणे पुष्पवृष्टि करी हती, ते देवो आपनो सहवास पामी कृतार्थ थयाछे। जैन समाज आपना देह विलयथी चोधार आंसु वरसावेछे। जे समाजमां आपे एककाले सदुपदेशनो प्रवाह वहेवडाव्यो हतो, अने जे शासन उद्यानने, फल फुल कुसुमित कर्युं हतुं, ते उद्यान आजे शुष्कवत् बनी गयोछे। पुनः मेघ मल्हार गाइ नवा मेघ कोण आणशे? अमारा खाली खोखाओमां आत्मतेज कोण पूरशे? आ हिंदभूमि पुनः आत्मारामजी समा केशरी सिंहोथी क्यारे गर्जित थशे? एटलुं सद्भाग्य छे के आपनां पदचिन्हो हजी लुप्त नथी थयां, आपे प्रबोधेलो मार्ग हजी धुलीधुसरित नथी

थयो, परंपरामां उतरेलो आपनो पुण्यप्रभाव हजी क्षीण नथी थयो । आपना शिष्यो, आपना अनुयायिओ, आपना प्रशंसको, आपना पगले चाली यथाशक्ति अज्ञान तिमिर अजवालेछे, जगतनुं कल्याण साधेछे। विशेष शुं कहीए? आपना जवाथी जैन शासननो एक उपयोगी स्तंभ तुटी पड्योछे, अमारा प्रतापी दिनकर आथम्यो छे। गुरुदेव ! पुनः आपनी आत्मविभूतिनी प्रोज्ज्वल चिणगारीओ आ मर्त्यभूमि उपर प्रेरो, जैन शासनने जयवंतु करो ।

कोइ कहेशो के जैन भारतीना भुवनमां आवुं तिमिर क्यारथी प्रसर्यु ? कोइ कहेशो के जैन साहित्य अने न्यायनो कल्पतरु क्यारथी करमावा लाग्यो ? इतिहास साक्षी पूरेछे, अभ्यासीओ समर्थन करेछे के श्रीयशोविजयरूपी न्यायनो दिवाकर अने साहित्यनी विविध शाखाओने हृदयनो रस पाई उछेरनार माली सीधावतां शासनमां शून्यता छवाइ छे। जेमणे विद्याप्राप्ति अर्थे देशत्याग करी, वेशपरिवर्तन करी, दुश्मनोना चरणमां बेसी अध्ययन कर्यु हतु, जेमणे बार वर्ष पर्यंत काशीवास सेवी कठोर संयमनियमनो प्रत्येक पगले परिचय आप्यो हतो, जैनविरोधी ब्राह्मण पंडितो पण जेमनी अलौकिक गुणावली उपर मुग्ध थया हता, ते श्रीयशोविजय अने विनयविजय क्यां ? जैन शासननी दाझ जेमनी

प्रत्येक नसोमां, प्रत्येक धमनीमां अने प्रत्येक हृदय स्पंदनमां अभिव्यक्त थती हती, ते बे महारथीओनुं कीर्त्तन अमारे माटे क्यारे सफल थशे ? अमारामां एवी महाप्राणता अने साधना शक्ति क्यारे आवशे? शास्त्रोदधि मंथन करी सुधर्मना सुंदर रत्नो श्रीयशोविजय सिवाय अन्य कोण शोधीने अर्पी शकत? महा अभिमानीओना अंतःकरणने पीगलाववा प्रसंगोपात प्रखर किरणो कोण प्रसारी शकत ? भारतवर्षना मध्यकालना जैन धर्मोद्धारकोनी संख्या नजीवी छे, श्रीयशोविजय अने विनयविजय, ए संख्यामां अग्रस्थान लइ शकेछे। अगणित कष्ट परंपराओने आलिंगन आपी, क्षण भंगुर मिथ्या अपवादोनी सामे अट्टहास्य करी जेमणे शासननो प्रभाव देश विदेशमां विस्तार्यो, जेमनी अगाध बुद्धि, शक्ति अने आत्म संपत्तिनुं विरोधीयो पण गुणगान करेछे, ते श्रीयशोविजय तथा विनयविजय जेवा धुरंधर उपाध्यायो माटे कोण मगरूर न थाय? जैन समाज एवा महा पुरुषसिंहो माटे यथार्थ गर्व लइ शकेछे, मात्र तेमना पगले प्रवर्तवानुं बल कोइ दर्शावी शकतुं नथी। दर्शावेछे तो तेथी सिद्धि कोई मेलवी शकतुं नथी। जैन समाजनुं एज दुर्दैव छे। जैन इतिहासरूपी आकाश श्रीयशोविजय अने विनयविजय जेवा तेजस्वी नक्षत्रोथी परिव्याप्त छे, जैन प्रजा ते

प्रकाशनो सदुपयोग करी शकतो नथी। गीर्वाण भाषाना समर्थ विद्वान् होवा छतां जेमणे लोकोपकार करवानी धर्मबुद्धिने विवश थइ प्रांतिक-देशभाषामां नवुं काव्य साहित्य उमेरतां लेशमात्र संकोच न अनुभव्यो, जेमणे एक बालकथी लइ एक वृद्धने पोतानी वाणीनो लाभ आपवा स्तवनो अने पद्यो-नी रचनाथी लइ न्यायना कठिनमां कठिन गणाता ग्रंथो साहित्य भंडारमां आमेज कर्या, ते श्रीमान् न्यायविशारद न्यायाचार्य महामहोपाध्याय श्रीय-शोविजय उपाध्यायनुं स्तवन अमे अमारी पामर लेखिनीथी करी शकता नथी, मात्र तेमना रचेलां थोडांक स्तवनोज आ ग्रंथमां प्रकट करी समा-जना करकमलमां अर्पीए छीए। जैन संघ पुनः श्री-यशोविजय जेवा शास्त्राभ्यासीओ, कष्टसहिष्णुओ, शासनप्रभावको, लोकोपकारको, निरभिमानिओ, संयमशीलो अने मनुष्यना रूपमां देवो क्यारे उत्पन्न करशे ? एम थशे त्यारेज शासननी प्रभा-वनानो चंद्रमा सोले कलाए खीलशे। जगत् ए प्रकाशमां स्नान करी कृतार्थ थशे। किं बहुना ?

विद्यमान श्रीमान् उपाध्यायजी महाराज श्री-वीरविजयजी अने स्वर्गस्थ प्रातःस्मरणीय देवोपम श्रीमान् देवविजयजीनी प्रासादिक रसभरित वाणी-ना सौभाग्यथी पण वाचकोने वंचित नथी राख्या। ए

रसमूर्त्ति मुनिओनी सरल, सुंदर अने भाववाही संगीतमयी वाणी सांभलवी कोने न गमे ? भविक-जनोना हृदय-कमलने प्रफुल्लित करनारी पुरातन छतां चिर नवीन लागती वाणी सुधा आ ग्रन्थमां शब्दांकित करी ए पूज्य साहित्य महारथीओना चरणमां शिर नमावीए छीए ।

एक विशेष उल्लेख लिपिबद्ध करवानुं प्रलो-भन संयममां राखी शकता नथी। आ उपकारक ग्रंथ प्रकट करवामां बाबू सुमेरमलजीनो असाधारण उत्साह हतो । ए महाशयनेज आ ग्रंथप्रकाशननुं सर्वमान आपीए तो अयोग्य नथी । तेमनी धर्मकर-णीनुं इतिवृत्त छापाना देदीप्यमान अक्षरे हजी ब-हार आव्युं नथी । एवा सहृदय पुरुषो एवी इच्छा पण राखता नथी । परंतु जगतने एवा निर्मानी सहा-यको अने उत्तेजकोनी जटली जरुर छे, तेटली आडं-बर प्रिय मिथ्याकीर्त्तिना सेवकोनी नथी, एम कही-ए तो शुं खोटुं छे ?

संवत् १८६६ मां आचार्य महाराज श्रीविजय-कमल सूरिजी तथा उपाध्यायजी श्रीवीरविजयजी महाराजने साथे लइ जेमणे जेसलमेरनो संघ कहाड्यो हतो । ए निमित्ते जेमणे लगभग पांच सहस्र रुपी-यानो सद्व्यय करी हृदयनी उदारतानो परिचय आप्यो हतो, जेमनी तीर्थयात्राओना प्रसंगो पण

उदारता अने धर्मबुद्धिना समुज्ज्वल दृष्टांतो पुरा पाडेछे अने ते उपरांत, जेओ चतुर्थव्रत धारी रही, संयम-नियमनी सुंदरताना पाठो परिचयीओने पुरा पाडेछे, तेमने धन्यवाद आप्या विना केम रही शकाय ? शासनदेव एवा धर्मप्रेमी सहायको, वाचको अने उत्तेजकोनुं श्रेयः करो ।

द्वितीयावृत्तिमां भूल के भ्रांन्तिने स्थल न होय, छतां अमारा वाचकोनी उदारता उपर विश्वास राखी कहीए छीए के–

" करजो माफ अमारी पामर भ्रांतिओ,
दिनचर्यामां प्रतिपगले जे थाय जो,
मेहेमानो ओ स्नेहे आ स्वीकारजो ।"

वनारस
द्वितीय भाद्रपद शुक्ल प्रतिपत्

कर्पूरविजय ।

विषयानुक्रमणिका।

प्रथम भाग।

बीजो भाग।

आ पुस्तक मलवानुं ठेकाणुं—

बाबू सुमेरमलजी सुराणा,

ठि. बड़ा बाजार, मनोहरदासका कटरामें

मु. कलकत्ता ।

ओम्

न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्री श्री श्री १००८ विजयानन्द सूरिजी (आत्मारामजी) महाराज विरचित स्तवनावली ।

मंगलाचरणम् ।

(इन्द्रवज्रा)

श्रीवीरनाथाय नमः प्रकाममनन्तवीर्यातिशयाय तस्मै ।
अन्तःस्थमेकाङ्गपरिग्रहो यः कामादिचक्रं युगपज्जिगाय ॥१॥

(आर्यावृत्तम्)

जयति भुवनैकभानुः सर्वत्राविहतकेवलालोकः ।
नित्योदितः स्थिरस्तापवर्जितो वर्धमानजिनः ॥ २ ॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवनानि ॥

स्तवन पहेलुं ।

॥ आसणरा जोगी, ए देशी ॥

प्रथम जिनेसर मरुदेवी नंदा । नाभि गगन कुल चंदा रे । मन मोहन स्वामी । समवसरण त्रण कोट सोहंदा । रजत कनक रतनंदा रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तरु असोग तले चिहुं पासे । कनक

सिंहासन कासे रे ॥ मन० ॥ पूर्व दिसि सुर बंदे जासे । बिंब तिहुं दिसि जासे रे ॥ मन० ॥ २ ॥ मुनि सुर नारी साधवी सारी । अग्नि कोण सुखकारी रे ॥ मन० ॥ ज्योति भवन वन देवी निरते। इनपति वायव्य थिरते रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी कूण ईशाने । प्रभु निरखी सुख माने रे ॥ मन० ॥ तुल्य निमित्त चिहुं वर थाने । सम्यग् दरसी जाने रे ॥ मन० ॥४॥ आदि निखेपा तिग उपगारी । वंदक भाव विचारी रे । मन० । वाग जोग सुन मेघ समानो । भव्य शिखी हरखानो रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ कारण निमित्त उजागर मेरो। सरण ग्रह्यो अब तेरो रे । मन० । भगत वछल प्रभु जगत उजेरो । मोह तिमिर हरो मेरो रे । मन० ॥ ६ ॥ भगति तिहारी मुझ मन जागी । कुमति पंथ दियो त्यागी रे। मन०। आतम ज्ञान भान मति जागी । मुझ तुझ अंतर भागी रे। मन० ॥ ७ ॥

स्तवन बीजुं ।

॥ राग मराठीमें ॥

रिखब जिनंद विमलगिरि मंडन, मंडन धर्मधुरा कहीये । तुं अकल स्वरूपी, जारके करम

परम निज गुण लहीये ॥ रिखव० ॥ १ ॥ अजर अमर प्रभु अलख निरंजन, भंजन समर समर कहीये । तूं अदभुत योद्धा, मारके करम धार जग जस लहीये ॥ रिखव० ॥ २ ॥ अव्यय विभु ईश जग रंजन, रूप रेख बिन तु कहीये । शिव अचर अनंगी, तारके जग जन निज सत्ता लही-ये ॥ रिखव० ॥ ३ ॥ शत सूत माता सुता सुहंकर, जगत जयंकर तुं कहीये । निज जन सब तार्ये । हमोसें अंतर रखना ना चइये ॥ रिखव० ॥ ४ ॥ मुखका मींचके बेशी रहना, दीनदयालको ना चइये । हम तन मन ठारो, वचनसें सेवक अ-पना कह दइये ॥ रिखव० ॥५॥ त्रिभुवन ईश सुहं-कर स्वामी, अंतरजामी तुं कहीये । जब हमकुं तारो, प्रभुसें मनकी वात सकल कहीये॥ रिखव० ॥६॥ कल्पतरु चिंतामणी जाच्यो, आज निरासें ना रहीये । तुं चिंतित दायक, दासकी अरजी चि-त्तमें दृढ गहीये ॥ रिखव० ॥ ७ ॥ दीन हीन पर-गुण रस राची, सरण रहित जगमें रहीये । तुं करुणासिंधु, दासकी करुणा क्युं नहि चित्त गहिये ॥ रिखव० ॥८॥ तुम विन तारक कोई न दिसे, होवे तुमकुं क्युं कहीये । इह दिलमें ठानी, तारके

सेवक जगमें जस लहीये ॥ रिखव० ॥ ए ॥ सात वार तुम चरणे आयो, दायक शरण जगत कहीये। अब धरणे बेशी, नाथसे मन वंछित सब कुछ लहीये ॥ रिखव० ॥ १० ॥ अवगुण मानी परिहरस्यो तो, आदि गुणी जगको कहीये। जो गुणीजन तारे तो, तेरी अधिकता क्या कहीये ॥ रिखव० ॥ ११ ॥ आतम घटमें खोज प्यारे, बाह्य जटकते ना रहीये। तुम अजय अविनाशी, धार निज रूप आनंद घनरस लहीये ॥ रिखव० ॥१२॥ आतमनंदी प्रथम जिनेश्वर, तेरे चरण शरण रहीये। सिद्धाचल राजा, सरे सब काज आनंद रस पी रहीये ॥ रिखव० ॥ १३ ॥

स्तवन त्रीजुं ।

॥ राग माढ ॥

मनरी बातां दाखाजी म्हारा राज हो रिखवजी थांने ॥ मनरी० ॥ आंकणी ॥ कुमतिना जरमाया जी म्हारा राजरे कांइ, व्यवहारि कुलमें, काल अनंत गमायाजी। म्हारा राज हो रिखवजी० ॥१॥ कर्म विवर कुछ पायाजी, म्हारा राजरे कांइ। मनुष्य जनमें, आरज देशे आयाजी। म्हारा राज

हो रिखवजी० ॥ २ ॥ मिथ्या जन भरमायाजी, म्हारा राजरे कांइ, कुगुरु वेशे अधिको नाच नचायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥३॥ पुन्य उदय फीर आयाजी म्हारा राजरे कांइ, जिनवर भाषित तत्त्व पदारथ पायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ४ ॥ कुगुरु संग छटकायाजी म्हारा राजरे कांइ, राजनगरमें सुगुरु वेष धरायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ५ ॥ सघला काज सरायाजी म्हारा राजरे कांइ, मनको मर्कट माने नहीं समजायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ६ ॥ कुविषयां संग ध्यावेजी म्हारा राजरे कांइ, ममता माया साथ नाच नचावेजी, म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ७ ॥ महिमा पूजा देखी मान भरावेजी म्हारा राजरे कांइ, निरगुणीयाने गुणीजन जगमें कहावेजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥८॥ छठी वारे तुमरे द्वारे आयाजी म्हारा राजरे कांइ, करुणासिंधु जगमें नाम धरायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ९॥ मन मर्कटकुं शिखो निज घर आवेजी म्हारा राजरे कांइ, सघली वाते समता रंग रंगावेजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ १० ॥ अनुभव रंग रंगीला समता संगीजी म्हारा राजरे

काइ, आतम ताजा अनुजव राजा संगीजी। म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ११ ॥

स्तवन चोथुं।

॥ राग माढ ॥

थारी लइरे सरण जगनाथ आज मुज तारो तो सही ॥ आंचली ॥ क्रोध मानकी तप्त मिटावो, गारो तो सही। मेरे प्रजुजी गारो तो सही। ए दिव्य ज्ञान जग जाण, हृदयमें धारो तो सही ॥ थारी० ॥१॥ मिथ्या रान कपट जमता संग तारो तो सही। ए सम्यग दर्शन सरल, आनंदरस कारो तो सही॥ थारी० ॥२॥ तृषणा रांम जांमकी जाइ वारो तो सही। ए चरण शरण जय हरण, आनंदसे उगारो तो सही ॥ थारी० ॥ ३ ॥ अष्ट करम दल उदजट वैरी मारो तो सही। ए द्वादश विध तव अघम गजार उधारो तो सही॥ थारी० ॥४॥ युगलक धर्म निवारण तारण हारो तो सही। ए जगत उधारण रिखव जिनेश्वर प्यारो तो सही॥ थारी० ॥५॥ विमलाचल मंमन अघ खंमन सारो तो सही। ए आतमराम आनंद-रस चाख उगारो तो सही ॥ थारी० ॥ ६ ॥

स्तवन पांचमुं ।

॥ राग वसंत होरी ॥

साचा साहिब मेरा सिद्धाचल स्वामी ॥ टेक ॥
चेतन करमको जाल फस्यो हे, वेगाही करहु निवेरा ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ दरस करत जो शिव फल ताको, वेग मिटे नव फेरा ॥ सिद्धा० ॥ २ ॥ कलि काले एक तुमरे दरसका, आसरा नविको घनेरा ॥ सि० ॥ ३ ॥ डुषम कुगुरु नरम सब नाठो, अजहु नाग नलेरा ॥ सि० ॥ ४ ॥ आतमराम आनंदघन राच्यो, तुमचो मानहु चेरा ॥ सि० ॥५॥

स्तवन छहुं ।

॥ राग वढंस ॥

॥ हमको छोड चले बन माधो, यह चाल ॥

अब तो पार नए हम साधो, श्री सिद्धाचल दरस करी रे ॥ अबतो पार० ॥ टेक ॥ आदीश्वर जिन महेर करी अब, पाप पटल सब दूर नयो रे ॥ तन मन पावन नविजन केरो, निरखी जिनंद चंद सुख थयो रे ॥ अ० ॥ १ ॥ पुंमरीक पमुहा मुनि बहु सिद्ध्या, सिद्धक्षेत्र हम जाच लह्यो रे । पशु पंखी जिहां छिनकमें तरीया, तो हम दृढ विसवास गह्यो रे ॥ अ० ॥ २ ॥ जिन

गणधर अवधि मुनी नाही, किस आगे हुं पूकार करुं रे । जिम तिम करी विमलाचल नेट्यो, नवसागरथी नाही मरुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ दूर देशांतरमें हम ऊपने, कुगुरु कुपंथको जाल पर्यो रे ॥ श्री जिन आगम हम मन मान्यो, तब ही कुपंथको जाल जर्यो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तो तुम शरण विचारी आयो, दीन अनाथको सरण दियो रे । जयो विमलाचल पूरण स्वामी, जनम जनमको पाप गयो रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ दूरनवी अनव्य न देखे, सूरि धनेसर एम कह्यो रे ॥ विमलाचल फरसे जो प्राणी, मोक्ष महेल तिण वेग लह्यो रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ जयो जगदीसर तूं परमेसर, पूर्व नवानुं वार थयो रे । समवसरण रायण तले तेरो, नीरखी मम अघ दूर गयो रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ श्री विमलाचल मुज मन वसीयो, मानुं संसारनो अंत थयो रे ॥ यात्रा करी मन तोष नयो अब, जनम मरण डुख दूर गयो रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ निर्मल मुनिजन जो तें तार्या, ते तो प्रसिद्ध सिद्धांत कह्यो रे । मुज सरीसा निंदक जो तारो, तारक बिरुद ये साच लह्यो रे ॥ अ० ॥ ए ॥ ज्ञानहीन गुणरहित विरोधी,

लंपट ढीठ कषाय खरो रे । तुं बिन तारक कोइ न दीसे, जयो जगदीसर सिद्धगिरो रे ॥ अ० ॥ १० ॥ तिर्यंग नरक गति दूर निवारी, भवसागरकी पीर हरो रे । आतम राम अनघ पद पामी, मोक्ष वधू तिन वेग वरो रे ॥ अ० ॥ ११ ॥

स्तवन सातमुं ।

॥ चाल गुजराती गरबाकी ॥

वहेला भवि जइयो विमल गिरी भेटवा । अरे कांइ भेटीयां भवदुख जाय, अरे कांइ सेवीयां शिवसुख थाय, तुम वहेला भवि० ॥ टेक ॥ अरे कांइ जनम सफल तुम थाय, अरे कांइ नरक तिर्यंच मिट जाय, अरे कांइ तन मन पावन थाय, अरे कांइ सकल करम क्षय जाय ॥ तुम वहेला० ॥ १ ॥ अरे कांइ पंचमे भव शिव जाय, अरे कांइ इनमें शंका नही कांय, अरे कांइ विमलाचल फरसाय, अरे कांइ भविनो निश्चय थाय ॥ तुम० ॥ २ ॥ अरे कांइ नाभिनंदन चंद, अरे कांइ ठरी पाल जिन वंद, अरे कांइ दूर होय अघ वृंद, अरे कांइ प्रगटे नयनानंद ॥ तुम० ॥ ३ ॥ अरे कांइ चउमुख चढ सुखरास. अरे कांइ मोक्ष महेल कीनो वास, अरे कांइ भववन सहु थयो नास,

अरे कांइ कोइ न रहे उदास ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अरे कांइ मोटा पुण्य अंकूर, अरे कांइ चिंता गइ सब दूर, अरे कांइ कुमत कदाग्रह चूर, अरे कांइ आठ्या नाथ हजूर ॥ तुम० ॥ ५ ॥ अरे कांइ आपणो वंश उद्धार, अरे कांइ दीन अनाथ आधार। अरे कांइ मुझने तूं अब तार, अरे कांइ अवर न सरण आधार ॥ तुम० ॥ ६ ॥ अरे कांइ मुझने मत तूं विसार, अरे कांइ करम भरम सब छार। अरे कांइ आतम आनंदकार, अरे कांइ भव-सागर पाम्यो पार ॥ तुम० ॥ ७ ॥

स्तवन आठमुं।

॥ राग विहाग ॥

तारक हे जिन नाभिके नंदन विमलाचल सुख-दाइरी। भरम मिथ्यामत दूर नस्यो हे, मिथ्या लोह कुराइ सखीरी ॥ तारक० ॥ १ ॥ कुमती कुटल विटल सब नासी, सुमती सखी हरखाइरी। तूं वैरण मुझ आदि अनादि, देख गिरिंद नसाइ सखीरी ॥ ता० ॥ २ ॥ राग द्वेष मद भरम अज्ञाना, अंधकार तिन छाइरी। श्री जिनचंद गिरिंद जो निरखी, छिनकमें पाप पलाइ ॥ स० ॥३॥ पावन भावन मुझ मन हुलसी, झुलसी कुमति घबराइरी। अब कहां

जातहे वैरण जैकी, रिखन्न जिनंद दुहाइ ॥ स० ॥ न्नावत विमलाचल जो फरसे, पंच न्नवे शिवराइरी। अव हम तुमरो नातो टूटो, अब हम केम ठराइ ॥ स० ॥ ५ ॥ आदि जिनंद गिरींद जो न्नेट्यो, पाप वृक अंधराइरी। जयो जगदीसर श्री विमलेसर, चरण सरण तुम आइ ॥ स० ॥ ६ ॥ आगे अनंत मुनि तैं तार्या, वेर न कीनी कांइरी। हुं तुम बालक सरण पर्यो हुं, नेक नजर करो सांइ ॥ स० ॥ ७ ॥ आतमराम नाम अविनासी, मुक्ति रमणी वर- वाइरी। सुमति हिंमोले सब सखीयनसें, आनंद मंगल गाइ ॥ स० ॥ ८ ॥

स्तवन नवमुं।

॥ राग--तराना ॥

राजत आनंद कंदरी विमलगिरी राजत आनंद कंदरी, रिखव जिनंद चंद सेवे सुर नर वृंद राजत० ॥ टेक ॥ पुंमरीक गणाधिप पण कोमी मुनिवर, साध्य शिवनार वर करमको कंद हर । इत्यादिक अनंत मुनि सिद्धनको थान तूं, रिख- वदेव जगदीश मुऊ आस न्नर ॥ रा० ॥ १ ॥ दूरन्नवी जे अन्नवी नीरखे न गिरि ठवि, पाप तम पटल विनाशक सद रवि । दायक जिनंद दियो

छिनमें अनघ पद, विमल गिरीस ईस छेद गति चार गद ॥ रा० ॥ २ ॥ सुर गण इंद चंद नाचत पठत छंद, रचत संगीत गीत धपमप धुधु वंद । द्रागरूदि अनट किट ध्रों ध्रों ध्रोंक ध्रोट, त्रों त्रों सुखरूदि अनंग नट नाश कर ॥ रा० ॥ ३ ॥ तलालों तलालों धिट निट किकरू धंग, भ्रमरि फिरत सुर अंगना सूरंग । धंद जय जय नाभिनंद भवि चकोर चंद, सिद्धगिरि ईस मम शिव वधूवर कर ॥ रा० ॥ ४ ॥ अजर अमर अज अलख आनंद घन, चिदानंद जगानंद राजत अन्यून घन । सेवक आनंद करो निजरूप रूप करो, आदिहीमें दान दीयो, पाप सब नाशकर ॥ रा० ॥ ५ ॥ एक भव तीन भव पंचही जनम धर, मुगती रमणी वर नरक तिर्यग हर । महानंद कंद तूं विमलगिरि ईश वर, अनुभव रंग राज काज मेरो आज कर ॥ रा० ॥६॥ रोग सोग मान भंग जनम मरण संग, राग दोष मोह कोह विकट अनंग रंग । इत्यादि अनंत रिपु छीनमें विभार कर, आतम आनंद चंद सुधानंद वास कर ॥ रा० ॥ ७ ॥

स्तवन दशमुं ।

॥ राग–केरवो ॥

॥ रूगर बतादे पाहाऱ्डीयां, ए देशी ॥ रूगर बतादे पियारीया में तो पूजुंजी रिषभ जिनंद रूगर ॥टेक॥ रायण तरु तले चरण बिराजे, बीच बिराजे जिनराज ॥रू० ॥ १ ॥ चउमुख दरस करूं ने सुख पाऊं, जिम सुधरे सब काज ॥ रू० ॥ २ ॥ विमलाचल मंरून सब सोहे, मंरून धर्म समाज ॥ रू० ॥ ३ ॥ आतम चंद जिनंदजी नेटी, वेग मिले शिवराज ॥ रू० ॥ ४ ॥

स्तवन अग्यारमुं ।

॥ राग लावणी ॥

सखीरी चल गढ गिरनारी ॥ यह चाल ॥ प्रजुजी विमलाचल राजे, जिहां प्रजु रिखज देव गाजे, जायके पूजन करना जेके, सब ही कर्म सुजट जाजे ॥ जविजन तुम क्यों आलस करते, तज दो अघ जेरा कर्म कंद हर वंधन टूटे; मिथ्या मत घेरा न तेरा शत्रु जग गाजे ॥प्र० ॥ १॥ प्रजुजी नाजिराय नंदा, काट सब कर्मनका फंदा, जये जगमें सुरतरु कंदा, सिमरो धर्म के आनंदा, निजगुण सत्ता चिद्घन प्रगटी पुण्यरास इक तान. अजर

अमर पूरण पद पामी प्रगटे केवलज्ञान, नविजन महानंद काजे ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रनु तुम दरशन हित-कारी, तरे नववनसें नरनारी, जिनों ने चरण सरण धारी के खिरुगइ निजगुण वन वारी, तीन पांच अरु एक नवंतर करत मुक्ति में वास। जिन गणधर मुनि कथन रसीला, आतम अनुनव रास, निहारो नाथ जगत राजे ॥ प्र० ॥ ३ ॥

स्तवन बारमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

महावीर तोरे समवसरणकी रे ॥ चाल ॥ जिनंदा तोरे चरण कमलकी रे ॥ हुं चाहुं सेवा प्यारी, तो नासे कर्म कटारी, नव ज्रांति मिट गइ सारी ॥ जिनंदा० ॥ विमलगिरि राजे रे, महिमा अति गाजे रे, वाजे जग रूंका तेरा, तूं सच्चा साहेब मेरा, हुं बालक चेरा तेरा ॥ जिनंदा० ॥ १ ॥ करुणा कर स्वामी रे, तूं अंतर जामी रे, नामी जग पुनम चंदा, तूं अजर अमर सुखकंदा, तूं नान्निराय कुल नंदा ॥ जि० ॥ २ ॥ इण गिरि सिद्धारे, मुनि अनंत प्रसिद्धा रे, प्रनु पुंरुरीक गण धारी, पुंरुर-गिरी नाम कहारी, ए सहु महीमा है थारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तारक जग दीठारे, पाप पंक सहु नीठारे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मन [illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible]

अनित्य [illegible]

वस्तु [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] अनित्य [illegible]

सुरपति अवर देव सब, मधुकर पर ऊंकारे रे ॥ रि० ॥ ६ ॥ जयो जगदीस सुहंकर स्वामी, सेवक सब दुख टारे रे ॥ रि० ॥ ७ ॥ विमलाचल मंरून मुझ प्यारो, आतम आनंद लारे रे ॥ रि० ॥ ८ ॥

॥ स्तवन चौदसुं ।

॥ राग रामकली ॥

आंगण कल्प फल्यो री ॥ यह चाल ॥ आनंद अंग जर्योंरी, हमारे आनंद० ॥ टेक ॥ गणधर पुंरूरीक इण गिरि सोहे, देखी अघ सहु जर्योंरी ॥ ह० ॥ १ ॥ इस अवसर्पिणी तृतीय कालमें, इण गिरि मोक्ष वर्योंरी ॥ ह० ॥ २ ॥ पुंरूरीक गिरी इण कारण प्रगट्यो, नामें पाप हर्योंरी ॥ ह० ॥३॥ नंदनको गणाधिप इण गिरि, कर्म सुजटथी लर्योंरी ॥ ह० ॥ ४ ॥ जय पामी तुम मुक्ति बिराजे, सेवक हेज जर्योंरी ॥ ह० ॥५॥ अरज करुं निज पद मुझ आपो, तो सहु काज सर्योंरी ह० ॥ ६ ॥ दशा तुमारी आतमानंदी, मुझ प्रगटे तो सर्योंरी ॥ ह० ॥ ७ ॥



स्तवन पंदरमुं ।

॥ राग आइ वसंत ॥

आदि जिनंद दयाल हो, मेरी लागी ल-गनवा ॥ टेक ॥ विमलाचल मंमन डुख खंमन, मंमन धर्म विसाल हो ॥ मे० ॥ १ ॥ विषधर मोर चोर कामिजन, दरीसन कर निहाल हो ॥ मे० ॥ २ ॥ हुं अनाथ तूं त्रिजुवन नाथा, कर मेरी संजाल हो ॥ मे० ॥ ३ ॥ आतम आनंद-कंदके दाता, त्राता परम कृपाल हो ॥ मे० ॥ ४ ॥

स्तवन सोलमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

चलो सजनी जिन वंदन को, विमलाचल पाप निकंदनको ॥ टेक ॥ दरस करत सब पातक जावे. तिर्यग् नरक गति छिंदन को ॥ च० ॥ १ ॥ डूरजवी अजव्य न देखे, चूर करण सब धंदनको ॥ च० ॥ २ ॥ आतम रसजर आदि जिनंदा, मूर-नसे जव वंधनको ॥ च० ॥ ३ ॥

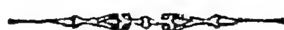
॥ इति श्री ऋषभ जिन स्तवनानि संपूर्णानि ॥

सुरपति अवर देव सब, मधुकर पर झंकारे रे ॥ रि० ॥ ६ ॥ जयो जगदीस सुहंकर स्वामी, सेवक सब दुख टारे रे ॥ रि० ॥ ७ ॥ विमलाचल मंडन मुझ प्यारो, आतम आनंद लारे रे ॥ रि० ॥ ८ ॥

॥ स्तवन चौदसुं ।

॥ राग रामकली ॥

आंगण कल्प फल्यो री ॥ यह चाल ॥ आनंद अंग भर्योरी, हमारे आनंद० ॥ टेक ॥ गणधर पुंडरीक इण गिरि सोहे, देखी अघ सहु जर्योरी ॥ ह० ॥ १ ॥ इस अवसर्पिणी तृतीय कालमें, इण गिरि मोक्ष वर्योरी ॥ ह० ॥ २ ॥ पुंडरीक गिरी इण कारण प्रगट्यो, नामें पाप हर्योरी ॥ ह० ॥३॥ नंदनको गणाधिप इण गिरि, कर्म सुभटथी लर्योरी ॥ ह० ॥ ४ ॥ जय पामी तुम मुक्ति बिराजे, सेवक हेज भर्योरी ॥ ह० ॥५॥ अरज करुं निज पद मुझ आपो, तो सहु काज सर्योरी ह० ॥ ६ ॥ दशा तुमारी आतमानंदी, मुझ प्रगटे तो सर्योरी ॥ ह० ॥ ७ ॥



स्तवन पंदरमुं ।

॥ राग आइ बसंत ॥

आदि जिनंद दयाल हो, मेरी लागी लगनवा ॥ टेक ॥ विमलाचल मंडन दुख खंडन, मंडन धर्म विसाल हो ॥ मे० ॥ १ ॥ विषधर मोर चोर कामिजन, दरीसन कर निहाल हो ॥ मे० ॥ २ ॥ हुं अनाथ तूं त्रिभुवन नाथा, कर मेरी संभाल हो ॥ मे० ॥ ३ ॥ आतम आनंदकंदके दाता, त्राता परम कृपाल हो ॥ मे० ॥ ४ ॥

स्तवन सोलमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

चलो सजनी जिन वंदन को, विमलाचल पाप निकंदनको ॥ टेक ॥ दरस करत सब पातक जावे, तिर्यग् नरक गति छिंदन को ॥ च० ॥ १ ॥ दूरभवी अभव्य न देखे, चूर करण सब धंदनको ॥ च० ॥ २ ॥ आतम रसभर आदि जिनंदा, मूरनसे भव बंधनको ॥ च० ॥ ३ ॥

॥ इति श्री ऋषभ जिन स्तवनानि संपूर्णानि ॥



श्री अजितनाथ जिनस्तवन ।

स्तवन पहेलुं ।

सुणीयो जी करुणा नाथ भवदधि पार कीजो जी,
ए देशी ॥

तुम सुणीयो जी अजित जिनेस नवोदधि पार कीजो जी । तु० ॥ आंकणी ॥ जन्म मरण जल फिरत अपारा । आदि अंत नही घोर अं-धारा । हुं अनाथ उरझ्यो मझधारा । टुक मुझ पीर कीजो जी । तुम० ॥ १ ॥ कर्म पहार कठन डुखदाइ । नाव फसी अब कौन सहाई । पूर्ण दयासिंधु जगस्वामी । झटती उधार कीजो जी । तुम० ॥ २ ॥ चार कषाय के रस अतिन्नारे, वरवा अनंग जगत सब जारे । जारे त्रिदेव इंद्र फुन देवा । मोह उवार लीजो जी ॥ तुम० ॥ ३ ॥ करण पांच अति तस्कर न्नारे । धरम जहाज प्रीति कर फारे । राग फांस मारे गर मारे । अब प्रभु झिरक दीजो जी ॥ तुम० ॥ ४ ॥ तृष्णा तरंग चरी अति न्नारी । बहे जात सब जन तन धारी । मान फेन अति उमंग चढ्यो है । अब प्रभु शांत कीजो जी ॥ तुम० ॥ ५ ॥ लाख चउरासी न्नमर अति-न्नारी । मांहि फस्यो हुं सुद्ध बुद्ध हारी । काल

अनंत अंत नहीं आयो। अब प्रज्ञु काढ लीजो जी ॥ तुम० ॥ ६ ॥ आतम रूप दब्यो सब मेरो। अजित जिनेसर सेवक तेरो। अबतो फंद हरो प्रज्ञु मेरो। निरज्ञय थान दीजो जी ॥ तुम० ॥ ७ ॥

स्तवन बीजुं।

॥ राग कमाच ॥

जिन दर्शन मन ज्ञावेरे चेतन ॥ टेक ॥ जितशत्रु नृप नंदन नीको, विजया अंकज थावेरे ॥ चे० ॥ १ ॥ तारंगे रंगरस ज्ञरी निरखी, हर्षित तनु मन थावेरे ॥ चे० ॥ २ ॥ श्री ज्ञरतेश्वर चैत्य करावे, अजित बिंब तिहां ठावेरे ॥ चे० ॥ ३ ॥ संख्यातीत उद्धार ज्ञये तब, संप्रति राज सुज्ञावेरे ॥ चे० ॥ ४ ॥ करी उद्धार जिन चैत्य बिंबका, संसृति मूल खपावेरे ॥ चे० ॥ ५ ॥ विक्रम सन शत उनतालीसें, नानावटी गोविंद कहावेरे ॥ चे० ॥ ६ ॥ अजित बिंब अंगुल बारांका, थापि कर्म जरावेरे ॥ चे० ॥ ७ ॥ चौलूक्य वंश विज्ञूषण नरपति, कुमार नरींद करावेरे ॥ ८ ॥ चे० ॥ तुंग चैत्य ज्ञविजन मन मोहे, यात्रा करो शुज्ञ ज्ञावेरे ॥ चे० ॥ ए ॥ अष्टादश दूषण नही उनमें, चार अनंत

धरावेरे ॥ चे० ॥ १० ॥ आत्मानंदी जिनवर पूजे, विजयानंद पद पावेरे ॥ चे० ॥ ११ ॥

॥ इति श्री अजित जिन स्तवने संपूर्णं ॥

॥ श्री संभवनाथ स्तवन ॥

॥ हिरणी यव चरे, ए देशी ॥

संभव जिन सुख कारीया ललना । पूरण हो तुम गुण भंमार । पूजा प्रभु भावसे ललना, दुख दुर्गति दूर हरे ललना । काटे हो जन्म मरण संसार । पद कज जो मन लावसे । ललना ॥१॥ प्रथम विरह प्रभु तुम तणो ॥ ल० ॥ दूजो हो पूर्वधर छेद । देखो गति करमनी । ल० । पंचमकाल कुगुरु बहु । ल० । पाख्यो हो जिनमत बहुभेद । बात को तरणकी ॥ ल० ॥ २ ॥ राग द्वेष बहु मन बसे । ल० । लरे हो जिम सौकण रांम । भूले अति भरममें ॥ ल० ॥ अमृत छोर जहर पिये । ल० । लीये हो दुख जिन मत छांम । बांध अति करममें ॥ ल० ॥ ३ ॥ करुणा रस भरे थोमले । ल० । संत हो पर दुख जानन-हार । फूले सुख हरममें । ल० । मनकी पीर न को सुने । कैसे हो करिये निरधार । प्रभु तुम

धरममें ॥ ल० ॥ ४ ॥ एक आधार छे मोह नणी । ल० । तुमरे हो आगम प्रतीत । मन मुझ मोहिया ॥ ल० ॥ अवर नरम सब छोरियो ।ल०। धारी हो तुम आण पुनीत । एही जग जोहीया ॥ ल० ॥ ५ ॥ जुग प्रधान पुरुष तणी । ल० । रीति हो मुझ मन सुखदाय । देखी सुन्न कारिणी ॥ ल० ॥ एही जिनमत रीत छे । ल० । मीत हो ओर सब ही विहाय । नव सिंधु तारणी ॥ ल० ॥ ६ ॥ धन्य जनम तिस पुरुषका ॥ ल० ॥ धारी हो तुम आण अखंम । मन वच कायसुं ॥ ल० ॥ आतम अनुनव रस पीया ॥ल०॥ दीया हो तुम चरणमें मंम। चित्त हुलसायसुं ॥ ल० ॥७॥

॥ श्रीअनिनंदन जिन स्तवन ।

॥ होरी की चाल ॥

परम आनंद सुख दीजोजी । अनिनंदन यारा । अक्षय अनेद अछेद सरूपी । ज्ञान नान उजवारा । चिदानंद घन अंतरजामी । धामी रामी २ त्रिनुवन सारा जी ॥ अ० ॥ १ ॥ चार प्रकारना बंध निवारी । अजर अमर पद धारा । करम नरम सब छोर दीये हैं । पामी सामी २

परम करतारा जी ॥ अ० ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख लीना । मेट मिथ्यात अंधारा । अमर अटल फुन अगुरुलघुको । धारा सारा २ अनंत बल त्याराजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ बंध उदय विन निर्मल जोति । सत्ता करी सब छारा । निज स्वरूप त्रय रत्न बिराजे । छाजे राजे २ आनंद अपाराजी ॥ अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान वीर्य सुख जीवत धारी । मदन भूत जिन गारा । त्रिभुवनमें जश गावत तेरा । जगस्वामी २ प्राण प्याराजी ॥ अ० ॥ ५ ॥ निज आतम गुण धारी प्रभुजी । सकल जगत सुखकारा । आनंद चंद जिनेसर मेरा । तेरा चेरा २ हुं सुखकारा जी ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ नाथ कैसे गज के बंद छुडायो, ए देशी ॥

सुमति जिन तुम चरण चित्त दीनो । ए तो जनम जनम दुख छीनो ॥ सु० ॥ आंकणी ॥ कुमति कुलट संग दूर निवारी । सुमति सुगुण रस भीनो । सुमतिनाथ जिन मंत्र सुण्यो है । मोह नींद भइ खीनो ॥ सु० ॥ १ ॥ करम परजंक बंक अतिसिज्या । मोह मूढता दीनो । निज गुण भूल

बेर करी मुऊ स्वामी । जव दधि पार उतारा जी ॥ म० ॥ ३ ॥ पंच विघन जय रति तुम जीती । अरति काम विमारा जी॥म०॥४॥ हास सोग मिथ्या सब गरी । नींद अत्याग उखारा जी ॥म० ॥५॥ राग द्वेष घीन मोह अज्ञाना । अष्टादश रोग जारा जी ॥ म० ॥६॥ तुम ही निरंजन जये अविनाशी । अब सेवककी वारा जी ॥ म० ॥ ७ ॥ हुं अनाथ तुम त्रिजुवननाथा। वेग करो मुऊ सारा जी॥ म०॥ ७ ॥ तुम पूरण गुण प्रजुता गजे । आतमराम आधारा जी ॥ म० ॥ ए ॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

॥ मंदिर पधारो मारा पूज जो, ए देशी ॥

श्रीसुपास मुऊ बीनती । अब मानो दिन-दयाल जी । तरण तारण बिरुद ठे जगत बच्छल किरपाल जी । श्रीसु०॥१॥ अक्षर जाग अनंत में। चेतनता मुऊ ठोर जी । करम जरम गया मह्त जिम। कीनो तम मह्त घोरजी । श्रीसु० ॥२॥ घन घटा गदीत रवि जिसो । तिसो रह्यो ज्ञान उजास जी । किरपा करो जो मुऊ जणी। थाये पूरण ब्रह्म प्रकास जी । श्रीसु० ॥ ३ ॥ बिन ही निमित्त न

नीपजे । माटी तनो घट जेम जी । तिम ही निमित्त जिनजी विना । ऊजल थाउं हूं केम जी । श्रीसु०॥४॥ त्रिकरण शुद्ध थावे यदा । तदा सम्यग दर्शण पाम जी । दूजे त्रिक बूह्म ज्ञान है । त्रिक मिटे शिवपुर गाम जी । श्रीसु० ॥५॥ एही त्रिण त्रिक मुझ दीजीए । लीजिये जस अपार जी । कीजीए भक्त सहायता । दीजीए अजर अमार जी ॥ श्री सु० ॥ ६ ॥ अब जिनवर मुझ दीजीए, आतम गुण भरपूर जी । कर्म तिमिर के हरण कों, निर्मल गगन जूं सूरजी ॥ श्री सु० ॥ ७ ॥

॥ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

॥ चाहत थी प्रभु सेवा वा कस्नगी उलटी कर्म बनाईरी, ए देशी ॥

चाह लगी जिनचंद्र प्रभु की । मुझ मन सुमति ज्यूं आइरी । भरम मिथ्या मत दूर नस्यो है । जिन चरणां चित्त लाइ सखी री ॥ चा० ॥ सम संवेग निरवेद लस्यो है । करुणारस सुखदाइरी । जैन वैन अति नीके सगरे, ए भावना मनभाई स०॥ चा० ॥ २ ॥ संका कंखा फल प्रति संसा कुगुरु संग छिटकाइ री । परसंसा धर्महीन पुरुषकी इन भवमांही न कांइ स० ॥ चा० ॥३॥ दुग्ध सिंधु रस

अमृत चाखी, स्यादवाद सुखदाइरी । जहर पान अब कौन करत है, दुरनय पंथ नसाइ स० ॥चा०॥४॥ जब लग पूरण तत्त्व न जाण्यो, तब लग कुगुरु भुलाइरी । सप्तभंगी गर्भित तुम वांणी, भव्यजीव सुखदाइ स० ॥ चा०॥५॥ नाम रसायण सहु जग भाषे, मर्म न जाने कांइरी। जिन वाणी रस कनक करण को, मिथ्या लोह गमाइ स० ॥ चा० ॥६॥ चंद किरण जस उज्वल तेरो, निर्मल जोत सवाइरी । जिन सेव्यो निज आतम रूपी, अवर न कोइ सहाइ स० ॥ चा० ॥ ७ ॥

॥ श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन ॥

सुविधि जिन बंदना, पाप निकंदना, जगत आनंदना, मुक्ति दाता। करम दल खंडना, मदन विहंडना, धरम धुर मंडना, जगत त्राता॥ अवर सहु वासना, छोर मन आसना, तेरी उपासना, रंग राता । करो मुझ पालना, मान मद गालना, जगत उजालना, देह साता ॥ सु० ॥२॥ विविध किरिया करी, मूढता मन धरी एक पक्षे लरी, जगत भूल्यो । मान मद मन धरी, सुमति सब परहरी, जैन मुनि भेष धर मूढ फूल्यो। एही एकंतता, अति ही दुरदंतता, नास कर संतता, दुःख झूल्यो ।

संग सिद्धि कही, ज्ञान किरया वही, दूध साकर मिली रस घोल्यो ॥ सु० ॥ २ ॥ बिना सरधान के ज्ञान नहीं होत है, ज्ञान बिन त्याग नहीं होत साचो । त्याग बिन करम को नास नहीं होत है, करम नासे बिना धरम काचो ॥ तत्त्व सरधान पंचंगी संमत कह्यो, स्याद्वादे करी बैन साचो ॥ मूल निर्युक्ति अति भाष्य चूरण भलो, वृत्ति मानो जिन धर्म राचो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उत्सर्ग अपवाद, अपवाद उत्सर्ग, उत्सर्ग अपवाद मन धारलीजो । अति उत्सर्ग उत्सर्ग है जैन में, अति अपवाद अपवाद कीजो । ए षट भंग है जैन बाणी तने, सुगुरु प्रसाद रस घुंट पीजो । जब लग बोध नहीं, तत्त्व सरधान का, तब लग ज्ञान तुमको न लीजो ॥ सु० ॥ ४ ॥ समय सिद्धांतना अंग साचा सबी सुगुरु प्रसादथी पार पावे । दर्शन ज्ञान चारित करी संयुता, दाह कर कर्म को मोख जावे । जैन पंचंगीकी रीति भांजी सबी, कुगुरु तरंग मन रंग लावे । ते नरा ज्ञान को अंस नहीं ऊपनो, हार नर देह संसार धावे ॥ सु० ॥५॥ तत्त्व सरधान बिन सर्व करणी करी, वार अनंत तुं रह्यो रीतो । पुण्य फल स्वर्ग में भोग ऊंधो गियों, तिर्यग्

औतार बहु वार कीतो । ऊंट का मेगणा खांम लागी जिसो, अंत में स्वादसे नयो फीको । चार गत वास बहु दुख नाना भरे, भयो महा मूढ सिर मौर टीको ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुविधि जिनंद की आन अवधार ले, कुमत कुपंथ सब दूर टारो । पक्ष कदाग्रह मूल नहीं तानियो, जानियो जैन मत सुध सारो । महा संसार सागर थकी नीकली, करत आनंद निज रूप धारो । सुकल अरु धरम दोउ ध्यान को साध ले, आतमा रूप अकलंक प्यारो ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ बणजारे की देशी ॥

शीतल जिनराया रे, त्रिभुवन पूरण चंद शीतल चंदन सारीसो जिनराया रे । जिन । मुझ मन कमल दिनंद ज्यों लोहने पारसो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० और न दाता कोय अभय अखेद अभेद नो ॥ जि० । जि० सगरे देव निहार कौन हरे मुझकेदनो ॥ जि० २ ॥ जि० गर्भवास दुःख पूर कलमल संयुत थानमें जि० । जि० पित्त सलेषम पूर दुःखभरे बहु जानमें॥जि०॥३॥जि० जन मत दुख अपार मोह दशा महा फंदमें ॥ जि० ॥ जि० अब

मन मांहि विकार कीट फंस्यो जैसे गंदमें ॥जि० ॥४॥ जि० परवश दीन अनाथ मुझ करुणा चित्त आनिये जि० । जि० तारो जिनवर देव वीनतडी चित्त ठानिये ॥जि ॥ ०५ ॥ जि० करुणा सिंधु तुम नाम अब मोहि पार उतारिये ॥जि०॥ जि० अपणा बिरुद निबाह अवगुण गुण न विचारिये ॥जि० ॥६॥ जि० शीतल जिनवर नाम शीतल सेवक कीजिये । जि० ॥ जि० शीतल आतम रूप शीतल भाव धरीजिये ॥ जि० ॥ ७ ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तवन ॥

॥ पीले रे प्याला होय मतवाला, ए देशी ॥

श्री श्रेयांस जिन अंतर जामी । जग विसरामी त्रिभुवन चंदा । श्री श्रे० । कल्पतरु मन वांछित दाता ।चित्रा वेल चिंतामणि त्राता । मन वांछित पूरे सब आसा । संत उधारण त्रिभुवन त्राता । श्री श्रे०॥१॥ कोइ विरंचि ईस मन ध्यावे । गोविंद विष्णु उमापति गावे । कार्त्तिक साम मदन जस लीना । कमला भवानी भगति रस भीना । श्री श्रे० ॥ २ ॥ एही त्रीदेव देव अरू देवी । श्री श्रेयांस जिन नाम रटंदा । एक ही सूरज जग परगासे । तारप्रभा तिहां कौन गणंदा । श्रीश्रे०।३।

ऐरावण सरिसो गज छांडी । लंबकरण मन चाह करंदा । जिन छांडी मन अवर देवता । मूढमति मन भाव धरंदा।श्री श्रे०॥४॥ कोइ त्रिशूली चक्री फुन कोइ । भामनी के संग नाच करंदा । शांत रूप तुम मूरति नीकी । देखत मुझ तन मन हुलसंदा । श्री श्रे०॥५॥ चार अवस्था तुम तन सोभे । बाल तरुण मुनि मोक्ष सोहंदा । मोद हर्ष तन ध्यान प्रदाता । मूढमति नहीं भेद लहंदा । श्री श्रे० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान राज जिन पायो । दूर भयो निरधन दुख धंदा । समता सागर के वि- सरामी । पायो अनुभव ज्ञान अमंदा ॥श्री श्रे०७॥

॥ श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन ॥

॥ अडल की चाल ॥

वासुपूज्य जिनराज आज मुज तारीये। करम कठण दुख देत के बेग निवारीये । वीतराग जगदीश नाथ त्रिभुवन तिलो। महा गोप निर्याम धाम सब गुण निलो ॥१॥ काल सुभाव मिलान करम अति तीसरो । होनहार जिय सक्ति पंच मिली धीसरो । एक अंस मिथ्यात बात ए सांभली । कीये मदिरा आंख भइ धामली ॥२॥ पंचम काल विहाल नाथ हुं आइयो । मिथ्या मत बहु जोर

घोर अति छाइयो । कलह कदाग्रह सोर कुगुरु बहु छाइयो । जिन वाणी रस स्वाद के विरले पाइयो । तुझ किरपा नइ नाथ एक मुझ नावना । जिन आज्ञा परमाण और नहीं गावना । पक्षपात नहीं लेस द्वेष किन सूं करूं । एही स्वभाव जिणंद सदा मन में धरूं ॥ ४ ॥ किंचित पुन्य प्रभाव प्रगट मुझ देखीये । जिन आणायुत भक्ति सदा मन लेखीये । होन हार सुभ पाय मिथ्या मत छंडीये । सार सिद्धांत प्रमाण करण मन मंडीये ॥ ५ ॥ एक अरज मुझ धार दयाल जिनेसरू । उद्यम प्रबल अपार दीयो जग ईसरू । तुझ विन कौन आधार भवोदधी तारणे । बिरुद निवाहो राज करम दल वारणे ॥ ६ ॥ आतम रूप भुलाय रम्यो पर रूप में । पर्यो हुं काल अनादि भवोदधि कूप में । अव काढो गही हाथ नाथ मुझ वारीया । पाउं परमानंद करम जर झारीया ॥ ७ ॥

॥ श्रीविमलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ सुंदर चेत बहार सार पाल सरफूले, ए देशी ॥

विमल सुहंकर नाथ आस अब हमरी पूरो । रोग सोग भय त्रास आस ममता सब चूरो । दीजो

निरन्नय थान खान अजरामर चंगी । जनम जनम जिनराज ताज बहु नगत सुरंगी ॥१॥ मात तात सुत भ्रात जान बहु सजन सुहाये । कनक रतन बहु नूर कूर मन फंद लगाये । रंन्ना रमण अनंग बहु केल कराये । संध्या रंग विरंग देख छिनमें विरलाये ॥ २ ॥ पदम राग सम चरण करण अतिसोहे नीके । तरुण अरुण सित नयन वयण अमृत रस नीके । वदन चंद ज्यूं सोम मदन सुख माने जी के । तुऊ नक्ति बिन नाथ रंग पतंग जूं फीके ॥ ३ ॥ गज वर तरल तुरंग रंग बहु नेद विराजे । कंकण हार किरीट करण कुंमल अति साजे । राग रंग सुख चंग नोग मन नीके नायो । तुऊ नक्ति बिन नाथ जान तिन जनम गमायो ॥ ४ ॥ रतन जरत विमान नान जूं नये सनूरे । रंन्ना रमण आनंद कंद सुख पाये पूरे । षोमस नित्य सिंगार नाच स्थिति सागर पूरे । जिन नक्ति फल पाये मोक्त तिन नाही दूरे ॥ ५ ॥ धन धन तिन अवतार धार जिन नक्ति सुहानी । दया दान तप नेम सील गुण मनसा ठानी जिन वर जसमें लीन पीन प्रज्जु अर्च करानी । तुऊ किरपा नई नाथ

आज हुं नक्ति पिछानी ॥ ६ ॥ जग तारक जग-
दीस काज अब कीजो मेरो । अवर न सरण
आधार नाथ हुं चेरो तेरो । दीन हीन अब देख
करो प्रजु वेग सहाइ । चातक ज्यूं घनघोर सोर
निज आतम लाइ ॥ ७ ॥

श्री अनन्तनाथ जिन स्तवन।

॥ नीदलडी वैरन होरही, ए देशी ॥

अनंत जिनंदसुं प्रीतडी । नीकी लागी हो
अमृतरस जेम । अवर सरागी देवनी । विष स-
रखी हो सेवा करूं केम ॥ अ० ॥ १ ॥ जिम पद्-
मनी मन पिउ वसे । निर्धनीया हो मन धन की
प्रीत । मधूकर केतकी मन बसै । जिम साजन
हो विरही जन चीत ॥ अ० ॥ २ ॥ करसण मेघ
आषाढ ज्यूं । निज बाछड हो सुरन्नी जिम प्रेम
साहिब अनंत जिनंदसुं । मुझ लागी हो नक्ति
मन तेम ॥ अ० ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी दुख
नरी । मैं कीधी हो पर पुदगल संग । जगत
नम्यो तिन प्रीतसूं । संग धारी हो नाच्यो नव
नव रंग ॥ अ० ॥ ४ ॥ जिस कों आपणा जानीयो
तिन दीधा हो छिनमें अतिछेह । परजन केरी

प्रीतरूी । में देखी हो अंते निसनेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ मेरो कोई न जगतमें । तुम गोरूी हो जग में जगदीस । प्रीत करूं अब कोनसू । तूं त्राता हो मोने विसवा वीस ॥ अ० ॥ ६ ॥ आतमराम तूं माहरो । सिर सेहरो हो हियरूेनो हार । दीन दयाल किरपा करो । मुऊ वेगाहो अब पार उतारो ॥ अ० ॥ ७ ॥



॥ श्री धरमनाथ जिन स्तवन ॥

॥ माला किहां छेरे, ए देशी ॥

नविक जन वंदोरे धरम जिनेसर धरम स्वरूपी । जिनंद मोरा । परम धरम परगासै रे । परदुख नंजन नवि मन रंजन ॥ जि० ॥ द्वादस परषदा पासे रे । नविक जन वंदो रे । धरम जिनेसर वंदो परमसुख कंदो रे ॥ न० ॥ १॥ धरम धरम सहु जन मुख नाषै ॥ जि० ॥ मरम न जाने कोई रे । धरम जिनंद सरण जिन लीना जि०॥ धरम पिछाणे सोई रे ॥ न० ॥ २ ॥ दख नाव स्वदया मन आणो ॥ जि० ॥ पर सरूप अनुबंधो रे। व्यवहारी निहचे गिन लीजो ॥ जि०॥ पालो करम न बंधोरे ॥ न० ॥ ३ ॥ जयना सर्वे

काममें करणी ॥ जि० ॥ धरमदेसना दीजे रे । जिन पूजा यात्रा जगतरणी ॥ जि० ॥ अंतःकरण शुद्ध लीजेरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ षट काया रक्षा दिल गानी ॥ जि० ॥ निज आतम समझानी रे । पुद्‌-गलीक सुख कारज करणी ॥ जि० ॥ सरूप दया कही ज्ञानी रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ करि आडंबर जिन मुनि वंदे ॥ जि० ॥ करी प्रभावना मंभेरे । बिन करुणा करुणा फलभागी । जन्म मरण दुख डंडे रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ विधि मारग जयणा करी पाले ॥जि०॥ अधिक हीन नही कीजे रे । आतमराम आनंद घन पायो ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान लहीजे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥

॥ शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

स्तवन पहेलुं ।

भविक जन नित्य ये गिरि वंदो, ए देशी ॥

भविक जन शांति हे जिन वंदो । भव भवनां पाप निकंदो । भविक जन शांति हे जिन वंदो ॥ १ ॥ पूरव भव शांति करीनो । कापोत पाल सुख लीनो करुणा रस सुध मन भीनो । ते तो अभयदान बहु दीनो ॥ भ० ॥ २ ॥

अचिरानंदन सुखदाई। जिन गर्भे शांति कराई। सुरनर मिल मंगल गाई। कुरु मंरून २ मारि नसाई॥ ज०॥ ३॥ जग त्याग दान बहु दीना। पामर कमला पति कीना। सुरू पंच महाव्रत लीना। पाया केवल ज्ञान अईना॥ ४॥ जग शां- तिके धरम प्रगासे। नव नवनां अघ सहु नासे। सुरू ज्ञान कला घट नासे। तुम नामे अरे २ परम सुख पासे॥ ज०॥ ५॥ तुम नाम शांति सुख दाता। तुं मात तात मुज त्राता। मुज तप्त हरो गुण ज्ञाता। तुम शांतिक अरे २ जगत वि- धाता॥ ज०॥ ६॥ तुम नामे नवनिध लहिये। तुम चरण शरण गहि रहिये। तुम अर्चन तन मन वहिये। एही शांतिक अरे २ नावना कहिये॥ नवि०॥ ७॥ हुं तो जनम मरण दुःख दहियो। अब शांति सुधारस लहियो। एक आ- तम कमल ऊमहियो। जिन शांति अरे २ चरण कज गहियो॥ नवि०॥ ८॥

स्तवन बीजुं।

॥ राग कमाच॥

जिन दरशन आनंद खानी॥ टेक॥

राग द्वेष घिन काम अज्ञाना, हास्य नींद

[illegible]

अय [illegible] ॥ जि० ॥ २ ॥ [illegible]

नाती [illegible] ॥ जि० ॥ ३ ॥

मिथ्या [illegible]

जाणी ॥ जि० ॥ ४ ॥ [illegible]

सोहे [illegible] ॥ जि० ॥ [illegible]

तन [illegible]

॥ जि० ॥ ५ ॥ [illegible]

शांति [illegible] ॥ जि० ॥ ६ ॥ [illegible]

गुण [illegible]

॥ जि० ॥ ७ ॥ [illegible]

हुं जिन [illegible] ॥ जि० ॥ ८ ॥

॥ इति श्री शांतिनाथ जिन स्तवन संपूर्ण ॥

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ॥

॥ [illegible]की देशी ॥

कुंथु जिनेसर साहिब तुं धणी रे । जगजीवन जगदेव । जगत उधारण शिवसुख कारणे । निस दिन मागे सेव ॥ कुं० ॥ १ ॥ हुं अनन्तो काल अनादिनो रे । कुटल कुबोध अनीत । काम क्रोध मद मोह माचीयो रे । नजर नयन तीत ॥ कुं० ॥ २ ॥ लंपट कंटक निंदक [illegible]

यो रे । परवंचक गुण चोर । अपथापक पर निंदक मानीयो रे । कलह कदाग्रह घोर ॥ कुं० ॥ ३ ॥ इत्यादिक अवगुण कहुं केतला रे । तुम सब जानन हार । जो मुझ वीतक वीत्यो वीतसे रे । तुं जाने करतार ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो जगपूरण वैद्य कहाइयो रे । रोग करे सब दूर । तिनही अपणा रोग दिखाइये रे । तो होवे चिंता चूर ॥ कु० ॥ ५ ॥ तुं मुझ साहिब वैद्य धनंतरी रे । कर्म रोग मोह काट । रतनत्रयी पथ्य मुझ मन मानीयो रे । दीजो सुखनो थाट ॥ कुं० ॥ ६ ॥ निर्गुण लोह कनक पारस करे रे । मांगे नही कुछ तेह । जो मुझ आतम संपद निर्मली रे । दास भणी अब देह ॥ कुं० ॥ ७ ॥

॥ श्री अरनाथ जिन स्तवन ॥

॥ चंद्रप्रभु मुखचंद्र सखी मोने देखणादे, ए देशी ॥

अरे जिनेश्वर चंद सखी मोने देखण दे । गत कलिमल दुख धंद । स० । त्रिभुवन नयनानंद । स० । मोह तिमर भयो मंद ॥ स० ॥ १ ॥ उदर त्रिलोक असंख में । स० । महरिद नीर निवास । स० । कठन सिवाल अगादियो । स० ।

करम पडल अठ तास ॥ स० ॥ २ ॥ आदि अंत नही कुंझनी । स० । अतिही अज्ञान अंधेर । स० । स्वजन कुटुंबे मोहियो । स० । वीत्यो सांझ सवेर ॥ स० ॥ ३ ॥ खय उपसम संयोगथी । स० । करम पलट भयो दूर । स० । उरधमुखी पुन्ये करयो । स० । स्वजन संग करयो चूर ॥ स० ॥४॥ पहुतो जिनवर आसना । स० । दीठो आनंद पूर दीनदयाल कृपा करी । स० । राखो चरण हजूर ॥ स० ॥ ५ ॥ जिन कष्टे हूं आवीयो । स० । जाणे तूं करतार । स० । बिरुद सुण्यो जिन ताहरो । स० । त्रिभुवन तारणहार ॥ स० ॥ ६ ॥ सुमति सखी सुण वारता । स० । ए सब तुझ उपगार । स० । आतमराम दिखालीयो । स० । वंछित फल दातार ॥ स० ॥ ७ ॥



॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

स्तवन पहेलुं ।

॥ रामचंद्र के बाग चंपा मोहर रह्यो, ए देशी ॥

मल्लिजिनेसर देव भवदधि पार करोजी । तूं प्रभु दीन दयाल । तारक बिरुद धरो जी ॥१॥ तुम सम वैद न कोय । जानो मर्म खरो री ।

जावे जिस विध रोग। तैसो ही ज्ञान धरोरी ॥२॥ अरु कर्म चार कषाय । रोग असाध्य कह्योरी । मदन महा दुख देन । सब जग व्याप रह्योरी ॥ ३ ॥ तूं प्रभु पूरण बैद । त्रिभुवन जाच लह्योरी किरपा करो जगनाथ । अब अवकास थयोरी ॥ ४ ॥ बचन पीयूष अनूप । मुझ मन माहि धरोरी दीजो पथ्य प्रदान । मन तन दाह हरोरी ॥५॥ सम्यग दर्शन ज्ञान । खमा मृदु सरल भलोरी ॥ तोष अवेद अभंग तो सहु रोग दल्यो री ॥६॥ पथ्योदन जिनभक्ति । आतमराम रम्यो री तूंगे मल्लि जिनेसर । अरि दल क्रूर दम्यो री ॥ ७ ॥

॥ स्तवन बीजुं ॥

॥ श्रीराग ॥

मल्लिजिन दरसन नयनानंद ॥ टेक ॥

नील वरण तनु भविजन मोहे, वदन कमल निरमल सुखकंद । निर विकार दृग दयारस पूरे, चूरे भविजनक अघवृंद ॥ म० ॥ १ ॥ शुचि तनु कांति टरी अघ भ्रांति, मदन भर्यो तुम करम निकंद । जय जय निर्मल अघहर ज्योति, द्योति त्रिभुवन निर्मल चंद ॥ म० ॥ २ ॥

केवल दरस ज्ञान युत स्वामी, नामी अरुदस दोस जरंद । लोकालोक प्रकाशित जिनजी, वानी अमृत झरी वरसंद ॥ म० ॥ ३ ॥ पीके भविजन अमर भये है, फिर नही भवसागर ही फिरंद ॥ नित्यानंद प्रकाश भयो है, करम भरमको जायों फंद ॥ म० ॥ ४ ॥ अवर देव वामारस राचे, नासे निज गुन सहजानद । तूं निर्मद विभु ईश शिवंकर, टारे जनम मरन दुख धंद ॥ म० ॥ ५ ॥ तेरेही चरण सरण हुं आयो, कर करूणा अर्हन् जगइंद । अंतर्गत मुझ सहु तूं जाने, सरणागतकी लाज रखंद ॥ म० ॥ ६ ॥ गुरजर देश में आतमानंदी, भोयणी नभवर उग्यो चंद ॥ वियत शिखि निधि इंदु शुभ वरसे, मास वैशाख पूनिम चंद ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ स्तवन तीजुं ॥

जिन राजा ताजा, मल्लि विराजे भोयणी गाममे ॥ टेक ॥

देश देशके जात्रु आवे, पूजा सरस रचावे, मल्लि जिनेसर नाम सिमरके, मनवंछित फल पावेजी ॥ जि० ॥ १ ॥ चतुर वरणके नर नारी मिल मंगल गीत करावे, जय जयकार पंचध्वनि

वाजे, शिरपर छत्र फिरावेजी ॥ जि० ॥ २॥ हिंसक जन हिंसा तजी पूजे, चरणे सीस नमावे, तूं ब्रह्मा तूं हरि शिवंकर, अवर देव नही भावेजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ करुणारस भरे नयन कचोरे, अमृतरस वरसावे, वदन चंद चकोर ज्यु निरखी, तन मन अति उलसावेजी ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतम राजा त्रिभुवन ताजा चिदानंद मन भावे, मल्लि जिनेसर मनहर स्वामी, तेरा दरस सुहावेजी ॥जि०॥५॥

॥ स्तवन चोथुं ॥

॥ राग परज ॥

॥ निशदिन जोउं थारी वातडी घर आवो मारा ढोला, ए देशी ॥

मल्लि जिनेश्वर साहिब तुं तो अंतरजामी ॥ आंचली ॥ करम सुभट रण अंगणे एक छिनकमें दामी, षट् मित्त प्रतिबोधक कीने जगत निकामी ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ पर उपकारी तुं प्रभु करुणा कर स्वामी । तेरो मुख दीठे मीटे मेरे मनकी खामी ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ करम रोगके हरनकुं प्रभु तुं जगनामी, वैद्य धनंतरी मो मीले त्रिभुवन विसरामी ॥ मल्लि०॥३॥ वरण प्रियंगु तनु धरे भवीजन सुख कामी, अष्टादस मल

टालके भये निजगुण गामी ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ गुर्जर देश सुहंकरु भोयणी शुभ नामी, जिहां विराजे तुं प्रभु करे जगको निरामी ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ करम रोगयुत हुं फीरुं शिव पद सुख धामी, जग जश ल्यो मुज तारके करो आतमरामी ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री मल्लिनाथ-जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ प्रेमला परणी, ए देशी ॥

श्री मुनिसुव्रत हरिकुल चंदा । दुरनय पंथ नसायो । स्याद्वाद रस गर्भित वानी । तत्त्व स्वरूप जनायो । सुन ग्यानी जिन वाणी रस पीजो अति सन्मानी ॥ १ ॥ वंध मोक्ष एकांते मानी, मोक्ष जगत उछेदे । उभय नयात्म भेद गहीने, तत्त्व पदार्थ वेदे । सुन ग्या० ॥ २ ॥ नित्य अनित्य एकान्त गहीने । अर्थ क्रिया सब नासे । उभय स्वरूपे वस्तु विराजे । स्याद्वाद इम भासे । सुन ग्या० ॥ ३ करता भुगता बाहिज दृष्टे । एकांते नहिं थावे । निश्चय सुद्ध नयात्म रूपे । कुण करता भुगतावे । सु० ॥ ४ ॥ रूप विना भयो रूप सरूपी । एक नयात्म संगी । तम व्यापी विभु एक अनेका ।

वाजे, शिरपर छत्र फिरावेजी ॥ जि० ॥ २ ॥ हिंसक जन हिंसा तजी पूजे, चरणे सीस नमावे, तूं ब्रह्मा तूं हरि शिवंकर, अवर देव नही भावेजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ करुणारस भरे नयन कचोरे, अमृतरस वरसावे, वदन चंद चकोर ज्यु निरखी, तन मन अति उलसावेजी ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतम राजा त्रिभुवन ताजा चिदानंद मन भावे, मल्लि जिनेसर मनहर स्वामी, तेरा दरस सुहावेजी ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन चोथुं ॥

॥ राग परज ॥

॥ निशदिन जोउं थारी वातडी घर आवो मारा ढोला, ए देशी ॥

मल्लि जिनेश्वर साहिब तुं तो अंतरजामी ॥ आंचली ॥ करम सुभट रण अंगणे एक छिनकमें दामी, षट् मित्त प्रतिबोधक कीने जगत निकामी ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ पर उपकारी तुं प्रभु करुणा कर स्वामी । तेरो मुख दीठे मीटे मेरे मनकी खामी ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ करम रोगके हरनकुं प्रभु तुं जगनामी, वैद्य धनंतरी मो मीले त्रिभुवन विसरामी ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ वरण प्रियंगु तनु धरे भवीजन सुख कामी, अष्टादस मल

टालके भये निजगुण गामी ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ गुर्जर देश सुहंकरु भोयणी शुभ नामी, जिहां विराजे तुं प्रभु करे जगको निरामी ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ करम रोगयुत हुं फीरुं शिव पद सुख धामी, जग जश ल्यो मुज तारके करो आतमरामी ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री मल्लिनाथ-जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ प्रेमला परणी, ए देशी ॥

श्री मुनिसुव्रत हरिकुल चंदा । दुरनय पंथ नसायो । स्याद्वाद रस गर्भित वानी । तत्त्व स्वरूप जनायो । सुन ग्यानी जिन बाणी रस पीजो अति सन्मानी ॥ १ ॥ बंध मोक्ष एकांते मानी, मोक्ष जगत उछेदे । उभय नयात्म भेद गहीने, तत्त्व पदार्थ वेदे । सुन ग्या० ॥ २ ॥ नित्य अनित्य एकान्त गहीने । अर्थ क्रिया सब नासै । उभय स्वरूपे वस्तु विराजे । स्याद्वाद इम भासै । सुन ग्या० ॥ ३ करता भुगता बाहिज दृष्टे । एकांते नहिं थावे । निश्चय शुद्ध नयात्म रूपे । कुण करता भुगतावे । सु० ॥ ४ ॥ रूप विना भयो रूप सरूपी । एक नयात्म संगी । तम व्यापी विभु एक अनेका ।

आनंदघन सुख रंगी । सु० ॥ ५ ॥ शुद्ध अशुद्ध नास अविनासी निरंजन निराकारो । स्याद्वाद मत सगरो नीको दुरनय पंथ निवारो । सु० ॥६॥ सप्तभंगी मत दायक जिनजी । एक अनुग्रह कीजो आत्मरूप जिसो तुम लाधो । सो सेवक को दीजो ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ श्री नमिनाथजिन स्तवन ॥

॥ आ मिलवे बंसी वाला-कान्हा, ए देशी ॥

तारोजी मेरे जिनवर सांइ बांह पकरू कर मोरी । कुगुरु कुपंथ फंदथी निकसी । सरण गही अब तोरी ॥ ता० ॥ १ ॥ नित्य अनादि निगोद में रुलतां । झूलतां भवोदधि मांही ॥ पृथ्वी अप तेज वात स्वरूपी । हरित काय दुख पाइ । ता० ॥ २ ॥ बिति चउरिंद्री जात भयानक, संख्या दुखकी न कांइ । हीन दीन भयो परवस परके, ऐसे जनम गमाइ । ता० ॥ ३ ॥ मनुज अनारज कुल में उपनो, तोरी खबर न कांइ । ज्यूं त्यूं कर प्रभु मग अब परख्यो । अब क्यों बेर लगाइ । ता० ॥ ४ ॥ तुम गुण कमल भ्रमर मन मेरो । उरूत नहीं है उराइ । तृषत मनुज अमृत रस

चाखी, रुच से तप्त बुझाई । ता० ॥ ५ ॥ भव-सागर की पीर हरो सब । मेहर करो जिनराइ । दृग करुणा की मोह पर कीजो । दीजो चरण बुहाई । ता० ॥ ६ ॥ विप्रानंदन जग दुख कंदन । भगत वछल सुखदाई । आतमराम रमण जग-स्वामी कामत फल वरदाइ । ता० ॥ ७ ॥

॥ श्री नेमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ स्तवन पहिलुं ॥

चैतमें सोहाग सहियां फूलीयो सब रूपमें । ज्ञान फुल चारित फल भर । लागीयो चिद् रूप में । पुन्य यौवन चरयो नीको । करण पंचस नूरीयां । अब देख नेम वियोग सेती । भये छिन-क में झूरीयां ॥ १ ॥ वैसाख तामस ऊठीयो सब फुल फल मुरझाइया । चित दाह भस्मीभूत कीनो, शांतिरस सुसाइया । मन सैल राज कठन कीनो दंभ नागन धाइयां । अब प्यास शांत न होत किम ही त्रिभुवन धन जल पाइयां ॥ २ ॥ जेठ जागी कुगुरु वायु अंधीयां बहु आइयां । तन मन सवी मलीन कीने नयन रज बहु छाइयां । कछु आप पर की सूझ नाहीं परो घोर अधेरमें ।

सब रूप सुन्दर ठार कीने । मोह महातम घेर में ॥ ३ ॥ आषाढ़ कुगुरू प्रदान कीनो तस वात चउरासीयां । मानसी तन रोग पीरा घरम गरमी फासीयां । अधोभूमी नरक ताती ठातीयां बहु दुख भरे । अब नेम समरण कीजिये तन तपत टारे दुख हरे ॥ ४ ॥ सावन घटा घनघोर गरजी नेम बानी रस भरी । अपछंद निंदक संघ के तिन जान सिर विजरी परी । सत्ता सुभूमी भव्य जन की अंस अंसे सब ठरी । अब आस पुन्य अंकुर की मनमोद सहियां फिर खरी ॥ ५ ॥ भादो भए फुन पुन्य पूरे धरम वारी लह लही । सहस अष्टादस दले सीलांग संज्ञा झूम रही । सरधान जल सुध सींचता अतिज्ञान तरुवर फुल रहे । लागेंगे अजरा अमर फल मधु नेम आणा सिर वहे ॥ ६ ॥ आसु पुकारे कुगुरु पितराहमरी गत तुम कीजिये । भव्य ब्राह्मण खीर जिन वच चाखीये रस पीजिये । कुगुरु खाली हाथ बैठे पाये नर भव खोय के । पूजो दसहरा धरम दस विध ज्ञान दरसन जोय के ॥ ७ ॥ कार्तिक दीवाली ज्ञान दीपक भरम तिमर उड़ाइया । अब ज्ञान पंचम निकट आई करण त्रिक सुद्ध पाइया ।

अष्ट दृष्टि जोग साधी भावना त्रिक भाइया। अब भइ कुमति तस दूरी सीत जिन बच पाइया ॥ ८ ॥ मगसर भये सब ठार ममता जान मह्ा दुख रासीया। सुत भ्रात भ्राता मित्र जननी जान मह्ा दुख फासिया । कोई न तेरा मीत दुरजन सज्जन संगी हित करो। इक नेम चरण आधार शिव मग आस मन मांही धरो ॥ ए॥ पोषे तनु परिवार पर जन मित्त तेरे है नहीं । तडित दमक जू कान करिवर राग संध्या छिन रही। चक्री हलधर शंख भृत जन देख सुपना रैनका। कोई न थिरता जान अब मन आसरा जिन बैन का ॥ १० ॥ माह मह की वासना मन ज्ञान दर-सन में लिया । याम सुमति तप कुठारे करम छिल्लक छेलीया। जारके सब मदन वन घन मोख मार्ग फैलीया। अब देख चंग अखंड राजुल नेम होरी खेलीया ॥ ११ ॥ सील सज तनु केसरी पिचकारीयां सुभ भावना। ज्ञान मादल ताल सम रस राग सुध गुण गावना। धूर झडी करम की सब सांग सगरे त्यागीया। नेम आतमराम का धरि ध्यान शिव मग लागिया ॥ १२ ॥

॥ स्तवन बीजुं ॥

क्यां करुं माता मेरी, पंम्हित के जाकेरी, ए देशी ॥

नव ञव केरी प्रीत सजन तुम तोमी न जावोरे ॥ नव० ॥ आंकणी ॥ मुगती रमणीस्युं लागी लगन, मनमें अति वैराग धरना। बेरु चले निज साथ सजन, मुख फेर देखावोरे ॥ नव० ॥ १ ॥ तुम बेठी अब जात कहुं, में नही बेम्त घर न रहुं। जोगन बनी तुम संग चलुं, नीज ज्योती जगावोरे ॥ नव० ॥ २ ॥ आतम वेर न कुमती बलुं, राग द्वेष मदमोह दलुं। मुगती नगर तुम संग चलुं, नीज जोर जनावोरे ॥ नव० ॥ ३ ॥

॥ स्तवन तीजुं ॥

आवो नेम सुख चेन करो, डुख काही देखावोरे ॥ आंकणी ॥ विरह तुमारो अतीही कठन, सही न शकुं पल एक बीन। जगत लाग्यो सब हांसी करन, मत बेमीने जावोरे ॥ आवो० ॥१॥ करुणासिंधु नाम धरन, सुण अनाथके नाथ जीन। रुदन करुं तुम चरन परन, टुंक दया दील लावोरे ॥ आवो० ॥ २ ॥ अम्नव सुंदर प्रीत

करी, अब क्युं उलटी रीत धरी । आतम हित जग लाज टरी, निज भुवन सीधावोरे। आवो० ॥ ३ ॥

स्तवन चोथुं ।

॥ राग विहाग ॥

वारक है शिवादेवीके नंदन करम कठिन डुख दाइरी, मार धार अघ दूर करीहे स्याम रूप दरसाइ सखीरी ॥ वा० ॥ १ ॥ मदन कदन शिव सदनके दाता, हरण करन दुखदाइरी ॥ करम भरम जग तिमिर हरनको, अजर अमर पद पाइ सखीरी ॥ वा० ॥ २ ॥ जडुपति वदन करत अनंदन, समन्न चार भितराइरी ॥ अमम अमम जिन रूप सरीसो, जिनवर पद उजपाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ३ ॥ राजिमती निज वनीता तारी, नवभव प्रीति निभाइरी ॥ हलधर रथकर मृग तुम नामे, ब्रह्मलोक सुर थाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ४ ॥ गजसुकुमाल लाल तुम तार्यो, भव-वन सगेर जराइरी ॥ ए उपगार गिनु जग केता, करुणा सिंधु सहाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ५ ॥ पिण निज कुटुंव उद्धार नाथजी, तारक विरूद धराइरी ॥ ए गुण अवर नरनमें राजे, इनमें कांइ

बधाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ६ ॥ रेवताचल मंडन दुख खंडन, महेर करो जिनराइरी ॥ मुझ घट आनद मंगल करतो, हुं पिण आतमराइ सखीरी ॥ वा० ॥ ७ ॥

स्वतन पांचमुं ।

॥ राग केरवा ॥

डगर वतादे पूजारीया, में तो भेटुं नेमि
जिनंद, डगर ॥ टेक ॥

प्रथम टुंक प्रभु जिनजी विराजे, राजे सुर-तरुकंद ॥ ड० ॥ १ ॥ सहस्त्रावन प्रभु चरण विराजे, भेटीये परम आनंद ॥ ड० ॥ २ ॥ ऊंची विखमी पंचमी टूंके, काटे कर्मका फंद ॥ ड० ॥ ३ ॥ अवर टूंक पर चरण सुहंकर, पूजो आतमचंद ॥ ड० ॥ ४ ॥

स्तवन छठुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

चलो सजनी जिन वंदनको, गिरनारी नेमि
सामरीया टेक ॥

ऊंचेरे गढपर प्रभुजी बिराजे, दरस करत भवजल तरीया ॥ च० ॥ १ ॥ स्याम वरण तनु

भविजन मोहे, शांति रूप तन मन ठरीया ॥च०॥ २॥ आतम आनंद मंगल मूरती, सूरति जिन हिरदे धरीया ॥ च० ॥ ३ ॥

स्तवन सातमुं ।

॥ राग ध्रुपद ॥

आई इंद्र नार कर कर शृंगार ॥ चाल ॥

तुम मदन जार, निजरूप धार, गिरवर सधार, मन काम गार, सुन पशु पूकार, जग सब तज दीनो ॥ तुम० ॥ १ ॥ तुम दयावान, सब गुण निधान, मैं धरूं ध्यान, तुम चरन आन, सब गत निधान, तुम नाम नगीनो ॥ तुम० ॥ २ ॥ सुर इंद चंद नर इंद वंद, तुम दरस नयन मुझ सुख आनंद, आतम आनंद, चरनन चित्त दीनो ॥ तुम ॥ ३ ॥

स्तवन आठमुं ।

॥ राग मराठी ॥

नेमि निरंजन नाथ हमारे मंजन मदन रदन कहीये ॥ जिन राजुल त्यागी रूपसें रंभा जगमें ना लहिये ॥ ने० ॥ १ ॥ अवर देव वामा वस कीने जीने कामरसे गहीये ॥ तूं अदभुत

जोड़ा नामसें मार करमका जर दहीये ॥ ने० ॥ २ ॥ रैवताचल मंडन दुख खंडन मंडन धर्म धुरा कहीये ॥ तुम दरशन करके पापके कोट छिनकमें सब ढहीये ॥ ने०॥३॥ आतम रंग रंगीला जिनवर तुमरी चरन सरन लहीये ॥ तो अलख निरंजन ज्योतिमें ज्योति मिलीने संग रहीये ॥ ने० ॥ ४॥

स्तवन नवमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

मन मगन नेमि जिन दरसनमें ॥ टेक ॥ आवो सखी मिल गिरवर चलिये, नेमि चरन युग फरसनमें ॥ मन० ॥ १ ॥ रेवताचल भये तीन कल्यानक, मुगति देत सेवक जनने ॥मन०॥२॥ आतम रूप गहु मन मोहे न छोडुं रूप रस तन धनने ॥ मन० ॥ ३ ॥

॥ इति श्री नेम नाथ जिन स्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

स्तवन पहेलुं ।

॥ राग बहंस ॥

मूरति पास जिनंदकी सोहनी । मोहनी जगत उधारण हारी। मू० । आंकणी। नील कमल

दल तनप्रभु राजै साजे त्रिभुवन जन सुखकारी। मोह अज्ञान मान सब दलनी। मिथ्या मदन महा अघ जारी। मू० ॥ १ ॥ हुं अति हीन दीन जगवासी। माया मगन भयो सुऊ बुऊ हारी। तो विन कौन करे मुऊ करुणा। वेगालो अव खवर हमारी। मू० ॥ २ ॥ तुम दरसन बिन वहु दुख पायो। खाये कनक जैसे चरी मतवारी। कुगुरू कुसंग रंगवस उरऊयो। जानी नही तुम भगती प्यारी। मू०॥ ३ ॥ आदि अंत बिन जग भरमायो। गायो कुदेव कुपंथ निहारी। जिन रस ठोर अन्य रस गायो। पायो अनंत महादुख भारी। मू० ॥ ४ ॥ कौन उधार करे मुऊ केरो। श्री जिन विन सहु लोक मऊारी। करम कलंक पंक सब जारे। जोजन गावत भगति तिहारी। मू० ॥ ५ ॥ जैसे चंद चकोरन नेहा मधुकर केत की दल मन प्यारी। जनम जनम प्रभु पास जिनेसर। वसो मन मेरे भगति तिहारी। मू० ॥ ६ ॥ अश्वसेन वामा के नंदन। चंदन सम प्रभु तप वुऊारी। निज आतम अनुभव रस दीजो। कीजो पलक में तनु संसारी। मू० ॥ ७ ॥

स्तवन बीजुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

चलो सजनी जिन बंदनको मधुवनमें पास
निरंजनको ॥ च० ॥ टेक ॥

समेत शिखर पर प्रभुजी विराजे, दरशन पाप निकंदनको ॥ च० ॥ १ ॥ अश्वसेन नरपति के नंदा, दुर करो दुख बंधनको ॥ च० ॥ २ ॥ आतमराम आनंदके दाता, वामा मात आनंदन को ॥ च० ॥ ३ ॥

स्तवन त्रीजुं ।

पारस नाथ जपतहै जो जन, ए देशी ॥

पास जिनंद आनंदके दाता, तीन भवनमें मोह लियोरे ॥ पा० ॥ टेक ॥

वामानंदन पाप निकंदन, तीन भवनमें नाम गयोरे ॥ पा० ॥ १ ॥ कमठासूरको मद हर लीनो, सात जनममें जयकार लियोरे पा० ॥ २ ॥ आतम समेत शिखर चल जाउं, जनम मरन दुख दूर थयोरे ॥ पा० ॥ ३ ॥

स्तवन चोथुं ।

॥ राग केरवा ॥

झगर बतादे पहाडीया, मैं तो पूजुं परम आनंद ॥ झगर० ॥ टेक ॥

पास चरन भेटनकी मनमें, लागी बहुत उमंग ॥ झ० ॥ १ ॥ धन्य दिवस वो सकल गिनूंगा, जाऊं समेत उत्तंग ॥ झ० ॥ चातक घन जिम दरशन चाहुं, मनमें भाव अभंग ॥ झ० २ ॥ आतम रस भरी जिनवर निरखुं फले मनोरथ चंग ॥ झ० ॥ ३ ॥

स्तवन पांचमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

मैं देखा पारसनाथ निरंजन सफल फली मन आसजी ॥ मैं० ॥ टेक ॥

गिरि समेत प्रभु सोहे मोहे, मोहे भवि जन रासजी ॥ मैं० ॥१॥ देश देशके जातरु आवे कोई न थावे निरासजी ॥ मैं० ॥२॥ संघ सुहावन मधुवन सुंदर, जिहां प्रभुलीना वासजी ॥ मैं० ॥ ३ ॥ आतम आनंद मंगल मूरत, आनंद घन सुख रासजी ॥ मैं० ॥ ४ ॥

स्तवन छठुं ।

पारसनाथ जपत है जो जन, ॥ ए देशी ॥
पासं जिनंद रटत है जो जन, दूर टले भव सागर फेरे ॥ पा० टेक ॥

तीन भवनमें तिलक विराजे अष्टादश दोष सब मेरे॥ पा० ॥ १ ॥ अवर देव वामा वस कीने, भीने मदन मदंध घनेरे ॥ पा० ॥ २ ॥ शांतिरूप तुम दरसन कीने, नाम लेत सब बंधन फेरे॥ पा० ॥ ३ ॥ गिरि समेत प्रभु अटल बिराजे, आतम आनंद रसको लेरे ॥ पा० ॥ ४ ॥

स्तवन सातमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

प्रभु पास निरंजन जयकारी ॥ टेक ॥
बालपने प्रभु अदभुत ज्ञानी, राख्यो नाग लकर फारी ॥ प्र० ॥१॥ दे नवकार फणी दर कीनो, एक दया दिलमें धारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ वाणीरस अमृत वरसायो, भविजनके कारज सारी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ समेतशिखर प्रभु मुक्ति विराजे, निज आतमगुण ले लारी ॥ प्र० ॥ ४ ॥

स्तवन आठमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

जिन पास दरस कर मगन भये ॥ टेक ॥
चरन सरन प्रभु तुम रस राचे काटे करम कलंक गये ॥ जि० ॥ १ ॥ तेरे भजनसें पाप पखारे, जनम मरन दुख दूर भये ॥ जि० ॥ २ ॥ गिरि समेत प्रभु त्रिभुवन मोहे, आतम रसमें मगन थये ॥ जि० ॥ ३ ॥

स्तवन नवमुं ।

॥ राग भैरवी ॥

॥ लागी लगन कहो केसे छुटे ।
प्राणजीवन प्रभु प्यारेसें, ए देशी ॥

श्री शंखेश्वर निज गुनरंगी, प्राणजीवन प्रभु तारेरे श्री शंखेश्वर० ॥ आंचली ॥ अश्वसेन वामाजीको नंदन, चंदन रस सम सारेरे ॥ अनीयाली तोरी अंबुज अखीयां, करुणा रसभरे तारेरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥१॥ नयन कचोले अमृत रोले, भविजन काज सुधारेरे ॥ भवि चकोर चित्त हरखे निरखी, चंद किरण सम प्यारेरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥२॥ तेरो ही नाम रटत हुं निशदिन, अन्य आलंवन छारेरे ॥ शरण पड्ये को पार उतारे, ऐसो विरुद तिहारेरे ॥

श्री शंखेश्वर० ॥३॥ भ्रमत भ्रमत शंखेश्वर स्वामी, पामी भ्रम सब झारेरे॥ जनम मरणकी भीति निवारी, वेग करो भव पारेरे॥ श्री शंखेश्वर०॥४॥ आतमराम आनंद रस पूरण,तुं मुज काज सुधारेरे॥ अनहद नाद बजे घट अंदर, तुंही तुंही तान उच्चारेरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥५॥

स्तवनं दशमुं ।

॥ राग खमाच ॥

श्री शंखेश्वर दरस देख, कुमति मोरी मिट गइरे आज ॥ आंचली ॥ ज्ञान वचन पूजा रस गायो, नाश कष्ट भविजन मन भायो ॥ युं जिन मुरति रंग देख, दुरगति मेरी खुट गइरे ॥ श्री शखेश्वर०॥ १ ॥ निरविकार वामासंग त्यागी, जप माला नहीं नाथ निरागी। शस्त्र नहीं कर द्वेष मिटे, भ्रमता सब बुट गइरे ॥ श्री शंखेश्वर०॥२॥ निज विभूति लीनी लार, लोकालोक करी उज-वार। नाम जपे सब पाप कटे, दुर्मति सब लुट गइरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥३॥ आनंद मंगल जगमें चार, मंगल प्रथम जगत करतार। श्रीवामा सुत पास तुंही, अघ भ्रांति मिट गइरे ॥ श्री शंखे-

श्वर० ॥ ४ ॥ श्याम मेघ सम पासजी निरखी, आतम आनंद शिखी जिम हरखी । करत शब्द मुख पास तुंही, यही रटना रट लइरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥ ५ ॥ इति ॥

स्तवन अग्यारमुं ।

॥ राग पंजाबी टेकानी ठुमरी ॥

मोरी बैयां तो पकर शंखेश स्याम, करुणा रसभरे तोरे नैन स्याम ॥ मोरी० ॥ आंचली ॥ तुम तो तार फणींद जग साचे, हमकुं वीसार न करुणा धाम ॥ मोरी० ॥ १ ॥ जादवपति अरति तुम कापी, धारित जगत शंखेश नाम ॥ मोरी० ॥ २ ॥ हम तो काल पंचम वस आये, तुमारो शरण जिनेश नाम ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ संयम तप करने शुद्ध शक्ति, न धरुं कर्म झकोर पाम ॥ मोरी० ॥ ४ ॥ आनंद रस पूरण सुख देखी, आनंद पूरण आतमराम ॥ मोरी० ॥ ५ ॥

स्तवन बारमुं ।

॥ राग कालींगडो ॥

पास प्रभुरे तुम हम शिरके मोर ॥ पास० ॥ टेक ॥ जो कोइ सिमरे शंखेश्वर प्रभुरे, मारेगा

पाप्र निचोर ॥ पास प्रजु० ॥ १ ॥ तुं मनमोहन चिद्घन स्वामीरे, साहेब चंद चकोर ॥ पास प्रजु० ॥ २ ॥ त्यूं मन विकसे जविजन केरारे, फारेगा कर्म हींमोर ॥ पास प्रजु० ॥ ३ ॥ तुं मुज सुनेगा दिलकी बातांरे, तारोगे नाथ खरोर ॥ पास प्रजु० ॥ ४ ॥ तुं मुज आतम आनंद दातारे, ध्याता हुं तुमेरा किशोर ॥ पास प्रजु० ॥ ५ ॥ इति ॥

स्तवन तेरमुं ।

॥ राग पंजाबी ठेकानी ठुम्मरी ॥

तोरी ठबी मनोहारी; शंखेश स्याम; नीलांबुजवत तोरे नैन स्याम । तोरी० ॥ आंचली ॥ चंद्र ज्यूं वदन जगत तम नासे, चरण कमल पंक पखारे नाम ॥ तोरी० ॥ १ ॥ नीलवरण तनु जवि मन मोहे, सोहे त्रिजुवन करुणा धाम ॥ तोरी० ॥ २ ॥ पारस पारस सम करे जनको, हाटक करन तुमरो काम ॥ तोरी० ॥ ३ ॥ अजर अखंमित मंमित निज गुन, ईश निजीत पूरे काम ॥ तोरी० ॥ ४ ॥ अनघ अमल अज चिद् घन रासी, आनंद घन प्रजु आतमराम ॥ तोरी० ॥ ५ ॥

स्तवन चौदमुं ।

॥ राग भेरवी में गजल ॥

मुख बोल जरा यह कहदे खरा, तुं ओर नहीं में ओर नहीं ॥ मुख० ॥ आंचली ॥ तुं नाथ मेरा में हुं जान तेरी, मुजे क्युं विसराइ जान मेरी ॥ जब करम कटा ओर भरम फटा ॥ तुं ओर नहीं० ॥ १ ॥ तुं हे ईश जरा में हुं दास तेरा ॥ मुजे क्युं न करो अब नाथ खरा ॥ जब कुमति टरे ओर सुमति वरे ॥ तुं ओर नहीं० ॥ २ ॥ तुं हे पास जरा में हुं पास परा ॥ मुजे क्युं न गेमावो पास टरा ॥ जब राग कटे ओर द्वेष मिटे ॥ तुं ओर नहीं० ॥ ३ ॥ तुं हे अचर वरा में हुं चलने चरा, मुजे क्युं न बनावो आपसरा ॥ जब होश जरे ओर सांग टरे ॥ तुं ओर नहीं० ॥ ४ ॥ तुं हे भूप वरा शंखेश खरा, में तो आतमराम आनंद भरा ॥ तुम दरस करी सब भ्रांति हरी ॥ तुं ओर नहीं० ॥ ५ ॥



स्तवन पंदरमुं ।

॥ राग सोरठ ॥

लगीलो वामानंदन स्युं । भरम भंजन तुं ॥

लगीलो० आंकणी । जाय सब धन जाय वामा प्राण जाय न क्युं ॥ एक जिनजी की आण मेरे रहोने ज्युंकी त्यूं ॥ लगीलो० ॥ १ ॥ नांहि तप बल नांहि जप बल शुद्ध समय त्यूं । एक प्रभु-जीके चरण शरणां भ्रांति भांजी कदपुं॥लगीलो० ॥ २ ॥ घट अंदरकी जाने तुं जिन कथन करनेशुं । देख दीन दयाल ॥ मुजको तार जगसें तुं ॥ लगीलो० ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र सुरींद्र पदवी कोन वांछुं हुं । एक तुम दृग करुणा भीने सदा निरखुं ज्यूं ॥ लगीलो० ॥ ४ ॥ तार आतमराम राजा मुक्ति रमणि वरुं । श्री शंखेश्वर नाथ जिनवर शुद्धानंद भरुं ॥ लगीलो० ॥ ५ ॥

स्तवन सोलमुं ।

॥ राग माढ ॥

पूजो तो सही मेरा चेतन पूजो तो सही, थे तो फलवर्धी पारसनाथ प्रभुको पूजो तो सही ॥ टेक ॥

अष्टादश दूषण करी वरजित देवो तो सही, टुक स्याम सलूनो रूप आनंद भर जोवो तो सही ॥१॥ परमानंद कंद प्रभु पारस पारस तो सही,

तुम निज आतमको कनक करन टुक फरसो तो सही ॥ १ ॥ अजर अमर प्रभु ईश निरंजन भंजन कर्म कही, एतो सेवक मन वंछित सब पूरण अद्भुत कल्प सही ॥ ३ ॥ चंद्र अंक वेद दिव संवत् षष्ठी मैत्र लही, मन हर्ष हर्ष प्रभुके गुण गावत परमानंद लही ॥ ४ ॥



स्तवन सत्तरमुं ।

॥ राग विहाग ॥

दायक है प्रभु पास निरंजन अंजन तिमिर मिटाइरी । अनुभूति निज प्रगट भइ है परमानंद भराइ सखीरी॥ दायक० ॥१॥ सप्त भंग षरूभंग अभंग रंगे गुण परजाइरी ॥ चार भंग अरु पक्ष सुज्ञाता ध्याता शिवसुख ताइ सखीरी ॥ दा० ॥२॥ चार निखेपा नय घन सातो ज्ञान क्रिया समुदाइरी ॥ तिमिर एकांत मिथ्या मत टारी अंतर्ज्योति लगाइ सखीरी ॥ दा० ॥ ३ ॥ तुम जाने विन नाथ निरंजन काल अनंत गमाइरी । पर गुण राच रच्यो नट नाटक नयना मैल भराइ सखीरी ॥ दा० ॥ ४ ॥ तुम अंजनने तिमिर नसायो दुर्जन पिंथर मिटाइरी ॥ निज स्वरूपके

जान नये हम जिन मिलने मन लाइ सखीरी दा० ॥ ५ ॥ ढुढत ढुंढत बंदर गोघे विन्नु तुम दरसन पाइरी । निर्यामक तुं कांठे मिलियो अब हम क्या परवाइ सखीरी ॥ दा० ॥ ६ ॥ इण कारण तुम नवोदधि कांठे बैठे ध्यान लगाइरी । करुणासिंधु नव पार करो मुऊ चरण सरण तुम आइ सखीरी ॥ दा० ॥ ७ ॥ तुम सम तारक कोइ न दीसे त्रिन्नुवन सगरे मांइरी ॥ कौन बैठे नव सायर तीरे पास प्रन्नु विना सांइ सखीरी ॥ दा० ॥७॥ जयो जिन चंद आनंद के दाता सगरे काज सराइरी ॥ आतम चंद उद्योत कियो है नवोदधि वेग तराइ सखीरी ॥ दा० ॥ए॥



स्तवन अढारमुं ।

॥ राग सोरठ ॥

कुबजाने जादु मारा ॥ यह चाल ॥ शिव रमणी जाडु मारा, जब पास जिनंद जुहारा ॥ शिव० ॥ टेक ॥

तिर्यंग अमर नर नारक रूपें, सांग धरे अति नारा ॥ मोहकी दोर बंधी गले तोरे, घटमें घोर अंधारा ॥ शिव० ॥ १ ॥ कुमता रमण नरम

रस राच्यो, नाच्यो अनादि अपारा ॥ माता उदर कूप रस कसमल, मनुष जनम मैं निकसे, पुन्य उदय रखवारा ॥ कुमता वास आस मत कीजो, जिम ललितांग कुमारा ॥ शि० ॥ ३ ॥ अतर अवीर जैन वच नीके, फुनी निज अंग सुधारा ॥ सुमता रंग करो निज तनुपें, भेटो पास कुमारा ॥ शि० ॥ ४ ॥ किहां होसी वो नाथ निरंजन, इम ढूंढत जग सारा ॥ गोघा मंडण सब दुख खंडण, मिलीयो प्रेम प्यारा ॥ शि० ॥ ५ ॥ हुकम प्रभुके शिवपद मांग्यो, अब क्यों ढील उदारा ॥ संवत शंशि निधि अंग्नि नेत्रं ज्यूं, तूठे पास कुमारा ॥ शि० ॥ ६ ॥ संतोष मुनिने हर्ष संघको, मास रह्या जिहां चारा ॥ शिव वधू निश्चे हुकम पास के, आनंद मंगल चारा ॥ शि० ॥ ७ ॥

॥ स्तवन वीसमुं ॥

॥ चाल सरवणकी ॥

अब मोहे पार उतार, चिंतामणि अब मोहे० ॥ रामनगर मंडण दुख खंडण, अवर न कोइ आधार ॥ चिं० ॥ १ ॥ आस पास प्रभु

अजित जिनेसर, मुनि सुव्रत चित धार। चंद्र प्रभु श्रीवीर जिनेसर, शासनके सिरदार॥ चिं०॥ २॥ एक इब्बक प्रभु लोह कंकण लइ, नृपति अंग संग कार॥ वचन युक्तिसें हैम हुओ है, येह शक्ति संसार॥ चिं०॥ ३॥ चिंतामणि तुम नाम धरावो, चिंतत किम नही कार॥ सेवकने विल-विलता देखी, अपना नाम संभार॥ चिं०॥४॥ भ्रमत भ्रमत चिंतामणि पायो, रामनगरमें सार॥ पांच सेवक प्रभु पांच जिनेसर, पंचमी गति द्यो सार॥ चिं०॥ ५॥ संवत भुवन भुवन निधि दधिसुत, आश्विन मास अतिसार॥ कर्मवाटी प्रतिपदि गुण गाया, कर आतम उद्धार॥ चिं०॥ ६॥

स्तवन एकवीशमुं।

॥ राग प्रभाति ॥

पारस नाथ दया कर मोपर, भवसागरथी पार उतारो॥ पा०॥ १॥ अवर देव सब त्याग करीने, सरण लियो प्रभु अब में थारो॥ पा०॥ २॥ काशी देश वनारसी नगरी, जिहां लियो है प्रभु अवतारो॥ पा०॥ ३॥ अश्वसेन वामा-

जीके नंदन, भव वन काटनको प्रभु आरो ॥ पा० ॥ ४ ॥ येह संसार पलाल पुंजको, दह करनको अग्नि ऊारो ॥ पा० ॥ ५ ॥ येह संसार विकट अटवीमें, काम क्रोध दुख देते हैं भारो ॥ ६ ॥ सरण लियो सुत अश्वसेनको, कर प्रभु आतम अब उद्धारो ॥ पा० ॥ ७ ॥

स्तवन बावीशमुं ।

॥ राग भैरवी ॥

नीलवरण प्रभु पासजी विराजे, दरसनथी
दुख भाजेरे ॥ नील० ॥ टेक ॥

जो जात्री प्रभु दरसन पावे, फिर मनसें नहीं जावेरे ॥ दरस अपूरव कर कर प्राणी, पाप नाश कर जावेरे ॥ नी० ॥ १ ॥ चार खूंट फिर सब जग जोया, दरस ऐसा नहीं होयारे ॥ दाशरथीपुर नीलवपु जिन, मल मेरा सब धोयारे ॥ नी० ॥ २ ॥ जो प्रभुजीका दरस करे नित, नूतन रूप दिखावेरे ॥ नूतन रूपको फल है येही, रूप नवीन फुरावेरे ॥ नी० ॥ ३ ॥ चित्त एकागर कर कर कोइ, दरस प्रभु तन पावेरे । ते रजनी सुप-

नामें देखे, फेर जनम नही आवेरे ॥ नी० ॥ ४ ॥ कर उपर कर प्रभुजी बिराजे, सूचन ध्यान पतावेरे ॥ तीन छत्र प्रभु कंपर कहकर, त्रिभुवन स्वामी जनावेरे ॥ नी० ॥ ५ ॥ चामर कहत है नीचै झूक कर, ऊर्ध्वगति तुम जावेरे ॥ भामंडल पूठे प्रभु दरसन, तम मिथ्यात गमावेरे ॥ नी० ॥ ६ ॥ अयुत जोजन ध्वज आगल प्रभु के, तिस उपर कर साखारे ॥ जिष्णु छदमथी एम कहत है, स्वामी इक जग ताजारे ॥ नी० ॥ ७ ॥ जिनवरकी सेवामें नित, गंऊ श्रावक राच्यारे ॥ आतम लिप्सा पूरण कीजो, मोक्ष मारग एक जाच्यारे ॥ नी० ॥ ८ ॥

स्तवन त्रेवीशमुं ।

पास जिनंद निहार हो, तुं त्रिभुवन
त्राता ॥ टेक ॥

तुम दरसनसें अजर अमर हो, निरंजन निराकार हो ॥ तुं० ॥ १ ॥ अवर देव नीके कर देखे, पेखे सर्व विकार हो ॥ तुं० ॥ २ ॥ अब मोहे तारो ढील न कीजो, आतम आनंद कार हो ॥ तुं० ॥ ३ ॥

स्तवन चोवीशमुं ।

॥ राग दादरो ॥

वध्योजी मम न्नाग वध्योजी मम न्नाग निरखी जिन बिंबको वध्योजी ॥ टेक ॥

मिट गइ फिकरी करम अघ आज, जिनँद जस अखीयां जगत सिर ताज ॥ व० ॥ १ ॥ सटक गइ ममता कुगुरु न्नइ लाज, पाखंम गढ खमनी जिनंद किरपाज ॥ व० ॥ २ ॥ नटक मरी जमता आनंद खिम्यो आज, जिनंद वामानंदको आतम जग राज ॥ व० ॥ ३ ॥

स्तवन पच्चीशमुं ।

॥ राग दादरो ॥

करोजी न्नरपूर करोजी न्नरपूर, आनंद सुख कंदको करोजी ॥ टेक ॥

वामाजीके नंदा करम दल चूर, दया दिल रखीया कुगति करो दूर ॥ क० ॥ १ ॥ सरण तुम लीनो काटोजी न्नव मूर, खूलेजी मोरी अखीयां जगत जैसें सूर ॥ क० ॥ २ ॥ सन्नल न्नइ चिंता नयोंजी सुख पूर, आनंद दिल रखीया तिमिर हरो दूर ॥ क० ॥ ३ ॥

स्तवन छव्वीशमुं।

॥ राग ठुमरी ॥

में देखा चिदघन पारसको, मेरे काज सरे
सब आजजी ॥ में० ॥ टेक ॥

नीलवरण तनु सुर नर मोहे, शांति वदन सुख साजजी ॥ में० ॥ १ ॥ अष्टादश दूषण गए दूरे, सारे भक्त सब काजजी ॥ में० ॥ २ ॥ चंद वदन भवि जन मन मोहे, तूं त्रिभुवन सिर ताजजी ॥ में० ॥ ३ ॥ जनम जनममें तुम पद सेवुं, एही आतमराजजी ॥ में० ॥ ४ ॥

स्तवन सत्तावीशमुं।

॥ राग अंग्रेजी बाजेकी चाल ॥

आनंद तेरे दर्शका जिनराज मानुं हुं ॥ आ० ॥ टेक ॥ तुंही आनंद कंदका है तार जानुं हुं, अवर देव देखीये विशेषीयेजी तुं ॥ आ० ॥ १ ॥ मुझे करो अमार तार मार जार तुं, तुंही जो आज भेटीयो चमेटीयोजी तुं ॥ आ० ॥ २ ॥ आतमा आनंद चंद फंद फार तुं, मुझ एक रूप कीजीए दातार पास तुं ॥ आ० ॥ ३ ॥

स्तवन अठावीशमुं ।

॥ राग ध्रुपद ॥

आई इंद्र नार ॥ देशी ॥

सब करम जार, जिन सरन धार, तुम नाम सार, भवी सरत कार, अनुभव आधार, समयतरस भीनो ॥ स० ॥ १ ॥ भवोदधि अपार, करतार तार, जग सत्थवाह, सब जग आधार, तूंही पास नाथ अजरामर कीनो ॥ स० ॥ २ ॥ सब मेट सोग, सब विषय भोग, कर आज योग, मिटे मनका रोग, तुम नाम लेत मोह भट जय कीनो ॥ स० ॥ ३ ॥ मम सर्यो काम, तुम चरन पाम, तुम धर्यो ध्यान, गयो पाप नाम, आतम आनंद दरसन कर लीनो ॥ स० ॥ ४ ॥

स्तवन ओगणत्रीशमुं ।

॥ राग प्रभाति ॥

थोमीसी जिंदगी सुपनसी माया, इनमें क्यों मुरझायाहे रे ॥ थो० ॥ टेक ॥

तन धन जोवन छिनकमें विनसे, जिस पर मन रिझायाहे रे ॥ थो० ॥ १ ॥ गरब भार जगमें न समाते, बादर जिम विरलायाहे रे ॥ थो० ॥

स्तवन छव्वीशमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

में देखा चिद्घन पारसको, मेरे काज सरे सब आजजी ॥ में० ॥ टेक ॥

नीलवरण तनु सुर नर मोहे, शांति वदन सुख साजजी ॥ में० ॥ १ ॥ अष्टादश दूषण गए दूरे, सारे नक्त सब काजजी ॥ में० ॥ २ ॥ चंद वदन नवि जन मन मोहे, तूं त्रिभुवन सिर ताजजी ॥ में० ॥ ३ ॥ जनम जनममें तुम पद सेवुं, एही आतमराजजी ॥ में० ॥ ४ ॥

स्तवन सत्तावीशमुं ।

॥ राग अंग्रजी बाजेकी चाल ॥

आनंद तेरे दर्शका जिनराज मानुं हुं ॥ आ० ॥ टेक ॥ तुंही आनंद कंदका है तार जानुं हुं, अवर देव देखीये विशेषीयेजी तुं ॥ आ० ॥ १ ॥ मुफे करो अमार तार मार जार तुं, तुंही जो आज नेटीयो चमेटीयोजी तुं ॥ आ० ॥ २ ॥ आतमा आनंद चंद फंद फार तुं, मुफ एक रूप कीजीए दातार पास तुं ॥ आ० ॥ ३ ॥

स्तवन अठावीशमुं ।

॥ राग ध्रुपद ॥

आई इंद्र नार ॥ देशी ॥

सब करम जार, जिन सरन धार, तुम नाम सार, नवी सरत कार, अनुनव आधार, समयतरस नीनो ॥ स० ॥ १ ॥ नवोदधि अपार, करतार तार, जग सत्थवाह, सब जग आधार, तूंही पास नाथ अजरामर कीनो ॥ स० ॥ २ ॥ सब मेट सोग, सब विषय नोग, कर आज योग, मिटे मनका रोग, तुम नाम लेत मोह नट जय कीनो ॥ स० ॥ ३ ॥ मम सर्यो काम, तुम चरन पाम, तुम धर्यो ध्यान, गयो पाप नाम, आतम आनंद दरसन कर लीनो ॥ स० ॥ ४ ॥

स्तवन ओगणत्रीशमुं ।

॥ राग प्रभाति ॥

थोमीसी जिंदगी सुपनसी माया, इनमें क्यों मुरझायाहे रे ॥ थो० ॥ टेक ॥

तन धन जोबन छिनकमें बिनसे, जिस पर मन रिझायाहे रे ॥ थो० ॥ १ ॥ गरव नार जगमें न समाते, बादर जिम विरलायाहे रे ॥ थो० ॥

२ ॥ भज प्रभु पास देवनके देवा, आतम अवि-
चल मायाहे रे ॥ थो० ॥ ३ ॥

स्तवन त्रीशमुं ।

॥ राग ॥

पालना गडल्यारे वढइया, ए देशी ॥
पालने जिन पास पोढइया ॥ टेक ॥

सुरपति मिल सब देत हलोरी, हरषी
वामादेवी मइया ॥ पा० ॥ १ ॥ इंद्राणी मिल
मंगल गावे, नाच करे तात थइया ॥ पा० ॥ २ ॥
तुं मेरा लाला जग सब व्हाला, फिर फिर मुख
मटकइया ॥ पा० ॥ ३ ॥ आतम कल्पतरु जग
प्रगट्यो, दीठा आनंद लइया ॥ पा० ॥ ४ ॥

स्तवन एकत्रीशमुं ।

॥ राग मराठी ॥

अर्हन पदको भजके चेतन, निज स्वरूपमें
रम रहीये, तुम अकल सरूपी, छोरुके परगुन
निज सत्ता लहीये ॥ अ० ॥ १ ॥ भेदाभेद अ-
जर अविनाशी, रूप रंग विना तुम कहीये, निज
रंग रंगीला, छोरुके लीला निज गुनमें रहीये ॥

अ० ॥ २ ॥ संध्या रंग अनंग संग त्यूं, जोवन
तन धन क्यों गहीये। क्यों नरम नूलाने, सुपन-
ती माया इसमें ना वहीये ॥ अ० ॥ ३ ॥ आतम
घटमें खोज पियारे, बाहिर नटकते ना रहिये।
ाडंबरू सब त्यागी, पासके चरण कमलमें जा
हीये ॥ अ० ॥ ४ ॥

स्तवन बत्रीशमुं ।

॥ राग बिहाग ॥

सिमर सिमररे सुज्ञानी जिनंद पद० ॥ टेक ॥

अजर अमर सब अलख निरंजन, नंजन
कर्म कठानी ॥ जि० ॥ १ ॥ चिदानंद घन अजर
अमूरत, सुरत त्रिनुवन मानी ॥ जि० ॥ २ ॥
शांति सुधारस जिनवर पारस, आरस लोक नि-
शानी ॥ जि० ॥ ३ ॥ कोटले नगरे बिंब बिराजे,
आतम अनुनव दानी ॥ जि० ॥ ४ ॥

स्तवन तेत्रीशमुं ।

॥ राग इमन अथवा पीलु ॥

तोरी सूरतिकी जाउं बलिहारी, मानुं ठवि
समता मतवारी ॥ तो० ॥ टेक ॥

समतारस भरे नयन कचोले, अमृत रस वरसे दृग तारी। शांत वदन भविजन मन मोहे, सोहे आनंदरस करतारी ॥ तो० ॥ १ ॥ काम मदन भामिनी संग नाही, शस्त्र रहित नहीं द्वेष विकारी। समरस मगन मगन निजरूपे, सब देवनकी छबि मदहारी॥ तो० ॥ २ ॥ ध्यान मगन कर ऊपर कररी, पद्मासन विपदा सब ठारी। पूरण ब्रह्म आनंद घन स्वामी, नामी नाम रटे अघ टारी ॥ तो० ३ ॥ शांतरसमय मूरति राजे, निरविकार समतारस भारी ॥ तीन भुवनके देवनकी छबि, तनकही तैसो रूप न धारी ॥ तो० ॥ ४ ॥ तीनोंही देव अनंग सुभटनें, वश कीने शक्ति सब जारी ॥ आतम आनंद निज रस राची, पारसनाथकी हुं बलिहारी ॥ तो० ॥ ५ ॥ इति ॥



अथ श्री महावीर जिन स्तवनानि।

स्तवन पहेलुं।

॥ राग ॥ आइ वसंत ॥

वीर जिनंद कृपाल हो, तुं मुज मन भाया ॥ टेक ॥

तेरे बिन कौन अधम उद्धारण, वारण मिथ्याजाल हो ॥ तुं मुऊ० ॥ १ ॥ बचन सुधारस तुम जग प्रगटे, गटके नविजन लाल हो ॥ तुं मुऊ० ॥ २ ॥ आतम आनंदरस नर लीनो, अजर अमर अकाल हो ॥ तुं मुऊ० ॥ ३ ॥

स्तवन बीजुं।

चलो नाई चलके देखावे, आज प्रन्तु वीर
दरस पावे ॥ टेक ॥

कुंदनपुर महाराज विराजे, महिमा जस गावे ॥ चलो० ॥१॥ त्रिशलानंदन सुरतरू जगमें, वांछित फल पावे ॥ चलो० ॥ २ ॥ मन वच तनुसें नक्ति करत जो, अमरापुर जावे ॥ चलो० ॥ ३ ॥ जन्म कल्याणक प्रन्तुको प्रगट्यो, आतम जस गावे ॥ चलो० ॥ ४ ॥

स्तवन त्रीजुं ॥

चलो नाई तुमको ले जावे, जिहां प्रन्तु
वीर दरस पावे ॥ टेक ॥

पावापुर महावीर विराजे, सुर नर [illegible] गावे ॥ चलो० ॥ १ ॥ पाम्या केवलकी [illegible]

चंबा चुन लावे ॥ चलो० ॥ २ ॥ मदन ताप सब दूर करनको, पूजी सुख पावे ॥ चलो० ॥ ३ ॥ आतम आनंद मुक्ति कल्याणक, जय जयकार थावे ॥ चलो० ॥ ४ ॥

स्तवन चोथुं ।

अथ श्री महावीर पालना ॥ चाल होरी ॥

त्रिशलादे गोद खिलावे छे ॥ टेक ॥

वीर जिनंद जगत किरपाल, तेराही दरस सुहावे छे ॥ त्रि० ॥ १ ॥ आ मेरे वाला त्रिभुवन लाला, ठुमक ठुमक चल आवे छे ॥ त्रि० ॥ २ ॥ पालने पोढ्यो त्रिभुवन नायक, फिर फिर कंठ लगावे छे ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ आवो सखी मुझ नंदन देखो, जगत उद्योत करावे छे ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ आतम अनुभव रसके दाता, चरण सरण तुम भावे छ ॥ त्रि० ॥ ५ ॥

स्तवन पांचमुं ।

॥ राग ठुमरी ॥

चलो भविजन जिन वंदनको, जिहां वीर जिनंद मुगति वरीयारे ॥ टेक ॥

पावापुरी में जिनजी बिराजे, नाथ निरंजन सुख करीयारे ॥ च० ॥ १ ॥ चरम चौमासा करी जिनवरने, गौतम केवलपद वरीयारे ॥ च० ॥ २ ॥ आनंद मंगल प्रभुजीके नामे, आतम अनुभव भव तरीयारे ॥ च० ॥ ३ ॥

स्तवन छट्ठुं ।

॥ राग अंग्रेजी बाजेकी चाल ॥

जिनंद चंद देखके आनंद भयो हुं ॥ टेक ॥

तुंही कलंक पंकको निपंक कार तुं, बंध कर्म धंधको विकार कार तुं ॥ जि० ॥ १ ॥ दास को निहार तार वीर नाथ तुं, रंग भंग मोहको विरंग जार तुं ॥ जि० ॥ २ ॥ निरख तात रैन रैन नाथ साथ तुं, तेरेही दर्श परसको आनंद मानुं हुं ॥ जि० ॥ ३ ॥ सूर नूर रंगको अनंग कार तुं, आतम आनंद रंग राज आज हुं जि० ॥ ४ ॥

स्तवन सातमुं ।

॥ राग बिहाग ॥

युं सिमरोरे सुज्ञानी, जिनंद पद ॥ टेक ॥

वदन चंद ज्युं शीतल सोहे, अमृत रस मयी वानी ॥ जि० ॥ १ ॥ चिदानंद घन अजर अमर तुं, ज्योतिमें ज्योति समानी ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ श्रेणिक नरपति पदकज सेवी, जिनवर पद उपजानी ॥ जि० ॥ ३ ॥ आतम आनंद मंगल माला, अजर अमर पद खानी ॥जि०॥४॥

स्तवन आठमुं ।

॥ राग माढ ॥

प्रीत लागी रे जिनंदशुं प्रीत लागी
रे ॥ आंचली ॥

जैसे धेनु वन फिरेरे, मन वछरे केरे मांह। चरण कमल त्यूं वीर केरे, छिन कही विसरत नाह ॥ जिनंद० ॥ १ ॥ विंध्याचल रेवा नदी रे, गज वर ऊूलत नाह ॥ मनमोहन तुम मूरति रे, सिमिरत मिटे दुःख दाह ॥ जिनंद० ॥ २ ॥ तें तार्यो प्रभु मोहको रे, हरि नवसागर पीर ॥ ज्ञान नयन मुजे तें दीये रे, करुणा रस मय वीर ॥ जिनंद० ॥ ३ ॥ कोमि वदन कोमि जीनसें रे, कोमी सागर पर्यंत ॥ गुन गाउं तेरे

भक्तिशुं रे, तो तुम रिणको न अंत ॥ जिनंद० ॥ ४ ॥ कदि एक दिन मुज आवशे रे, निरखुं तेरो रे रूप । मो मन आशा तो फलेरे, फिर न परुं भव कूप ॥ जिनंद० ॥ ५ ॥ चरण कमल की रेणुमें रे, हुं लोटूं जगदीश ॥ अंहि न छोडूं तब लगेरे, न करे निज सम ईश ॥ जिनंद० ॥ ॥ ६ ॥ आतमराम तुं माहरो रे, त्रिसला नंदन वीर ॥ ज्ञान दिवाकर जग जयो रे, भंजन पर दुःख भीर ॥ जिनंद० ॥ ७ ॥

स्तवन नवमुं ।

॥ राग रामकली ॥

तेरो दरस मन भायो चरम जिन तेरो ॥ आंचली ॥ तुं प्रभु करुणा रसमय स्वामी, गर्भमें सोग मिटायो ॥ त्रिसला माताको आनंद दीनो, ज्ञात नंदन जग गायो ॥ चरम० ॥ १ ॥ वरसी दान दे रोरता वारी, संयम राज्य उपायो । दीन हीनता कबुय न तेरे, सतचिद् आनंद रायो ॥ चरम० ॥ २ ॥ करुणा मंथर नयने निरखी, चंड कौशिक सुख दायो, आनंदरस भर सुरग पहुंतो, एसा कौन करायो ॥ चरम० ॥ ३ ॥ रतन कंबल

द्विजवरको दीनो, गोशालक उधरायो ॥ जमाली पन्नर जव अंते, महानंद पद गायो ॥ चरम० ॥ ४ ॥ मत्सरी गौतमको गणधारी, शासन नायक गायो । तेरे अवदात गिनुं जग केते, करुणासिंधु सुहायो ॥ चरम० ॥ ५ ॥ हुं बालक शरणागत तेरो, मुजको क्युं विसरायो ॥ तेरे विरहसे हुं डुःख पामुं, कर मुज आतम रायो ॥ चरम० ॥ ६ ॥

स्तवन दशमुं ।

॥ राग वसंत सिंध काफी ॥

वीर प्रजु मन जायोरे मेरे जव डुःख टारे॥ वीर० ॥ आंचली ॥ देशना अमृत रस जरी नीकी, जवजव ताप मिटायो । शोल पहोर लग दे जिनवरजी, करुणासिंधु सुहायोरे ॥ मे० ॥१॥ पचपन सुन्न फल पचपन इतरे, यही अध्ययन सुनायो । छत्रीस बिन पूछे प्रश्नोंका, उत्तर कथन करायोरे ॥ मे० ॥ २ ॥ एक अध्ययनही नाम प्रधाने, कथन करत महारायो । महानंद पद जग गुरु पायो, जय जयकार करायोरे ॥ मे० ॥ ३ ॥ कल्याणक निर्वाण महोच्छव, कार्त्तिक मांवास

गयो ।। चउसठ सुरपति सोग करतहे, नरते तरणि छिपायो रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ गौतम देवशरम प्रतिबोधी, सुन मनमें गन्नरायो । वर्धमान मुजे छोम्ह जगतमें, एको ही मोक्ष सिधायो रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ कोण आगल हुं प्रश्न करशु, उत्तर कोन सुनायो । कुमति उल्लुक बोलेंगे अधुना, अंधकार जग छायो रे ॥ मे०॥ ६॥ तुं नहीं किसका को नहीं तेरा, तुं निज आतमरायो ॥ इम चिंतत ही केवल पायो, जय जय मंगल गायो रे ॥ मे० ॥ ७ ॥



स्तवन इग्यारमुं ।

॥ राग सोरठ ॥

वीर जिने दीनी माँने एक जरी, एक नुजंग पंचविश नागन,सुंघत तुरत मरी ॥ आंचली ॥ कुमति कुटल अनादिकी वैरन, देखत तुरत फरी, चारो ही दासी पूत नयंकर, हूए नसम जरी ॥ वीर० ॥ १ ॥ बावीस कुमति पूत हठिले, नाठे मदसें गरी । दोउ सुनट जर मूरसें नासे, बुध्यो मदन मरी ॥ वीर० ॥ २ ॥ महानंद रस चाखत पायो, तन मन दाह ठरी। अजरामर पद संग सुहायो, नव नव ताप हरी ॥ वीर० ॥ ३॥ सिव

वधु वसी करणको नीकी, तीनो रत्न धरी । आ-
तम आनंद रसकी दाता, वीर प्रभु दान करी
वीर० ॥ ४ ॥

स्तवन बारमुं ।

॥ राग श्री ॥

वीर जिन दर्शन नयनानंद, वीर जिन० ॥
चंद्र वदन मुख तिमिर हरे जग, करुणा रस
दृग भरे मकरंद । नीलांबुज देखी मन मधुकर,
गूंजे तूंही तूंही नाद करंद ॥ वीर जिन० ॥ १ ॥
कनक वरण तनु भवि मन मोहे, सोहे जीते
सुर गन वृंद । मुखथी अमृत रस कस पीके,
शिखीबत भवि जन नाच करंद । वीर जिन०
॥ २ ॥ तपत मिटी तुम बचनामृतसे, नासे
जनम मरण दुःख फंद । अब परे तुम दरस
करीने, प्रतक्ष मानुं हुं जिन चंद ॥ वीर जिन०
॥ ३ ॥ अरज करतहुं सुन भयभंजन, रंजन नि-
ज गुन कर सुखकंद । त्रिशला नंदन जगत जयं-
कर, कृपा करो मुज आतम चंद ॥ वीर जिन० ॥४॥

स्तवन तेरमुं।

॥ राग बसंत सिंध काफी ॥

रे सुन वीर जिनंदा चरण शरण ल्युं तेरा ॥ सुन० ॥ काम क्रोध मद राग अज्ञाना, लोभ द्वेष मोह चेरा। माया कुरांभी मदयुत सांभी, इन दिनों मुजे घेरारे ॥ सुन० ॥ १ ॥ मन वचन तनुसें करत आकर्षन, वाम रस नेरा। सब धन दाहे अकंर रोगको, रंजित पर गुण केरारे ॥ सुन० ॥ २ ॥ संका कंखा भ्रांति बढावे, ममता आश घनेरा। अप्रीति करे बिनकमें जनको, दीयो गति चार वसेरा रे ॥ सुन० ॥ ३ ॥ चारित्र राजको त्रास दीये नितु, निज गुन दावे मेरा ॥ सद आगम संतोष सुरंगा, सम्यग दरसन मेरा रे ॥ सुन० ॥ ४ ॥ हुकम करो करें सांनिध मेरी, नासे भरम अंधेरा। आतम आनंद मंगल दीजे, हुं जिन बालक तेरा रे ॥ सुन० ॥ ५ ॥

स्तवन चौदमुं।

॥ राग गोडी ॥

वीर जिनेश्वर स्वामी आनंद कर। वीर० ॥

मो मन तुम बिन कित हीन लागे । ज्युं जा-मनी वश कामी ॥ आ० ॥ १ ॥ पतत उधारण बिरुद तिहारो । करुणारस मय नामी ॥ आ० ॥ २ ॥ अन्य देव बहु विधि कर सेवे । कबुय नहीं हुं पामी ॥ आ० ॥ ३ ॥ चिंतामणि सुरतरु तुम सेवी । मिथ्या कुमतकुं वामी ॥ आ० ॥ ४ ॥ जन्म जन्म तुम पद कज सेवा । चाहुं मन विसरामी ॥ आ० ॥ ५ ॥ रंजा रमण सुरिंद पद चक्रि । वांबुं हुं नहीं निकामी ॥ आ० ॥ ६ ॥ आत्माराम आनंद रस पूरण । दे दरसण सुख धामी ॥ आ० ॥ ७ ॥

स्तवन पंदरमुं ।

॥ राग पंजाबी ठेकानी ठुमरी ॥

मैरी सैयां तुं नजर कर वर्धमान । तुं साचो वीर करुणानिधान । मैरी सैयां ॥ आंकणी ॥ तेरेहि चरण कमलको मधुकर । वीर वीर मुख रटित नाम ॥ मैरी सैयां० ॥ १ ॥ तुम विरहो दुःखम पुन आरो । मन बल दुर्बल तनु कताम ॥ मैरी सैयां० ॥ २ ॥ उत्तराध्ययनमें तुम वच राजे । तेही आलंबन चितमें ठाम ॥ मैरी

सैयां० ॥ ३ ॥ तुम बिन कौन करे मुज करुणा विनती सीकारो करुणाधाम ॥ मैरी सैयां० ॥ ४ ॥ करुणादृग जरी तनु कज निरखो । पामुं पद जीम आतमराम ॥ मेरी सैयां० ॥ ५ ॥

स्तवन सोळमुं ।

॥ राग भोपाली ताल दीपचंदी ॥

इतनुं मागुंरे देवा इतनुं मागुंरे, जव जव चरण शरण तुम केरो ॥ इतनुं० ॥ आंचली ॥ सिधारथ नृप नंदन केरो, त्रिशला माता आनंद वधेरो । ज्ञातनंदन प्रजु त्रिजुवन मोहे, सोहे हरित जव फेरोरे ॥ इतनुं० ॥ १ ॥ दीनदयाल करुणानिधि स्वामी, वर्धमान महावीर जलेरो ॥ श्रमण सुहंकर दुःख हरनामी । आर्यपुत्र ज्रम जूत दलेरो ॥ इतनुं० ॥ २ ॥ तेरेहि नामसे हुं मदमातो, स्मरण करत आनंद जरेरो । तेरे जरोसें ही जीति नीवारी, आनंद मंगल तुमही खेररो ॥ इतनुं० ॥ ३ ॥ पूरण पुण्य उदय करी पामी, शासन तुमरो नाश अंधेरो । जयो जगदीश्वर वीर जिनेश्वर । तुं मुज ईश्वर हुं तुम चेरो ॥ इतनुं० ॥ ४ ॥ आतमराम आणंद रस पूरण,

मूरण करम कलंक ठगेरो । शासन तेरो जग जयवंतो, सेवक वंदित निशदिन तेरो ॥ इ-तनुं० ॥ ५ ॥

स्तवन सत्तरमुं ।

॥ राग भोपाली ताल जलद एक ताल ॥

नाचत सुर पठित छंद मंगल गुनगारी। नाचत ॥ आंचली ॥ सुर सुंदरी कर संकेत, पिकधुनी मील भ्रमरी देत, रमक ठमक मधुरी तान, घुंघरु धुनिकारी ॥ नाचत० ॥ १ ॥ जय जिनंद, शिशिर चंद, भवि चकोर मोद कंद, काम वाम भ्रमनिकंद, सेवक तम तारी ॥ नाचत० ॥ २ ॥ धूंधूं धप तार चंग, खुखुरू घुटट जलतरंग, वेणु वीणा तार रंग, जय जय अघटारी ॥ नाचत० ॥ ३ ॥ सिरि सिद्धारथ नृप नंद, वर्धमान जिन दिनंद, मध्यमा नगरी सुरींद, करे उछव मनहारी ॥ नाचत० ॥ ४ ॥ गौतम मुख मुनिवरिंद, तार भ्रम काट फंद, आतम आनंद चंद, जय जय शिव चारी ॥ नाचत० ॥ ५ ॥

स्तवन अढारमुं ।

॥ गीत की देशी ॥

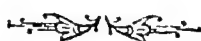
नवदधि पार उतारणी जिनवरकी वाणी । प्यारी हे अमृत रस केल । नीकी है जिनवर की वाणी । नरम मिथ्यात निवारियो ॥ जि० ॥ दीधो हे अनुनव रस मेल । प्यारी है जि० ॥ १ ॥ हम सरिखा अति दीन ने ॥ जि० ॥ दूखम हे अतिघोर अंधार ॥ प्या० जि० ॥ ज्ञान प्रदीप जगावीयो ॥ जि० ॥ पाम्या है अतिमारग सार ॥ प्या० ॥ जि० ॥ २ ॥ अंग उपांग स्वरूप सुं ॥ जि० ॥ पइन्ने हे ठ ठेद गरंथ ॥ प्या० । जि० ॥ चूर्णि नाष्य नियुक्ति-सुं ॥ जि० ॥ वृत्ति हे नीकी मोक्ष को पंथ ॥ प्या० । जि० ॥ ३ ॥ सदगुरुकी ए तालिका ॥ जि० ॥ जासु हे खुले ज्ञान नंडार ॥ प्या० ॥ जि० ॥ इन बिन सूत्र वखाणीयो ॥ जि० ॥ तस्कर हे तिण लोपि कार ॥ प्या० ॥ जि० ॥ ॥ ४ ॥ सोहम गणधर गुण निलो ॥ जि० ॥ कीधो हे जिन ज्ञान प्रकाश ॥ प्या० ॥ जि० ॥ तुऊ पाटोधर दीपता ॥ जि० ॥ टार्यो हे जिन

दुरनय पास ॥ प्या० ॥ जि०॥ ५ ॥ हम सरिखा अनाथने ॥ जि० ॥ फिरता हे वीत्यो काल अनंत ॥ प्या० ॥ जि० ॥ इन भव वीतक जे थया ॥ जि० ॥ तुं जाणे हे तौसु कौन कहंत ॥ प्या० । जि० ॥ ६ ॥ जिन बाणी विन कौन था ॥ जि०॥ मुझनै हे देता मारग सार ॥ प्या० ॥ जि० ॥ जयो जिन वाणी भारता ॥ जि० ॥ जार्यो हे मिथ्यामत भार ॥ प्या० । जि० ॥ ७ ॥ हुं अपराधी देवनो ॥ जि० ॥ करीये हे मुझने बगसीस ॥ प्या० ॥ जि० ॥ निंदक पार उतारणा ॥ जि० ॥ तुंही हे जग निर्मल ईस ॥ प्या० ॥ जि० ॥ ८ ॥ बालक मूर्ख आकरो ॥ जि० ॥ धीठो हे वलि अति अविनीत ॥ प्या० ॥ जि० ॥ तो पिण जन के पालिये ॥जि०॥ उत्तम हे जननी ए रीत॥ प्या० ॥ जि० ॥ ए ॥ ज्ञान हीन अविवेकीया ॥ जि० ॥ हठी हे निंदक गुण चोर ॥ प्या० ॥ जि० ॥ तो पिण मुझने तारीये ॥ जि० ॥ मेरी हो तोरो मोहनी दोर ॥ प्या० ॥ जि० ॥१०॥ त्रिशला नंदन वीरजी ॥ जि० ॥ तुं तो है आसा विसराम । प्या० ॥ जि० ॥ अजर अमर पद दीजिये ॥जि०॥ थाउं हे जिम आतमराम ॥ प्या० ॥ जि० ॥११॥

॥ अथ श्री हस्तिनापुर स्तवनम् ॥

॥ देशी, रास धारीकी ॥ कान्हा में नही रेहनारे, तुम चेरे संग चलूं ॥ यह चाल ॥

प्रभु अविचल ज्योति रे, निज गुण रंग रली ॥ टेक ॥ प्रभु त्रिभुवन चंदा रे, तामस दूर टली ॥ प्र० ॥ १ ॥ जग शांतिके दाता रे, अघ सब दूर दली ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभु दीन दयाला रे, अब मुझ आश फली ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रभु चार कल्यानक रे, विपदा दूर टली ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जिन गर्भ कल्यानक रे, जनम जिन दीक्षा थली ॥ प्र० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु जिनंदा रे, अर जिननाथ वली ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह तीरथ भूमि रे, पूरण पुण्ये मिली ॥ प्र० ॥ ७ ॥ हस्तिनापुर आया रे, दिल्लीसे संघ चली ॥ प्र० ॥ ८ ॥ प्रभु संमेतशिखरे रे, ज्योतिमें ज्योति मिली ॥ प्र० ॥ ॥ ९ ॥ अंक गुण निधि इंदु रे (१९३९), अमावस पोष फली ॥ प्र० ॥ १० ॥ प्रभु आतमानंदी रे, विकसित चंप कली ॥ प्र० ॥ ११ ॥



श्री राधनपुरे बिराजमान चउवीस जिन साधारण स्तवन ।

॥ राग ठुमरी ॥

जिनंदा तोरे चरण कमलकी रे । हुं नक्ति करुं मन रंगे, ज्युं कर्म सुन्नट सब नंगे, हुं बेसुं शिवपुर ढंगे ॥ जिनंदा० ॥ आदि जिन स्वामी रे, तुं अंतरजामी रे, प्रनु शांतिनाथ जिनचंदा, तुं अजर अमर सुखकंदा, तुं नान्निराय कुल नंदा ॥ जिनंदा० ॥ १ ॥ चिंतामणि नामेरे, बंछित पामे रे, जिन शांति शांति करतारा, पाम्यो नव जलधि पारा, तुं धर्मनाथ सुखकारा ॥ जिनंदा० ॥ २ ॥ शांति जिन तारो रे, बिरुद तीहारो रे, चिंतामणि जगमें जाचो, कल्याण पास जग साचो, तुम पास सामले राचो ॥ जिनंदा० ॥ ३ ॥ सहस्र फण सोहे रे, मोहन मन मोहे रे, गोमी जिन शरण तुमारी, तुं धर्मनाथ जयकारी, तुं अजित अचर सुखकारी ॥ जिनंदा० ॥ ४ ॥ कुंथु जिनराजारे, वासुपूज्य ताजा रे, वागे जग मंका तेरा, तुं महावीर गुरु मेरा, हुं बालक चेरा तेरा ॥ जिनंदा० ॥ ५ ॥ कुंथु जिनचंदा रे, विमल

सुख कंदा रे, शीतलकी हुं बलिहारी, नेमीश्वर राजुल तारी, श्रीमंदिर आनंदकारी ॥ जिनंदा० ॥ ६ ॥ वीरजिन दाता रे, करो मुज शाता रे, प्रजु तुं तारक मुज केरा, करुणानिधि स्वामी मेरा, हुं शासन मानुं तेरा ॥ जिनंदा० ॥ ७ ॥ शरणागत तोरी रे, नहीं अन्य गति मोरी रे, तुम नाम तणा आधारा, तुम सिमर सिमर सिरिकारा, तुम वीरहो डुखम आरा ॥ जिनंदा० ॥ ८ ॥ संघ मन हरना रे, अक्षय निधि जरना रे, नायक श्री मूल जिनंदा, राधणपुर नगर सुहंदा, सहु संघने मोद करंदा ॥ जिनंदा० ॥ ए ॥ राधणपुर वासो रे, मास चार रही खासो रे, सहु संघ मने आनंदी, जव ज्रांती सब ही नीकंदी, चउवीसें जिनवर वंदी । जिनंदा० ॥ १० ॥ अंबुःनिँधि वेँदा रे, अंकँ इँडु निखेदा रे, संवत आयो सुखकारी, द्वाविंशती मुनि मनोहारी, सहु निज आतम हितकारी ॥ जिनंदा० ॥ ११ ॥

॥ अथ तीर्थ वंदनम् ॥

बिहरमान जिनंद वंडुं उदित केवल जास्करं, असंख लोक निवास प्रजुना शाश्वता अघ ना-

स्करं ॥ अष्टापदे सम्मेत चंपा नेम गढ गिरि मंमना, श्री वीर पावा विमल गिरिवर केसरा दुख खंमना ॥ १ ॥ आबु तरंगा दरस चंगा शिव अनंगा कारणा, श्री अंतरिक्ष जिनंद पारस थंनणा दुख वारणा ॥ संखेसरा अलवेसरा जग पावना जीरावला, चिंतामणि फलवर्द्धि पारस मल्लि नवदधि नावला ॥ २ ॥ वरकाण राण नमोल नगरे वीर घाणे गोमीए, श्री नामुलाइसु वीर राता वंदीए नव तोमीए ॥ श्री पाली पाटण राजनगरे घनोघ मंमन पासजी, इम जेह थानक चैत्य जिनवर नविक पूरे आसजी ॥ ३ ॥ सहु साधु गणधर केवली फुन संघ नव जल तारणा, सुध ज्ञान दरसन चरण साचा महानंदे कारणा । यह तीर्थ वंदन नव निकंदन नविक शुध मन कीजीए, निज रूप धारो नरम फारो अनघ आतम लीजीए ॥ ४ ॥

॥ इति स्तवनानि समाप्तानि ॥



अथ

द्वादश भावना ।



तत्र प्रथम अनित्य भावना ।

योवन धन थीर नही रेहना रे ॥ आंचली ॥
प्रात समय जो नजरे आवे, मध्य दीने नहीं दीसे । जो मध्याने सो नहीं रात्रे, क्यों विरथा मन हींसे ॥ योवन० ॥ १ ॥ पवन झकोरे बादर बिनसे, त्युं शरीर तुम नासे । लच्छी जल तरंग-वत चपला, क्यों बांधे मन आसे ॥ योवन० ॥ ॥ २ ॥ वल्लभ संग सुपनसी माया, इनमें राग हि कैसा । छिनमें उडे अर्क तूल ज्युं, योवन जगमें ऐसा ॥ योवन० ॥ ३ ॥ चक्री हरि पुरंदर राजे, मद माते रस मोहे । कौन देशमें मरी पहुंते । तिनकी खबर न कोहे ॥ योवन० ॥ ४ ॥ जग मायामें नहीं लोभावे, आतमराम सयाने । अजर अमर तुं सदा नित्य हे, जिन धुनि यह सुनी काने ॥ योवन० ॥ ५ ॥



अथ दूसरी अशरण भावना।

॥ राग मराठी ॥

अपने पदको तज कर चेतन, परमें फसना
ना चाइये ॥ ए देशी ॥

निज स्वरूप जाने बिन चेतन, जगमें नहीं कोइ है सरना । क्यों भरम भूलाना, जान निज रूप आनंद रस घट भरना ॥ निज० ॥ १ ॥ इंद्र उपेंद्र आदि सब राने, बिना सरन यम मुख परना । अति रोग भराये, जीव की कौन करे जगमें करुणा ॥ निज० ॥ २ ॥ मात पिता स्वसु भ्रात पुत्रके, देखत ही यम ले चलना । मुख वाय रहेंगे, सरणा नहीं तिननें को करना ॥ निज० ॥ ३ ॥ मृतक देखी सोच करे मन, अपना सोच नहीं करना । दृढ मूरख तुं रे, करम की गतिसे सहु जगमें फीरना ॥ निज० ॥ ॥ ४ ॥ जगवन दुख दावानल दहके, हिरन पोतको को सरना । तिम सरण विना तुं, मोह से पाप पिंडकों क्यों भरना ॥ निज० ॥ ५ ॥ हरि विरंचि ईश नहीं त्राते, आपही तिनको क्यों मरना । जिन वचन हि साचे, जीवना जितना ही आयु धरना ॥ निज० ॥ ६ ॥ आत-

मराम तुं समज सयाने, ले जिनवर वचका सरना। ममता मत कीजे, नहीं तेरी मेरी में तें परना ॥ निज० ॥ ७ ॥

अथ तृतीय संसार भावना।

॥ राग सोरठ ॥

॥ कुबजाने जादु मारा, ए देशी ॥

उरझायो आतम ज्ञानी, संसार दुखांकी खानी ॥ उरझायो० ॥ आंचली ॥ वेद पाठी मरी पाणज होवे, स्वामी सेवक पामी । ब्रह्मा कीट द्विजवर रासभ, नृप वर नरक ही गामी ॥ उर० ॥ १ ॥ सुरवर खर खर जगपति होवे, रंक राज विसरामी । जग नाटकमें नटवत नाच्यो, कर नानाविध तानी ॥ उर० ॥ २ ॥ कौन गतिमें जीव न जावे, ठोरू नहीं कुण थानी । संसारी कर्म संगथी पूर्यो, कचवर कुटी जगनामी ॥ उर० ॥ ३ ॥ एक प्रदेश नहीं जग खाली, जनम मरण नहीं ठानी । पवन झकोरे पत्र गगन ज्युं, भ्रमत फिर जरू कामी ॥ उर० ॥ ४ ॥ सतचिद आनंद रूप संभारो, डारो कुमत कुरानी । जिनवर भाषित मग चले चेतन, तो तुम आतम-ज्ञानी ॥ उर० ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थ एकत्व जावना।

॥ राग वढंस ॥

तुम क्यों जूल परे ममतामें, या जगमें कहो कोन हे तेरा ॥ तुम० ॥ आंचली ॥ आया एक ही एक ही जावे, साथी नहीं जग सुपन वसेरो। एक ही सुख दुःख जोगवे प्राणी, संचित जो जन्मांतर केरो ॥ तुम० ॥ १ ॥ धन संच्यो करी पाप जयंकर, जोगते स्वजन आनंद जरेरो । आप मरी गयो नरकही थाने, सहे कलेश अनंत खरेरो ॥ तुम० ॥ २ ॥ जिस बनितासे मद नहि मातो, दिये आजरण हि वसन जलेरो। सो तनु सजी पर पुरुषके संगे, जोग करे मन हर्ष घनेरो ॥ तुम० ॥ ३ ॥ जीवित रूप विद्युत सम चंचल, स्नाज अनी जद बिंदु लगेरो। इनमें क्यों मुरझायो चेतन, सत चिद आनंद रूप अकेरो ॥ तुम० ॥ ४ ॥ एक ही आतमराम सुहंकर, सर्व जयंकर दूर टरेरो। सम्यग दरसन ज्ञान स्वरूपी, जेष संयोग हि बाह्य धरेरो ॥ तुम० ॥ ५ ॥



॥ अथ पंचमी अन्यत्व भावना ॥

॥ राग भैरवी ॥

ब्रह्मज्ञान रस रंगी रे चेतन ॥ ब्रह्म० ॥ आंचली ॥ तन धन स्वजन सहायक जे ते, इनसें अन्य निरंगी रे । जीवसें एही विलक्षण दीसे, अन्यपणा दृग संगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥ जो भवी देह बंधु धन जनसे, आतम भिन्नहि मंगी रे ॥ तिनकों सोग शंकुसें पीड़ा, व्यापे नहीं दुख भंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥ जैसे कुधातुसें कंचन बिगर्यो, दीसे स्वरूप विरंगी रे । गये कुधातु के निजगुण सोहे, चमके निजगुन चंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ ३ ॥ करम कुधातुसें चेतन बिगर्यो, मान सबहि एकंगीरे । सम्यग दरसन चरण तापसें, दाहे करम सरंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ ४ ॥ आतम भिन्न सदा जड़तासें, सत चिद रूप धरंगी रे । आनंद ब्रह्म सुहंकर सोहे, अजर अमर अनंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥५॥



अथ छठी अशुचि भावना ।

॥ राग सिंध काफी ॥

तनु शुची नहीं होवे काहेकुं भरम भुला-

नारे ॥ तनु० ॥ आंचली ॥ रस लोही पल मेद हारुसे, मज्जा रेत गुहाना रे। आंत मूत पित्त सिंभ ही कसमल, अति ही दुर्गंध भराना रे ॥ तनु० ॥ १ ॥ नवहि ज श्रोत झरे मलगंधि, रस कर्दम असुहाना रे। तनुमें शुचि संकल्प हि करना, एही ज नाम अज्ञाना रे ॥ तनु० ॥ २ ॥ नव वरननी मुख चंद्र ज्यू, निरखी मनमें अति हरषाना रे । रुधिर पूय मल मूत्र पेटमें, नस नस मेल भराना रे ॥ तनु० ॥ ३ ॥ रुधिर मंसकी कुच ग्रंथी है, मुखसे लाल बहाना रे । गूथ मूत्रके द्वार घनीले, तिनसे भोग कराना रे ॥ तनु० ॥ ४ ॥ अशुचितर खान देह शुचि नाही, जो सत स्नान कराना रे । आतम आनंद शुचितर सोहे, देह ममता तजराना रे ॥ तनु० ॥५॥



अथ सातमी आश्रव भावना ।

॥ राग ठुमरी भैरवी ॥

आश्रव अतिदुःख दाना रे चेतन, आश्रव० ॥ आंचली ॥ मन वच काया के व्यापारे, योग यही मुख माना रे । कर्म शुभाशुभ जीवकों

आवे, आश्रव जिनमत गाना रे ॥ आश्रव० ॥१॥ मैत्र्यादि भावना वासित मन, पुन्याश्रव सुखदाना रे। विषय कषाये पीडित चेतन, पापे पींड भराना रे ॥ आश्रव० ॥ २ ॥ जिन आगम अनुसारि वचने, पुन्यानुबंधी पुनाना रे। मिथ्यामत वचनें करी आवे, पापाश्रव दुःख थाना रे ॥ आश्रव० ॥ ३ ॥ गुप्त शरीरसे पुन्य सुहंकर, करे जगवासी सियानारे। हिंसक षट्कायाजंतु, जगमें पाप कराना रे ॥ आश्रव० ॥४॥ कषाय विषय परमादा, विरति रहित हि अज्ञाना रे। मिथ्या दरसनी आरत रौद्री, पाप कर सुखहाना रे ॥ आश्रव० ॥ ५ ॥ आतम सदा सुहंकर निर्मल, जिन वच अमृत पाना रे। करके जीव सदा निरंगी, पाम पद निरवाना रे ॥ आश्रव० ॥ ६ ॥

अथ आठमी संवर भावना।

॥ राग विहाग ॥

जिनंद वच संवर सुनरे सुज्ञानी ॥ आंचली ॥ सब आश्रवको आवत रोके, संवर जिन-

नारे ॥ तनु० ॥ आंचली ॥ रस लोही पल मेद हाडसे, मज्जा रेत गुहाना रे । आंत मूत पित्त सिंभ ही कसमल, अति ही दुर्गंध भराना रे ॥ तनु० ॥ १ ॥ नवहि ज श्रोत झरे मलगंधि, रस कर्दम असुहाना रे । तनुमें शुचि संकल्प हि करना, एही ज नाम अज्ञाना रे ॥ तनु० ॥ २ ॥ नव वरननी मुख चंद्र ज्यूं, निरखी मनमें अति हरषाना रे । रुधिर पूय मल मूत्र पेटमें, नस नस मेल भराना रे ॥ तनु० ॥ ३ ॥ रुधिर मंसकी कुच ग्रंथी है, मुखसे लाल बहाना रे । गूथ मूत्रके द्वार घनीले, तिनसे भोग कराना रे ॥ तनु० ॥ ४ ॥ अशुचितर खान देह शुचि नाही, जो सत स्नान कराना रे । आतम आनंद शुचितर सोहे, देह ममता तजराना रे ॥ तनु० ॥५॥



अथ सातमी आश्रव भावना ।

॥ राग ठुमरी भेरवी ॥

आश्रव अतिदुःख दाना रे चेतन, आश्रव० ॥ आंचली ॥ मन वच काया के व्यापारे, योग यही मुख माना रे । कर्म शुभाशुभ जीवकों

आवे, आश्रव जिनमत गाना रे ॥ आश्रव० ॥१॥ मैत्र्यादि भावना वासित मन, पुन्याश्रव सुख-दाना रे। विषय कषाये पीडित चेतन, पापे पींड भराना रे ॥ आश्रव० ॥ २ ॥ जिन आगम अनुसारि वचने, पुन्यानुबंधी पुनाना रे। मिथ्या-मत वचनें करी आवे, पापाश्रव दुःख थाना रे ॥ आश्रव० ॥ ३ ॥ गुप्त शरीरसे पुन्य सुहं-कर, करे जगवासी सियानारे। हिंसक षट्काया-जंतु, जगमें पाप कराना रे ॥ आश्रव० ॥४॥ कषाय विषय परमादा, विरति रहित हि अज्ञाना रे। मिथ्या दरसनी आरत रौद्री, पाप कर सुखहाना रे ॥ आश्रव० ॥ ५ ॥ आतम सदा सुहंकर निर्मल, जिन वच अमृत पाना रे। करके जीव सदा निरंगी, पाम पद निरवाना रे ॥ आश्रव० ॥ ६ ॥

अथ आठमी संवर भावना।

॥ राग बिहाग ॥

जिनंद वच संवर सुनरे सुज्ञानी ॥ आं-चली ॥ सब आश्रवको आवत रोके, संवर जिन-

वर बानी । सो भी दोय भेद से वरन्यो, द्रव्य भाव सुखदानी ॥ जिनंद० ॥ १ ॥ करम ग्रहण का छेद करे जो, संवर दरव विधानी । भव हेतु किरिया जो त्यागे, भाव संवर सुख खानी ॥ जिनंद० ॥ २ ॥ जिस जिस कारण सैंती रुंधे, आश्रव जल पथ पानी । ते ते उपाय निरोधके तांइ, जोडे पंडित ज्ञानी ॥ जिनंद० ॥ ३ ॥ खम मृदु सरल अनीहा सेती, क्रोध मान छल थानी । लोभ ए चारों क्रम सें रुन्धे, तो कहीए सुभ-ध्यानी ॥ जिनंद० ॥ ४ ॥ करे असंयम दृढता जिनकी, ते विषयों विष मानी । इन्द्रिय संयम पूरन सेवी, करे जर मूर से हानी ॥ जिनंद० ॥ ॥ ५ ॥ तीन गुप्तिसे योगको जीते, हरे परमाद कुरानी । अपरमादे पाप योगकुं, विरती से सुख जानी ॥ जिनंद० ॥ ६ ॥ सम्यग् दरससें मिथ्या जीती, आरत रौद्र हि धानी । थीर चित करीने जीत चिदानंद, आतमपद निर्वानी ॥ जिनंद० ॥ ७ ॥

अथ नवमी निर्जरा भावना ।

॥ राग खमाच ॥

॥ दुर्मति मारदे मेरे प्राणी दुरमति ए देशी ॥

चेतन निर्जरा भावना भावे रे ॥ चेतन० ॥ आंचली ॥ जग तरु बीज भूत करम जे । खेरु कर सुख पाये । सो निर्जरा दोय भेद सुनीजे । सकामाकाम बतावे रे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ संयमी को सकाम निर्जरा, इतरांको इतर कहावे । कर्म पापका फल जो भोगे, खय उपाय सुनावे रे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ मलयुत कनक तप्त वह्निसे, जैसे दोष जरावे । तप अग्नि सें कर्म तपाये, तेसें जीव सुभावे रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ खाना नहिं ऊनोदरि करनी, विरती संखेप गिनावे । रस त्यागे तनु कष्ट करे जो, इन्द्रिय विषय रुंधावे रे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ षट् भेदे यह बाह्य कह्यो तप, षट् विध अंतर गावे । प्रायश्चित्त विया-वच्च सुहंकर । विनय व्युत्सर्ग धरावे रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ शुभ ध्याने तपो अग्नि दीपे, बाहिर अंतर भावे । संयमी जन करे अदृष्ट निर्जरा,

दुर्जर क्रण खय जावे रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ बंधन गये तुंब ज्यूं जलमें, छिनकमें ऊर्ध्वहि आवे । आतम निर्मल सुध पद पामी, जनम मरण मिटावेरे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥

अथ दशमी धर्म भावना ।

॥ राग माढ ॥

चेतनजी थाने धर्मनी भावना दाखां जी महारा राज हो चेतन जी० ॥ आंचली ॥ धर्म जिनंद बताया जी महारा राजरे कांइ, जेहने आलंबी भवोदधिमें न डुबायाजी महारा राज ॥ चेतन० ॥ ॥ १ ॥ संयम सत्त्व सुहाया जी महारा राजरे कांइ, बूह्म अकिंचन तप शुचि सरल गिनायाजी महारा राज ॥ चेतन० ॥ २ ॥ खांति मार्दव मुक्तिजी महारा राजरे कांइ, दशविध धर्मो वीर जिनंद सुनाया जी महारा राज ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ नरक पडंता राखेजी महारा राजरे कांइ, तीर्थंकर पद धर्म थकी जग पायाजी हमारा राज ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ संकटमें सुख आपेजी महारा राजरे कांइ, आतमानंदी धर्म अति सुख दायाजी महारा राज ॥ चेतन० ॥५॥

॥ अथ एकादशमी लोकस्वरूप भावना।

॥ राग० जन्द काफी ॥

भवी लोक स्वरूप समररे सम० ॥ आंचली ॥
कटि धरि हाथ चरण विस्तारी । नर आकृति चित धररे। षट् द्रव्य पूरण लोक समरले, उपजत बिनसत थिररे ॥ भवी० ॥ १ ॥ त्रिभुवन व्यापक लोक विराजे, पृथ्वी सातसु धररे । घनोदधि घन तनु वात वलि कलशे। चार ओर रही थीररे ॥ भवी० ॥ २ ॥ वेत्रासन सम लोक अधो है, झल्लरी निभ मध्यवर रे । मुरजाकार ही ऊर्ध्वलोक है। भाषे जग जिनवर रे ॥ भवी० ॥ ३ ॥ रचना इसकी किन ही न कीनी, नहीं धार्यो किन कर रे ॥ स्वयं सिद्ध निराधार लोक ये, गगन रह्यो ही अचर रे ॥ भवी० ॥ ४ ॥ ईश्वर कृत्यही लोक जो माने, सो अज्ञान हीं वर रे ।आत्मानंदी जिनवर जप्पो, मान मिथ्या मत हररे ॥ भवी० ॥ ५ ॥

॥ अथ द्वादशमी बोधिदुर्लभ भावना ॥

॥ राग ठुमरी० ॥

अनंते कालसे बोधि दुर्लभ पानारी । सखी बोधि० । आंचली । अकाम निरजरा पुन्य-से प्रानी । थावरसें त्रस थानारी ॥ सखी० ॥ १ ॥ बि त्रि चतु पंच इन्द्री सुहंकर । क्रम सें तिरयग माना री ॥ सखी० ॥ २ ॥ नरभव आरज देश सुजाति । इन्द्रिय पटुतर गानारी ॥ सखी० ॥३॥ लंबी आयु कथक श्रवण गुन । श्रद्धा सुचितर गानारी ॥ सखी० ॥४॥ तत्त्व निश्चय बोधि रतन सुहंकर । शिव सुख की खानारी ॥ सखी० ॥५॥ दुर्लभ बोधि भावना भावें । तो तुं आतमराना री ॥ सखी० ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वर कृत द्वादश भावना समाप्त ॥



अथ पदो।

॥ राग–भैरवी ॥

मेरी क्याही बेदरदी रही ॥ मे ॥ तोरे नाथसे घर नावसाय ॥ मे ॥ १ ॥ में तो मूर हती न तो मैं रही। जग ग्राम कातो अब हो रही ॥ तो० ॥ २ ॥ हुं तो ढुंढ रही न तो यार मिला ॥ अब काल अनंतो ही रोय रही ॥ तो० ॥ ३ ॥ न तो मीत विवेक न धर्म गुनी। अब सीस धुनी हुं तो वेठ रही ॥ तो० ॥ ४ ॥ हुं तो नाथ ही नाथ पुकार रही। कुमता जर जारही जार रही ॥ तो० ॥ ५ ॥ तुं तो आप मिला मन रंग रला। अब आनंद रूप आराम लही ॥ तो० ॥ ६ ॥

पद बीजुं।

॥ राग–वसंत ॥

हमकु छांरू चले बन माधो, ए देशी।

तुं क्युं जोर जये शिव राधो। वाधा मोच करो मनमां रे ॥ तुं० ॥ आंकणी ॥ फूली वसंत कंत चित्त शांति, भ्रांति कुवास फूल मति दोरे। मनमोहन गुण केतकी फूली, समता रंग चर्यो

घर तोरे ॥ तुं० ॥ १ ॥ इग रोधन तस नइ घट, जरत नयो अघ घांस नलो रे । समता सीतलता मन माली, गुण स्थानक शुद्ध श्रेणि चलो रे ॥ तुं० ॥ २ ॥ पावस नूमि चेतनकी शुद्ध, ठरत नइ चित्त अंबु धर रे । वरसत जन वन शुद्ध नरीया, नरीय चैन वनबाग वर रे ॥ तु० ॥ कुमता ताप मीटी घट अंदर, मन बंदर सठ शांत नये रे । अनुनव शांतिकी बुंद परी घट, मुक्ताफल शुद्ध रूप थये रे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ आतमचंद आनंद नये तुम, जिनवर नाद अनंग सुएयो रे ॥ सगरे संग त्याग शिव नायक, क्षायक नाव सुनाव थुएयो रे ॥ तुं० ॥ ५ ॥



पद त्रीजुं ।

॥ राग वरवा ॥

ऐसे तो विषम बाजी । पियाको उन्माद जागी ॥ ऐसी आवे मन मेरेकी जाय अघ ध्वसरी ॥ ऐ० ॥ १ ॥ मोहको सिरोद सुन कूदत नइकारी । नादकेव जइ वावे तो हरन लागे हंसगहरी ॥ ऐ० ॥२॥ चितहूंकी सार गइ मारहूंने तार

दइस करहो हंस वंस निकस आइ नंसरी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ ऐसी आवे मन मेरे बदन वन ठेद नारुं। प्रगटे आनंद कंत जारी वाली संसरी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥



पद चोथुं।

॥ राग–वसंत ॥

॥ हमकुं ठांरु चले वन माधो, ए देशी ॥

अब क्युं पास परों मनहंसा, तुम चेरे जिननाथ खेरेरे । जार मार ममता दृढगंन, राग स्निग्ध अज्यंग करेरे ॥ अब० ॥ १ ॥ नव तरु रुार ताण विस्तरीया, मोह कर्म जरु मूल जर्योरे। क्रोध मान माया ममतारे, मतवारे चहुंकु न चर्योरे ॥ अब० ॥ २ ॥ पास परन वामारस राच्यो, खांच्यो कर्म गति चार पर्योरे ॥ राग द्वेष जिहां नये रखवारे, नव वन सघन जंजीर जर्योरे ॥ अब० ॥ ३ ॥ पूरण ब्रह्म जिनेंद्रकी वानी, करण रंधमें शब्द पर्योरे। अनुनव रस नरी ठीनकमें उड्यो, आतमराम आनंद नर्योरे ॥ अब० ॥ ४ ॥

पद पांचमुं ।

॥ राग माढ ॥

प्रीति लागी रे कुमतिशुं प्रीति ॥ ए आंचली ॥ ज्ञान दरस वरणी दोउंरे, इसके पूत कुरूप । ज्ञान दरस दोउं निज गुणोरे, ढाद कीने अनूप ॥ कुमति० ॥ १ ॥ महानंद गुण सोसियोरे । वेदनी दास करुर । कुमता तात भयंकरुरे । मोहे मोह गरुर ॥ कुमति० ॥ २ ॥ नास्यो मोह अनादिकोरे, चेतन आयोरे ठाम । हरि बंदन आयु नस्योरे । नाम चितारारे ताम ॥ कुमति० ॥ ३ ॥ कुंभ-कार गोतर गयोरे । विघ्नराज भसमंत । दर-सन चरण अमरणकोरे । रूप रहित विसंत ॥ कुमति० ॥ ४ ॥ अगुरु लघु गुण उल्लस्योरे, आतम शक्ति अनंत । सतचिद आनंद आदि लेरे, प्रगट्यो रूप महंत ॥ कुमति० ॥ ५ ॥

पद छठुं ।

॥ राग माढ ॥

प्रीति लागीरे सुमतिशुं प्रीति ॥ आंचली ॥ पीर मिटी अनादिकीरे । गयो अज्ञान कुरंग । त्रिषधर सरपणी पंचजेरे । निरविषरूप विरंग ॥

नगरे। मुजको राह बताजारे ॥ सामरे ॥ ४ ॥ मैं दासी प्रभु तुमरे चरनकी। आतम ध्यान लगाजारे ॥ सामरे ॥ ५ ॥

॥ आत्माने शिखामणानुं पद आठमुं ॥

॥ राग विहाग ॥

रे मन मूरख जनम गमायो । निज गुन त्याग विषयन रस लुधो। नेम शरण नहीं आयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ यह संसार सुहा सावरजो। संबल देख लुभायो। चाखन लाग्यो रुइसी उरु गइ। हाथ कछुय न आयो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ यह संसार सुपनसी माया। मुरख देख लोभायो। उरु गइ निंद खुली जब अखीयां। आगे कछुय न पायो॥ रे मन० ॥ ३ ॥ पर गुन तजकर निज गुन राचो। पुन्य उदय तुम आयो। एक अनादि चिन्मय मूरति। सुमति संग सुहायो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ परगुन बकरीके संग चरतो । हुंरु नाम धरायो। जिनवर सिंघकी नाद सुन्यो जब। आतम सिंघ सुहायो ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

पद नवमुं।

॥ राग षट् ॥

समज समज वश मन इंद्री, पर गुन संगी न होरे सयाना। समज०॥ आंचली॥ इनहीके वश सुद्ध बुद्ध नासी। महानंद रूप जुलाना॥ सांग धार जग नट वत नाच्यो। माच्यो पर गुन ताना॥ वश कर०॥ १॥ चार कषायां इन संग चाले। चंचल मन हि जराना। मोह मिथ्या मद मदनहियाठे। साथे हि मूर अज्ञाना॥ वश कर०॥ २॥ तुं चाहे संयम रस राचुं। धरुं शिर वीरनी आना। उलट उलट्ये करे तुज मनकुं। नासे मनोरथ माना॥ वश कर०॥ ३॥ भ्रामक मन तनकों उकसावे। फारे जरमकी खाना। मृग तृसना वत दोरी फिरत हे। करी कल्पना नाना॥ वश कर०॥ ४॥ आतमराम तुं समज सयाने। कर इंद्रिय वसदाना॥ पीके आनंद रस मगन रहोरे। नीको मील्यो अब टाना॥ ॥ वश कर०॥ ५॥

आत्मोपदेश पद दशमुं ।

॥ राग गुजरी ॥

तें तेरा रूप न पायारे अज्ञानी, तें तेरा० ॥ आंचली ॥ देखी रे सुंदरी परकी विभूति । तुं मनमें ललचाया रे । अज्ञानी० ॥ १ ॥ एक ही ब्रह्म रटि रटनारे । पर वश रूप भूलाया रे ॥ अज्ञानी० ॥ २ ॥ माया प्रपंचहि जगतकों मानी । फिर तिनमेंहि भूलायारे । अज्ञानी० ॥ ३ ॥ सुकवत पाठ पढी ग्रंथनको । मिथ्या मत मुरझायारे ॥ अज्ञानी० ॥ ४ ॥ जैसे करछी फिर व्यंजनमें । स्वाद कछुय न पायारे । अज्ञानी० ॥ ५ ॥ परगुन संगी रमणी रस राच्यो । आछो अद्वैत सुनायारे ॥ अज्ञानी० ॥ ६ ॥ आतमघाती भाव हिंसक तुं । जगमें महंत कहायारे ॥ अज्ञानी० ॥ ७ ॥

आत्मोपदेश पद अग्यारमुं ।

॥ राग गुजरी ॥

तें तेरा रूपकुं पायारे सुज्ञानी, तें तेरा० ॥ आंचली ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म रस भीनो । मिथ्या मत छिटकायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ १ ॥ धार

महाव्रत सम रस लीनो । हुलाते मुक्ति सुनाया
रे ॥ सुज्ञानी० ॥ २ ॥ इंद्रिय मन चंचल वश
कीने । जायो मदन कुरायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ३ ॥
स्याद्वाद अमृत रस पीनो । जूठे नहीं सुलायारे
॥ सुज्ञानी० ॥ ४ ॥ निश्चय व्यवहार पंथ चा-
ल्यो । दुर्नय पंथ मिटायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ५ ॥
अंतर निश्चय बाहि व्यवहारे । वीर जिनंद सुना-
यारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ६ ॥ आत्मानंदी अजर अमर
तुं । सतचिद आनंद रूपारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ७ ॥

॥ इति [illegible]
[illegible]

॥ समाप्तः श्रीविजयानन्दसूरि [illegible] नवमो विश्रामः ॥

॥ विभाग दूसरा ॥

श्रीमद् उपाध्यायजी महाराज श्रीवीर-विजयजी महाराज विरचित स्तवनावली ।

॥ श्रीआदिजिन स्तवन ।

॥ राग जेजेवंती ॥

आदि मंगल करुं, आदि जिन ध्यान धरुं, फेर नही पास परुं, भव वन जालमें। लागी तोरी माया जोर, देखत हुं गोर गोर, दरिसण डुरलभ लीयो बहु कालमें ॥ आ० ॥ १ ॥ माता मरु-देवा नंद, नाभी राय कुल चंद, ऋषभ जिनंद प्रभु, आदि को करण है । ठोमी सब राज रीद्धि, संजमसे प्रीति किधी । जगतकी नीति सब रीति बतलाइ है ॥ आ० ॥ २॥ डुरधर तप करी, अष्टापदोपरि चमी, अणशण करी वरी, शिव पटराणी है । ऐसी गति तिहारी देव, तुही जाणे नित्यमेव, अकल अलख तेरो अगम स्वरूप है ॥ आ० ॥ ३ ॥ अहनिश तेरे विच, कीये जिने समचित्त, भयि तिने नीरभीक,

सुगति सोभागी है। भक्तकी सुणी राव, चित्तमें किजे ठराव, आतम आनंद वीरविजय मांगत है ॥ आ० ॥ ४ ॥



॥ श्रीअजित जिन स्तवन ॥

॥ राग भोपाल, ताल संगीत ॥

ध्याउं जिन अजित देव, भवी जन हित-कारी ॥ आंकणी ॥ तुम प्रभु जित राग द्वेष । कर दिये सब कर्म खेद। थीर चित्त करुं तुमरी सेव । जिम थाउं भवपारी ॥ ध्या० ॥ १ ॥ तुम बिन नही ज्ञान ज्ञेय, तुम बिन नहीं ध्यान ध्येय, तुम बिना करुं किनकी सेव, अंतर गत धारी ॥ ध्या० ॥ २ ॥ अब चित्त धरी करी विचार, खट पट सब डुर जार, झट पट अब मुजको तार, आनंद सुखकारी ॥ ध्याउं० ॥ ३ ॥ प्रभु जई कीयो मुक्ति वास, सेवककुं एही आश, आतम आनंद कर विलास, वीर विजयकुं भारी ॥ ध्या० ॥ ४ ॥

श्रीसंभव जिन स्तवन ।

राग महावीर चरणमें जाय, ए देशी ॥

प्रभु संभव जिन सुखदाई । चित्तमें लागी रहो ॥ प्र० ॥ चि० ॥ आंकणी ॥ दुःख संभवमें दूर कीयो है । सुख संभव थयो आज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ एह संसार असार सार है । तुम शरणा महाराज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ मोह सेन सब चुर लीयो है । शिवपुर केरो राज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ दीन हिन दुखियो मुज देखी । सारो सेवकको काज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ ॥ ४ ॥ मोह द्रोह सब नाश करीने । राखो सेवककी लाज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो । वीर विजयको आज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥



श्रीअभिनंदन जिन स्तवन ।

॥ राग ठुमरीका भेद ॥

अभिनंदन स्वामी हमारा । प्रभु भव दुख भंजन हारा । ए दुनियां दुखकी धारा । प्रभु इनसे करो निस्तारा ॥ अ० ॥ १ ॥ हुं कुमता

जाने । रोग निकंदन कामी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ॥ ४ ॥ जग चिंतामणि सुरतरु सरिखो । नीरखी गद सब वामी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ तारण तरण छे बिरुद तुमारो । भव भय भंजनहारी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ आतम आनंद रसके दाता । वीरविजय हितकारी ॥ मे० ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन ।

॥ राग रेखता ॥

॥ खलक एक रैनका सुपना, ए देशी ॥

पद्मप्रभु प्राणसे प्यारा । छोडावो कर्मनी धारा । करम फंद तोडवा धोरी । प्रभुजीसे अर्ज हे मोरी ॥ प० ॥ १ ॥ लघुवय एक थे जीया । मुक्तिमें वास तुम कीया ॥ न जाणी पीर तें मोरी । प्रभु अब खेंच ले दोरी ॥ प० ॥ २ ॥ विषय सुख मानी मो मनमें । गये सब काल गफलतमें ॥ नारक दुख वेदना भारी । नीकलवा ना रही बारी ॥ प० ॥ ३ ॥ पर वश दीनता कीनी । पापकी पोट शिर लीनी ॥ भक्ति नहीं जाणी तुम केरी । रह्यो निशदिन दुःख घेरी ॥ प० ॥ ४ ॥ इनविध वीनती तोरी । करुं में दोय

कर जोमी ॥ आतम आनंद मुज दीजो । वीरनुं काज सब कीजो ॥ प० ॥ ५ ॥

श्रीसुपासजिन स्तवन ।

॥ राग सामेरी ठुमरी का भेद ॥

पूजो रे माई श्रीसुपास जिणंदा । पूजो रे ॥ आंकणी ॥ नवण विलेपन कुसुम धुपथी, दीप धरो मन रंगे ॥ पू० ॥ १ ॥ अक्षत फल नैवेद्य धन्याथी, दुष्ट करम निकंदे ॥ पू० ॥ २ ॥ विधि-सुं अष्टप्रकारी पूजन, करतां नवदुख नंगे ॥ पू० ॥ ३ ॥ नाटक तान मानसें करतां, तीर्थंकर पद बंधे ॥ पू० ॥ ४ ॥ जिन पूजा ए सार जगतमें, जाणी करवा उमंगे ॥ पू० ॥ ५ ॥ वीरविजय कहे इन पुरुषकुं, अविचल सुखमां संगे ॥ पू० ॥ ६ ॥

श्रीचंद्रप्रज्ञजिन स्तवन ।

॥ राग माढ ॥

॥ जलानी देशी ॥

जीया रे चंद्रप्रज्ञुजिनी मुरती मोहन गारी रे । जयकारी महाराज चंद्रप्रज्ञुजिनी मुरती

मोहनगारी रे दयाल । आंकणी ॥ जीयारे चंद वदन प्रभु मुखकी शोभा सारी रे ॥ जय० ॥ चं० ॥ २ ॥ जीयारे शम रस भरियां नेत्र युगलकी जोमी रे ॥ जय० ॥ स० ॥ ३ ॥ जीयारे प्रभुपद लीनो कामनीको संग बोमी रे ॥ जय० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जीयारे अब में प्रभुजीसे अरज करुं कर जोमी रे ॥ जय० ॥ अ० ॥ ५ ॥ जीयारे चंचल चितकुं कीण विध राखुं काली रे ॥ जय० ॥ चं० ॥ ६ ॥ जीयारे फिर फिर बांधे पाप करमकी क्यारी रे ॥ जय० ॥ फिर० ॥ ७ ॥ जीयारे नेक नजर करी नाथ निहारो धारी रे ॥ जय० ॥ ने० ॥ ८ ॥ जीयारे तुम चरणांकी सेवा द्यो मुज प्यारी रे ॥ जय० ॥ तु० ॥ ए ॥ जियारे जिम मुज मनकुं अंतर घटमें आवेरे ॥ जय० ॥ जिम० ॥ १० ॥ जियारे आनंद मंगल वीरविजयकुं थावेरे ॥ जय० ॥ आ० ॥ ११ ॥



श्रीसुविधिजिन स्तवन ।

॥ राग ध्रुपद ॥

आइ इंद्र नार कर कर शृंगार, ए देशी ।

श्रीसुविधिनाथ, प्रभु मोक्ष साथ, में भयो

अनाथ, मुज पकरु हाथ, हुं पतित नाथ, धर धर कर दीजो ॥ श्री० ॥ १ ॥ शिर मोह राट, तिन जगमें हाक, सब जग विख्यात, जे न धरे धाक, कर दुःखनों दाट, जग वश कर लीनो ॥ श्री० ॥ २ ॥ एक अजब बात, इन मोहराट, कीये तुमने घात, मुख मारी लात, गई इनकी लाज, थर थर कर दीनो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ घट अंतर बात, कुण जाणे नात, मुजे मोहराट, दियो दुःख अगाध, कीयो बहु उचाट, दुरगति दुख दीनो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अब मेरी लाज, प्रभु तेरे हाथ, सब दुःख निरास, करो सुविधिनाथ, आतमके दास, वीर विजे एम कह्यो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

श्रीशीतलजिन स्तवन ।

॥ राग श्री ॥

शीतल जिनपति पूर्णानंद ॥ शी० ॥ आंकणी ॥ चौमुख समोवसरणमें सोहत, निरखत भविजन नयनानंद ॥ शी० ॥ १ ॥ बत्तिस विध नाटककी रचना, जोके शचीपति बहु सुखकंद ॥

शी० ॥ २ ॥ देवकुमार कुमारिका वीरची, मुख-थी थेइ थेइकार करंद ॥ शी० ॥ ३ ॥ धप मप धुंधुं मादल बाजें, वेणु वीणा अति झणकंत ॥ शी० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग ढक भेरीने फेरी, माधुरी धुनी सुनाद करंद ॥ शी० ॥ ५ ॥ कोमल करयुग तालिका लेती, चूडीनो खलकार करंत ॥ शी० ॥ ६ ॥ प्रभु गुण गावती अतिमन रंगे, अपने जनमके लाव लहंत ॥ शी० ॥ ७ ॥ देखण इसविध नाटक रचना, वीरविजय मन चाह करंद ॥ शी० ॥ ८ ॥



श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ।

॥ राग भैरवी ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी, दील विसरामी मेरोरे ॥ दी० ॥ आंकणी ॥ अधम उधारण दुःख निवारण, तारण तीन जग केरोरे । चंदवदन तुम दरिसण पामी, भाग्यो भवको फेरोरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ चंद चकोर मोर घन चाहत, पदमणी चाहत प्यारोरे ॥ युं चाहत प्रभु मुज मन भमरो, चरण कमल दुग तेरोरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ काल

अनंते दरिसण पायो, प्राणनाथ प्रभु तेरो रे ॥ कर्म कलंक सब दूर निवारो, ज्युं सुधरे भव मेरो रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दरिसण करी परसन मन मेरो, में हुं सेवक तेरो रे ॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो, वीर विजयने घनेरो रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥



श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन ।

॥ लगियां दिल नेमीके लार, ए देशी ॥

में छोडी औरकी आश चाहुं तुम सेवा महाराज ॥ आंकणी ॥ वासुपूज्य पंचमी गति गामी, और देवनमें हे बहु खामी, तुमे तोडी मोहकी पास ॥ चा० ॥ मे० ॥ १ ॥ धनुष तीर गदा चक्रना धारी, कामिनीने संग काम विकारी । ते देवने नहीं कांइ लाज ॥ चा० ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ जप माला गले रुंडनी माला, जोग लेवा अति हे विकराला । तुम छोडो ते देवनो ख्याल ॥ चा० ॥ मे० ॥ ३ ॥ जोग विकार तें सघला वामी, तुम भये वासुपूज्य जगस्वामी, तुं देवनो देव कहेवाय ॥ चा० ॥ मे० ॥ ४ ॥ वासुपूज्य सम देव न दुजो, सुरतरु छोडी बावल मत

पूजो । जेथी मन वंछित फल थाय ॥ चा० ॥ मे० ॥ ५ ॥ आतम आनंद दीजो त्नोरी, इनमें शोत्ना हे प्रत्नु तोरी । तुं वीरविजयने तार ॥ चा० ॥ ॥ मे० ॥ ६ ॥



श्रीविमल जिन स्तवन ।

॥ राग केरबो ॥

विमल सुहंकर मुजमन वसीया ॥ मु० ॥ आंकणी ॥ अष्ट करम मल दूर करीने । सत-चित आनंद रूप फरसीया ॥ वि० ॥ १ ॥ अंत-रंग करुणा करी स्वामी । देशना अमृत मेघ वरसीया ॥ वि० ॥ २ ॥ जम चेतनको संग अ-नादि । एक पलकमें उषार धरसीया ॥वि०॥३॥ वपु संग सब दूर होवाथी । अनुत्नव आनंद रसमें हरसीया ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रत्नुकी वाणी अमीय समाणी । पान करी परमानंद वरिया ॥ वि० ॥ ॥ ५ ॥ जब तुम वाणी करणे धारी । वीरविज-यकुं आनंद दरसीया ॥ वि० ॥ ६ ॥



श्रीअनंत जिन स्तवन ।

॥ राग वरवा पीलु ॥

अनंत जिणंद अनंत बलधारी । सब जी-
वनकुं जये हितकारी ॥ मोह अज्ञान घन तिमिर
अंधेरा । ज्ञान अनंतसे कीयारे उजेरा ॥ अ०
॥ १ ॥ जव जव जमवा जावठ जांगे । अनंत जि-
नंदसुं प्रीत जो मांमे ॥ जब लग ज्ञान दशा नहीं
जागी । तब लग पुःख अनंतको जागी ॥ अ० ॥
॥ २ ॥ जनम मरणकी आदि न पाई । इनमें
कोई न जयेरे सहाई ॥ जब प्रज्जु तुमरो दरिसण
पायो । जनम सफल सब लेखे आयो ॥ अ० ॥
॥ ३ ॥ तारो मुजको अनंत जिन स्वामी । नहीं
तो लागशे तुमने रे खामी ॥ आतम आनंद
दिजो जोरी । वीरविजय मागे कर जोमी ॥
अ० ॥ ४ ॥

श्रीधर्मनाथ स्तवन ।

॥ राग काफी ॥

धर्म जिनंदसुं प्रीत लागी मुनेरे धर्म जिणंद-
सुं प्रीत ॥ आंकणी ॥ प्रीत पुराणी न तोमो जिन
जी । ए सज्जनकी न रीत ॥ लागी० ॥ १ ॥

दान शील तप जावना चौविध । धर्मकी थापना कीध ॥ लागी० ॥ २ ॥ दश द्वादश विध साधु श्राद्धके । देशना धर्मकी दीध ॥ लागी० ॥ ३ ॥ जगत जंतु उद्धारण खातर । मारग कीया रे प्रसिद्ध ॥ लागी० ॥ ४ ॥ धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाशी । जगमें बहु जश लीध ॥ लागी० ॥ ५ ॥ वीरविजय आतम पद लेवा । धर्म सुण्यानी रे प्रीत ॥ लागी० ॥ ६ ॥

श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ।

॥ राग देश सोरठ ॥

प्रजु शांति जिनंद सुखकारी, घट अंतर करुणाधारी ॥ प्रजु० ॥ आंकणी ॥ विश्वसेन अचिराजीको नंदन, कर्म कलंक निवारी । अलख अगोचर अकल अमर तुं, मृगलंछन पदधारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ कंचन वरण शोजा तनु सुंदर, मूरती मोहन गारी । पंचमो चक्री सोलमो जिनवर, रोग शोग जय वारी ॥ प्रजु० ॥ २ ॥ पारापत प्रजु शरण ग्रहीने, अजय दान लीयो जारी । हम प्रजु शांति जिनेश्वर नामे,

लेशुं शिव पटराणी ॥ प्रनु० ॥ ३ ॥ शांति जिनेश्वर साहिब मेरा, शरण लीया में तेरा । कृपा करी मुज टालो साहिब, जनम मरणना फेरा ॥ ॥ प्रनु० ॥ ४ ॥ तन मन थीर करे तुम ध्याने, अंतर मेल ते वामे । वीरविजय कहे तुम सेवनथी, आतम आनंद पामे ॥ प्रनु० ॥ ५ ॥

श्रीकुंथु जिन स्तवन ।

॥ राग लावणी ॥

कुंथु जिनेश्वर तुं परमेश्वर, तेरी अजब गति कहिये । कुंथु कुंजरथी धारके करुणा जिन पदवी लहिये ॥ कुं० ॥ लख चौरासी जीव जोनीमें, हमको रखना ना चहये । ए दिलमें धारी तारके सरणा जिनवरका दहये ॥ कुं० ॥ २ ॥ शांग धारक त्रिनुवन नाचो, नरग निगोदे दुःख सहिये । ए दिलकी वातां सुखसे तुम विन किस आगे कहिये ॥ कुं० ॥ ३ ॥ प्रनु मुज तारो पार उतारो, गुण अवगुण तो ना लहिये । ए धरम काममें नाथकुं ढीलको करना ना चहये ॥ कुं० ॥ वीरविजयकी एही अरज है, आतम

आनंद रस दइये । ए अरज सुणीने नाथको नेक नजर करना चइये ॥ कुं० ॥ ५ ॥

श्रीअर जिन स्तवन ।

॥ चिंतामणि पास प्रभु अर्ज है सुनो तो सही, ए देशी ॥

अर जिन देव विना औरकुं मानुं तो नहीं तुम बिन नाथ डुजो देव में चाहुं तो नहीं ॥ अर० ॥ आंकणी ॥ काम क्रोध मद मोह द्रोहे करी जरियल हरिहर देवने मानुंतो नहीं ॥ अर० ॥ २ ॥ मनबंछित चिंतामणि पामीने काच शकल हवे हाथमां झालुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ३ ॥ गले मोतियनकी माला में पेहेरीने और माला काठ की हृदयमें धारुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ४ ॥ खीर समुद्रकी लहेर हुं छोडीने छिल्लर जलनी में चाहना करुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ५ ॥ शांत स्वरूप प्रभु मूरति देखीने तन मन थीर करी आतमा ठारुं तो सही ॥ अर० ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे अर जिन देव विना और देवनकीमें वार्त्ता मानुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ७ ॥

श्रीमल्लि जिन स्तवन ।

॥ राग ठुमरी दक्षणी ॥

आज जिनंदजीका दीठा में तो मुखड़ां, मल्लि जिनंद प्रभु हम पर तुठड़ां ॥ आ० ॥ १ ॥ चउ गति फिरत में पायो बहु दुखड़ां, तुम प्रभु चरण ग्रहुं तो थाय सुखड़ां ॥ आ० ॥ २ ॥ तुछ जे विषय सुख लागे मुने मीठडां, नरग तिर्यंग-मांही तेना फल दीठड़ां ॥ आ० ॥ ३ ॥ ताहारे जरोसें प्रभु लाग्युं मारुं मनडुं, कृपा करी तारवाने करो एक तनकुं ॥ आ० ॥ ४ ॥ आनंद विजयनो सेवक मागे एटलुं, वारवार प्रभुजीने कहुं हवे केटलुं ॥ आ० ॥ ५ ॥

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

॥ रास धारी की देशी ॥

जिनंदजी एह संसारथी तार । मुनिसुव्रत जिनराज आज मोहे एह संसारथी तार ॥ आं-कणी ॥ पद्मावतीजिको नंदन निरखी, हरषित तन मन थाय ॥ जि० ॥ कछप लंछन प्रभु पद धारे, शामल वरण सोहाय ॥ शा० ॥ मु० ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अवसर देखी प्रतिबोधनकुं आय ॥

जि० ॥ राज काज सब छोरु दइ प्रभु, संजमशुं चित्त लाय ॥ सं० ॥ मु० ॥ २ ॥ तप जप संजम ध्यानानलथी, कर्म इंधन जल जाय ॥ जि० ॥ लोकालोक प्रकाशक अद्भुत, केवल ज्ञान तुं पाय ॥ के० ॥ मु० ॥ ३ ॥ ज्ञानमें भाली करुणा धारी, जीव दया चित्त लाय । मित्र अश्व उपगार करणकुं, भरुअच्छ नगरमें आय ॥ भ० ॥ मु० ॥ ४ ॥ अश्व उगारी बहु जन तारी, अजर अमर पद पाय ॥ वीर विजय कहे मेहेर करोतो, हमने ते सुख थाय ॥ ह० ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ श्रीनमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ देशी वधाइनी ॥

आज वधाइ वाजेछे नगर मथुरांमांही विजय घर ॥ आज वधाइ० ॥ आंकणी ॥ विप्रा राणीये बेटो जायो, शुभ मुहूर्त्त शुभ वार । सोहम सुरपति चित्त धरी आवे, विजयराय दरबार ॥ वधाइ० ॥ १ ॥ मात नमी करी पंच रूप धरी, कर कमले प्रभु लीध । चौसठ सुरपति सुरगिरि रंगे, जन्म महोच्छव कीध ॥ वधाइ० ॥ २ ॥ विधि पूजन करी अष्ट मंगल धरी, गीत गान बहु कीध ।

सोना रूपाके फुले वधाइ, जनमको लाहो लीध॥ वधाइ० ॥ ३ ॥ जन्म महोच्छव छाछ करीने, जननी पासे लाय । सुरपति सघला महोच्छव करवा, द्वीप नंदीसर जाय ॥ वधाइ० ॥ ४ ॥ प्रात समय जये अति आनंदसे, विजयराय दरबार । धवल मंगल सब गीतनादसें, पुत्र वधाइ थाय ॥ वधाइ० ॥ ५ ॥ सुतक कुल मरजाद करीने, जोजन बहुविध कीध । वीर विजय कहे नात जमावी, नमिकुमार नाम दीध ॥ वधाइ० ॥ ६ ॥

॥ श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग ठुमरी पंजावी ॥

मेरे प्रभुसें एही अरज हे नेक नजर करो दया करी ॥ मे० ॥ आंकणी ॥ समुद्र विजय शिवादेवीना जाया । छपन दिगकुमरी हुलराया। अनुक्रमें प्रभु जोवन पाया । परणि नहीं एक नार, थवा अनगार के तृष्णा दूर करी ॥ मेरे० ॥ १ ॥ तुमे तो सघली माया तोडी । राजेमती स्त्रीने छोडी । सहसावनपे रथको जोडी । गये प्रभु गिरनार, लिये व्रत चार के झगडा दूर करी ॥मेरे० ॥२॥ तप जप संजम कीरिया धारी । प्रभुजी वसीया

गढ गिरनारी। नेम प्रभुकी हुं बलिहारी। पामी केवलज्ञान, थया शिवराण के अघ सब दूर करी॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तुमे तो हो प्रभु साहिब मेरा। हम तो है प्रभु सेवक तेरा। अपने घाले तुमसें घेरा। मुजे उतारो पार, मेरा सरदार के जेम दुख जाय टरी ॥ मेरे० ॥४॥ श्याम वरण तनुं शोभा सारी। मुख मटकालुं छबी हे न्यारी। नेम प्रभुकी मुरती प्यारी। वीरविजयनी बात, सुणो एक नाथ के भ-वोभव तुंही धणी ॥ मेरे० ॥ ५ ॥



॥ श्रीपार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ राग पंजाबी टपो ॥

मोरी बइयां तो पकरु सुखकारी स्वाम तोरुं पार्श्वनाथ परतक्ष नाम ॥ मोरी० ॥ आंकणी ॥ अश्वसेन वामाजीको नंदन वणारसी नगरीमें जनम ठाम ॥ मोरी० ॥ १ ॥ बालपणमें अद्भुत ज्ञानी जीवदयाका हो करुणा धाम ॥ मोरी० ॥ २ ॥ कष्ट करंतो कमठ समीपे आये प्रभु तुमे धारी हाम ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ काष्ठमें ज्वलतो फणी नि-काली मंत्रसें दिया प्रभु स्वर्ग धाम ॥ मोरी० ॥ ४ ॥ अवसरे दीक्षा तप जप साधी प्रभुजी लीयो तुमे

मोक्ष ठाम ॥ मोरी० ॥ ५ ॥ वीरविजयकी एही अरज है, हमको हे प्रभु एही काम ॥ मोरी० ॥६॥



॥ श्रीवीर जिन स्तवन ॥

॥ राग धन्यासरी ॥

वीरहसें भयोरे उदासी । वीर जिन वीरह सें भयोरे उदासी ॥ टेक ॥ दुषम कालमें दुखियो ठेमी । तुम भये शिवपुर वासीरे ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु दरिसण परतक्ष न दीठुं । ईणशुं भयोरे नीराशीरे ॥ वी० ॥२॥ करमराय सुभटें मुज घेर्यो । महारी कर सब हांसीरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ तुम विना एकाकी मुज देखी । मारी गले मोह फांसीरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ प्रभु विना को न करे मुज करुणा । देखो दिलमें विमासीरे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ पीण तुज आगम ने तुज मुरति । एही शरण मुज थासीरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ एही भरोंसो मुज मन मोटो । भांगी भवकी उदासीरे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ वीरविजय कहे वीर प्रभुकी । मुरती शरणज थासीरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥



॥ अथ कलश ॥

॥ राग रेखता ॥

चौवीस जिनराज में गाया, परम आनंद सुख पाया । प्रभु गुण पार ना पावे, जो सुरगुरु वर्णवा आवे ॥ चौवी० ॥ १ ॥ अलपसी बुद्धि हे मोरी, करी पिण वर्णना तोरी । प्रभु तुम मानजो साची, न थाये जगतमें हांसी ॥ चौवी० ॥ २ ॥ मेरी अब लाज तुम हाथे, बांहे ग्रही लिजियें साथे । कहो प्रभु जोर क्या तुमने, जरा उद्धारतां हमने ॥ चौवी० ॥ ३ ॥ प्रभु चौवीस जगस्वामी, पुरवले पुन्यथी पामी । हरो सब दुखनो घेरो, नसे जरा मर्णनो फेरो ॥ चौवी० ॥ ४ ॥ वेद युग अंक इंदु वर्षे, आषाढे मास शुक्ल पक्षे । तिथौ भली पूर्णिमा पूरी । भयो सोमवार सुख भूरी ॥ चौवी० ॥ ५ ॥ विजे आनंद गुरु पायो, बहु मन वीर हरषायो । भृगुकछ पुर चौमासी, रही करी बिनती साची ॥ चौ० ॥ ६ ॥



॥ अथ परचुरण स्तवनानि ॥

श्रीभावनगर मंमण श्रीचंद्र-प्रभ जिन स्तवन ।

॥ राग इंद्र सभा दादरो ॥

चंद्रवदन शुभ चंद्र प्रभु ताहरा । देखी दिल शांत मन चकोर रीजे माहरा ॥ १ ॥ नयन युगल भये शांत रस ताहरा । प्रभु गुण कमल भमर मन माहरा ॥ २ ॥ प्रभु तोही ज्ञान सोही ध्यान सर ताहरा, जहां मनहंस खेले रातदीन माहरा ॥ ३ ॥ प्रभु करुणा दृग् हमसे भई ताहरी । तव मद मोह किसी निंद खुली माहरी ॥ ४ ॥ अति उत्कंठसें में दर्श चाह ताहरा । करमके फंदेसें जो भाग्य खुले माहरा ॥ ५ ॥ भावपुरे वास भया खास प्रभु ताहरा । सिद्ध हुवा काज वीर विजय कहे माहरा ॥



॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ राग दादरो ॥

चितहर मारा शंखेश्वर प्यारारे ॥ चि० ॥ आंकणी ॥ प्रभु मोरी विनती दिलमें धारोरे अ-

रज शीकारोरे भ्रांति निवारोरे ॥ शं० ॥ चि० ॥ १ ॥ वेरण कुमति हुं भरमायोरे करम वश आयोरे भवे भटकायोरे ॥ शं० ॥ चि० ॥ २ ॥ पुरव पुन्य उदे करी पायोरे मनुष्यगति आयोरे चित्त हरखायोरे॥ शं० ॥ चि० ॥ ३ ॥ अब चरणोंकी सेवा में पामीरे दील विसरामीरे शंखेश्वर स्वामीरे ॥शं०॥चि०॥ ४ ॥ तुम प्रभु आतम आनंद दाईरे वीरने सहाईरे कर करुणाईरे ॥ शं० ॥ चि० ॥ ५ ॥

॥ श्रीतारंगाजी मंडन स्तवन ॥

॥ विषयों के नेरू मत जाओ, ए देशी ॥

तारंग तीरथे सोहाय तारंग तीरथे सोहाय ॥ प्रभु मेरोरे तारंग तीरथे सोहाय ॥ आंकणी ॥ मुलनायक श्री अजित जिनेश्वर, भेट्यां भव दुःख जाय ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ भव भव भटकत शरणे हुं आयो, अब तो रखोजी मोरी लाज ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ तारंग तीरथे भवि जन तारण, बैठे ध्यान लगाय॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हुं अनाथ मुजको जो तारो, जगमें बहु जश थाय ॥ प्रभु० ॥४॥ वीरविजयनी विनती एही, आवागमन निवार ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ श्रीधुलेवा मंम्न केसरियाजी स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥

हांहांरे वाला आज केसरियाजी न्नेटीया धुलेवा मंम्नरायरे । हांहांरे वाला न्नव्य करम परजालवा, वेगा तुमे ध्यान लगायरे ॥ १ ॥ हांहांरे वाला वासर एटले न जाणीयो, तुमे तारण तरण जिहाजरे । हांहांरे वाला नूल अनादिनी माहरी । अब नांगी दीन दयालरे ॥ २ ॥ हांहांरे वाला चौगति चौटे नाचियो, सांग धारी नव नव नाथरे। हांहांरे वाला न्नव नाटकमें नाचतां, प्रनु काढ्यो अनंतो कालरे ॥ ३ ॥ हांहांरे वाला मोटे पुन्ये पामीयो। एह मानवनो अवताररे । हांहांरे वाला गाम नगर पुर ढुंढतां, तुं मिलियो धुलेवामांहीरे ॥ ॥ ४ ॥ हांहांरे वाला आज मनोरथ सवी फल्या, माहरो न्नव नाटक गयो दूररे । हांहांरे वाला उच्छव रंग वधामणां, थयां वीरविजय नरपूररे ॥५॥

स्तवन वीजुं ।

॥ आज वधाई वाजे छे, ए देशी ॥

नगर धुलेवामांही जाई प्रनु आज केसरीयाजी नेट्याछे ॥ नगर० ॥ आंकणी ॥ छोटपणे

में खेलताजी, तुम हम नवले वेस। त्रिभुवन पद्वी तुमे लहीजी, हमें संसारिके वेस ॥ के० ॥ १ ॥ अवसर लही अब विनवुंजी, तुम हो दीनदयाल। जे पद्वी तुमने लहीजी, ते आपो महाराज ॥ के० ॥ २ ॥ दायक दान देतां थकांजी, नवी करे ढील लगार। इछित हरिचंदन दीएजी, तो तुमरी क्या बात ॥ के० ॥ ३ ॥ समरथ नहीं ते दानमें जी, हरि हरादिक देव। जोग्य जाण कर जाचीयोजी, अब मिलीयो प्रभु मेल ॥ के० ॥ ४ ॥ सुणी अरजी सेवक तणीजी, चित्तमें चतुर सुजाण। आतम लक्ष्मी दिजीएजी, वीर विजयकुं दान ॥ के० ॥ ५ ॥

श्रीआबुजी रुषभजिन स्तवन।

॥ राग काफी ॥

भेट्यो अर्बुदराजरे आज सफल घमी भई ॥ भे० ॥ आंकणी ॥ नाभिनंदनजीके दरस सरससें, दूर गई मिथ्यावास। अनुभव ज्योत भई निज घटमें, त्रुटी भवकी पासरे ॥ आ० ॥ १ ॥ दीन उद्धार करण तुम सरिखो, नही दीठो इण संसार। प्रवहण प्रेरक जिम निरजामक, बांहे ग्रही तिम

तारे ॥ आ० ॥ २ ॥ चौगति चुरण चौमुख जि-
नवर, अचल गढे मनोहार । दरिसण कर कर
डुरित नासे, पाप गये परिहाररे ॥ आ० ॥ ३ ॥
तुम गुण केरा पार न पाउं, जिम जलधि हे अगाध।
कल्पवृक्ष चिंतामणि गेरुके, वाउल मा दियो
वाथरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ क्षीण क्षीण पल पल नाथ,
तुमारो ध्यान धरुं सुलतान । तुम गुण मकरंद
पानी कर कर, वीर विजय गुलतानरे॥ आ० ॥५॥



॥ श्रीजीरामंरून चंडप्रत्रजिन स्तवन ॥

॥ आइ इंद्र नार कर कर शृंगार, ए देशी ॥

प्रत्रु अरज धार, मनमें विचार, तुम हो कृ-
पाल, करो मारी सार, महसेन तात, लक्ष्मणा उर
जायो ॥ प्रत्रु० ॥ १ ॥ हुं हाथ जोरू, कहुं मान
मोरू, महा पाप घोर, हे तेहनो जोर, हरो डुःखनी
क्रोरू, करो निज रूप जेसो ॥ प्रत्रु० ॥ २ ॥ तुम
हो दयाल, धरो विरुद सार, मेरो नव संसार,
काढो तेहथी वार, दीनाके नाथ, मेरी अरज सु-
णिजे ॥ प्रत्रु० ॥ ३ ॥ हुं रह्यो निराश, वस्यो
गरनावास, महाडुख नीरास. जाणे नरकावास,

अब मिलियो नाथ, दुख हरो प्रभु मेरो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ आज आणंद अंग, मनमें उमंग, जाणे पुनमचंद, शीतल अनंग, हे लंछन चंद, एसो चंद्र प्रभु दिठो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ जीरानगर खास, प्रभु करे निवास, मन धरे जे आश, मीले मोक्ष वास, लक्ष्मीके दास, वीरविजे एम कह्यो ॥ ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥



॥ श्रीजयपुर मंडन सुमति जिन स्तवन ॥

॥ राग बरवा पीलु ॥

साहिब सुमति जिनेश्वर स्वामी, सुण हो कृपानिधि अंतर जामी । काल अनादि चिहुं गति भामी, फीरतां आयो में शरणे तिहारी ॥सा०॥ ॥१॥ गरभावासमें अति दुःख भारी, उंधे मस्तक हुवोरे खुवारी । मोहकरमकी हे गति न्यारी, जनम मरण नहीं छोडत लारी ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम विन कोण करे मुज सारी, अब तो लो प्रभु खबर हमारी । जीव अनंते संसारसें तारी, पहोंचाके प्रभु मुक्ति मोझारी ॥ सा० ॥ ३ ॥ माहारी वेला मौन व्रत धारी, शोभा नहीं प्रभु इनमें तुमारी । तुम प्रभु तारक जग जयकारी, तुम पर वारी हुं

जाउंरे हजारी ॥ सा० ॥ ४ ॥ तात मेघ मात मंगला तिहारी, वंश इक्ष्वागमें हुवो अवतारी । ज्ञाव सहित करे ज्ञक्ति तिहारी, ते होवे शिव रमणी अधिकारी ॥ सा० ॥ ५ ॥ नगर जेपुरमें आनंद-कारी, सुमति जिनेश्वर हे दातारी । लक्ष्मीविजय गुरुआणाकारी, वीरविजय मांगे ज्ञवपारी ॥सा०॥६॥

॥ राणकपुर मंमन स्तवन ॥

॥ नेमी सरवनमेने गिरनारी जातां, ए देशी ॥

साजन हे राणकपुर महाराज, आज ज्ञले ज्ञेटिया हो राज, मिथ्या तिमिर अनादरो हो राज ॥सा०॥ दूर कीयोमें आज, प्रज्ञु मुख जोवतां हो राज ॥ प्र० ॥ सा० ॥ १ ॥ सेवकरी एक विन-तीहो राज ॥ सा० ॥ अवधारो महाराय, दया करी माहरी हो राज ॥ द० ॥ सा० ॥ २ ॥ तस्कर च्यार मरामणा हो राज । लाग्या महारी लारके, वेगे निवारजो हो राज ॥ वे० ॥ सा० ॥३॥ काल अनादि लुंटियो हो राज ॥ सा० ॥ इण तस्करे मुज नाथ, वात कोण सांज्ञले हो राज ॥ वा० ॥ सा० ॥ ४ ॥ ज्ञान खमग मुज दिजिये हो राज

॥ सा० ॥ कीजीये सेवक सार वार करो माहरी हो राज ॥ वा० ॥ सा० ॥ ५ ॥ अब तुम चरणे आइने हो राज ॥ सा० ॥ नव नव संचित पाप, करम दल काटसां हो राज ॥ क०॥ सा० ॥ ६ ॥ धन धन मरुदेवी मातने हो राज ॥ सा० ॥ नाभिराय कुलहंस, वंस इक्वागनो हो राज ॥ वं० ॥ सा०॥७॥ सेवक दुःखियो देखीने हो राज ॥ सा० ॥ मनमें आणी महेर, नवोदधि तारिये हो राज ॥ न० ॥ सा० ॥ ७ ॥ आतम लक्ष्मी दिजिये हो राज ॥ ॥ सा० ॥ वीरविजयने आज, काज सरे माहरो हो राज ॥ का० ॥ सा० ॥ ए ॥



॥ श्रीगीरनारमंमण नेमनाथ जिन स्तवन ॥

में आज दरिसण पाया, श्री नेमनाथ जिन-राया ॥ मे० ॥ आंकणी ॥ प्रनु शिवादेवीना जाया, प्रनु समुद्रविजय कुल आया, करमोके फंद ठोमाया, ब्रह्मचारी नाम धराया, जिने तोमी जगतकी माया ॥ जि० ॥ में० ॥ १ ॥ रेवतगिरि मंमण राया, कल्याणक तिन सोहाया, दिक्षा केवल शिवराया, जगतारक बिरुद धराया, तुम

बेठे ध्यान लगाया ॥ तु० ॥ मे० ॥ २ ॥ अब सुणो त्रिजुवन राया, में करमोके वश आया, हुं चतुर गति जटकाया, में दुःख अनंते पाया, ते गिणती नाही गणाया ॥ ते० ॥ में० ॥ ३ ॥ में गरजवास-में आया, उंधे मस्तक लटकाया, आहार सरस विरस जुक्ताया, एम अशुज करम फल पाया, इण डुखसें नाही मुकाया ॥ इ० ॥ में० ॥ ४ ॥ नर-जव चिंतामणि पाया, तब च्यार चोर मिल आया, मुजे चौटेमें लुंट खाया, अब सार करो जिनराया, किस कारण देर लगाया ॥ कि० ॥ में० ॥ ५ ॥ जिने अंतरगतमें लाया, प्रजु नेम निरंजन ध्याया, दुःख संकट विघन हठाया, ते परमानंद पद पाया, फेर संसार नहीं आया ॥ फे० ॥ में० ॥ ६ ॥ में दूर देशसें आया, प्रजु चरणे शीश नमाया, में अरज करी सुख दाया, तुम अवधारो महाराया, एम वीरविजय गुण गाया ॥ ए० ॥ में० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीराधणपुरमंमण ऋषज जिन स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥

चित्त चाहे सेवा चरणकी, प्रजुजी ऋषज

जिणंदकी ॥ चि० ॥ आंकणी ॥ चेतन ममता सवही छोडी, ए प्रभु सेवो एकमति । लोकातित स्वरूप ते जेहनुं, लेई वरो पंचमी गति ॥चि०॥१॥ एक एक प्रदेशें अनंती, गुण संपतनी आवली । सुरगुरु कहेतां पार न पावे, एक अनेक मुखे करी॥ चि० ॥ २ ॥ भव थकी अलगा छो प्रभु तुमही, भविजन ताहरा नामथी। पार भवोदधिनो ते पामे, ए अचरिज मन छे अती ॥ चि० ॥ ३ ॥ तुम प्रभु तारक जग जयवंतो, नहीं जाण्यो में डुरमती । मन वच काया थीर करीने, नहीं सेव्यो में एक रती ॥ चि० ॥ ४ ॥ अवसर पामी न करुं स्वामी, सीर धरुं प्रभुनी चाकरी । राधणपुरमंडण दुख खंडण, सेवी वरो शिवसुंदरी ॥ चि० ॥ ५ ॥ वारवार विनवुं प्रभु तमथी, जो अवधारो माहरी। आतम आनंद प्रभुजी दीजो, वीरविजयने मया करी ॥ चि० ॥ ६ ॥

श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन ।

॥ मनरी बातां दाखाजी महारा राज, ए देशी ॥

प्रीतमजी सुणो दीलरी बात हमारी जी मारा राज ॥ आंकणी ॥ विमल गिरिंदकुं भेटो

जी मारा राज । जव जवके संचित पाप करमकुं मेटो जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ १ ॥ पूरव नवाणुं वारा जी मारा राज । प्रजु रुषज जिणंदा चरणे चल कर आया जी मारा राज ॥ प्री० ॥ २ ॥ राजादनी तरु गया जी मारा राज । तुमे दिल जर देखो रुषज जिणंदके पाया जी मारा राज॥ प्रीत० ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणधर आदि जी मारा राज । मुनि मुक्ति सधारे टाली सर्व उपाधि जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ४ ॥ प्रीतम तीरथ मोटुंजी मारा राज । कांई ढील करोबो अमने लागे खोटुं जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ५ ॥ मिथ्या निंद हगावो जी मारा राज । ए तीरथ जाके कुमतिके गढ ढावो जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ६ ॥ दुरजनरा जरमाया जी महारा राज । चेतनजी थे तो चौगतीमें जटकाया जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ७ ॥ ए पावन तीरथ पामी जी मारा राज । सव फुःखके चूरण मत करजो तुमे स्वामी जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ८ ॥ चितमांसें नित्य ध्यावोजी मारा राज । गिरिवरके फरसी परमानंद पद पावो जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ए ॥ सुमता सखीरी वाणी मारा राज । तुम चित्तमां धरजो वरजो शिव पट-

राणी जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ १० ॥ गुण गावे मिली देवाजी मारा राज। वीर विजय मांगे आतम लक्ष्मी मेवा जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ११ ॥



श्रीजिरामंमण चिंतामणी पार्श्व स्तवन।

॥ राग दादरो ठुमरी भेद ॥

दिल विसरामी चिंतामण स्वामी रे ॥ टेक॥ मोहन मुरती पाशजी तोरी रे, अवर न जोमीरे, चित्त लीयो चोरी रे ॥ चिं० ॥ १ ॥ अंतरगतकी अंतरजामी रे, कहुं शीर नामी रे, सुनो मेरे स्वामी रे ॥ चिं० ॥ २ ॥ मोहरायने मेनुं दुःख दीया रे, सबी लुट लीयारे, जुलम ही कीयारे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ तुम बिन कौन सुने प्रभु मोरी रे, शरण गत तोरी रे, खबर लियो मोरी रे ॥ चिं० ॥ ४ ॥ दासकी आश प्रभु पाशजी पूरो रे, करम सब चूरो रे, बजे जय तूरो रे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ वीरविजय कहे पाशजी पायो रे, जीरे जब आयोरे, दुःख विसरायो रे ॥ चिं० ॥ ६ ॥



श्रीपट्टीमंमन पार्श्वजिन स्तवन।

कर ले पारश संग। प्रभु हे अनंग संग।

कंचन कामनी संग । कमले क्युं आवदांजी ॥ क० ॥ १ ॥ मनुष्य जनम आंदा ॥ निंदमें क्युं सोई रेंदा । शुपनशी माया तेनु । फेर नहीं पावदांजी ॥ क० ॥ २ ॥ प्रभु हे पुरनचंद । अश्वसेन राय नंद । धन दिन आज साफा । प्रभु घर आवदांजी ॥ क० ॥ ३ ॥ शीफत करां में केती । जिह्वान तो नांही रेंदी । सुर गुरु गुण तुं सांदा । पार नहीं पावदां जी ॥ क० ॥ ४ ॥ मनके मोहन पामी, पुरतो पट्टी के स्वामी । अब तो न रखो खामी । वीरविजे गावदांजी ॥ क० ॥ ५ ॥

श्रीघोघामंफण नवखंभा पार्श्व जिन स्तवन ।

घनघटा भुवन रंग छाया, नव खंभा पाशजि पाया ॥ आंकणी ॥ प्रभु कमठ हठीकुं हठाया । विषधर परजलती काया । दिल दया धरी के ठोमाया । सेवक मुख मंत्र सुणाया । क्षणमें धरणेंद्र बनाया ॥ घ० ॥ १ ॥ में और देवनकुं ध्याया । सब फोगट जनम गमाया । सुनो वामा राणीका जाया । कुछ परमारथ नहीं पाया ।

ज्युं फुटा ढोल बजाया ॥ घ० ॥ २ ॥ सुणि चामीकर ज्ञरमाया । में पीतल हस्ते पाया । मुजे हुवा बहु डुखदाया । करमोंने नाच नचाया । इस विध धके बहु खाया ॥ घ० ॥ ३ ॥ घोघा मंमण सुख दाया । जग बहु उपकार कराया । नवखंमा नाम धराया । में सुणकर शरणे आया । उद्धार करो महाराया ॥ घ० ॥ ४ ॥ हुवा चतुर- मास मुज आया । किस कारण अब बेठाया । द्यो मन वंछित सुख दाया । हुं प्रेमे प्रणमुं पा- या । सेवकका काज सराया ॥ घ० ॥ ५ ॥ शर युग निधि इंडु कहाया । ज्ञला अश्विन मास सोहाया । दीवाली दिन जब आया । में आतम आनंद पाया । एम वीर विजय गुण गाया ॥ घ० ॥ ६ ॥

स्तवन बीजुं ।

नवखंमा स्वामी । आप बिराजो घोघा शहे- रमें, हांहां रे घोघा शहेरमें ॥ नव० ॥ आंकणी ॥ देश देशके यात्री आवे, पूजा आंगी रचावे । नवखंमाजी नाम समरतां । पूरण परचा पावेजी ॥ नव० ॥ १ ॥ अश्वसेन वामा सुत केरी, मूरति मोहनगारी । चंड सूरज आकाशे चमिया, तुम

र रूपसें हारीजी ॥ नव० ॥ २ ॥ मुखने मटके लोयण लटके, मोह्यां सुर नर कोमी । और देव- नकुं हम नहीं ध्यावें, एम कहे कर जोमीजी ॥ नव० ॥ ३ ॥ तुं जगस्वामी अंतर जामी. आतम रामी मेरा । दिल विसरामी तुमसें मांगु. टालो नवका फेराजी ॥ नव० ॥ ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि आशा, पूरे नहीं जरू नापा ॥ तीन नुवनके नायक जिनजी, पूरो हमारी आशाजी ॥ नव० ॥ ५ ॥ दायक नायक तुम हो साचा, और देव सव काचा । हरि हर ब्रह्म पुरंदर केरा, जूठे जुठ तमासाजी ॥ नव० ॥ ६ ॥ नटक नटक घोघा वंदरमें, दर्शन फुर्लन पाया । वीरविजय कहे आतम आनंद. आपो जिनवर गयाजी ॥ नव० ॥ ७ ॥

सत्तरवतरा मंमन श्रीधर्मनाथ स्तवन ।

॥ राग कानडा ॥

और न ध्याउं में और न ध्याउं ॥ धरम जिणंदसें लगन लगाउं ॥ ध्यान अगन सें करम जलाउं । ठिनमें परमातम पद पाउं ॥ औ० ॥ १ ॥ लोह पारसको संगम पाई ।

हेम रूप धारत मेरे जाई ॥ जज ले धरमनाथ एक वारा । आतम हित कर ले तुं प्यारा ॥ ओं० ॥ २ ॥ इन बिन और देव नहीं दूजो । विधिसें धरम जिणंदकुं पूजो ॥ मनमें ध्यान धरो एक धारा । कामित फलके देवन हारा ॥ ओं० ॥ ३ ॥ नूतन मंदिर आप पधारो । एही सेवक अरजी अवधारो ॥ घंटारव नौबत जब गाजे। तब सेवकको आनंद जागे ॥ ओं० ॥ ४ ॥ पुरव पुन्य दरिशण पायो । जब में हेमनगरमें आयो । वीरविजयकी विनती एही । आतम आनंद मुजको देही ॥ ओं० ॥ ५ ॥

श्रीहुशियारपुर मंम्न वासुपूज्य जिन स्तवन ।

॥ राग खमाच ॥

॥ आज दुविधा मेरी मिट गई, ए देशी ॥

वासुपूज्य जिनराज आज मेरो मन हर लीनो रे ॥ आंकणी ॥ वासव वंदित पद कज वृंद । वसुपूज्य राजाके नंद । जविक कमल विकासी चंद, तनू रक्त रंगीलो रे ॥ वा० ॥ १ ॥ कामित

पूरण सुरतरु कंद। कठिन करमका काटे फंद। अरज करुं अति भाग्य मंद। कुछ दया दिल ल्यावोरे॥ वा० ॥ २॥ फसियो मोह दशा महा फंद। अब काढो प्रभु करुणावंत। चरण शरण मागुं अमंद। क्युं देर लगावोरे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तारक प्रभुजी जग जयवंत। तार्ये तुमने संत अनंत। मुज कीरपा कीजो भदंत। निज विरुद संभालोरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ भव भव भमियो में भगवंत। तुम दरिशण विन काल अनंत। नगर हुस्यारपुरेमें चंग, प्रभु दरिशण पायोरे ॥ वा० ॥ ५ ॥ संवत् नेत्र वाण निधि चंद, आसु शुक्ल द्वितीया दिन चंग। वीरविजय मांगे अभंग। आतम पद दीज्यो रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

श्रीअमृतसर मंडन अरजिन स्तवन।

श्री अरजिन अंतर जामी। तुमसे कहुं सीर नामी। करुणा दृग् मोये करना। ज्युं वेगे हुवे तरनाजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ लेत माल खजाना। नहीं मागुं त्रिभुवन राना। मन भमरेकुं ए आशा। तुज पद पंकजमें वासा ॥ श्री० ॥ २ ॥ ए भुपम काल दुःख दाई। तुज मुरती है सुख दाई।

हेम रूप धारत मेरे भाई ॥ भज ले धरमनाथ एक वारा । आतम हित कर ले तुं प्यारा ॥ औ० ॥ २ ॥ इन बिन और देव नहीं दूजो । विधिसें धरम जिणंदकुं पूजो ॥ मनमें ध्यान धरो एक धारा । कामित फलके देवन हारा ॥ औ० ॥ ३ ॥ नूतन मंदिर आप पधारो । एही सेवक अरजी अवधारो ॥ घंटारव नौबत जब गाजे । तब सेवकको आनंद जागे ॥ औ० ॥ ४ ॥ पुरव पुन्य दरिशण पायो । जब में हेमनगरमें आयो । वीरविजयकी विनती एही । आतम आ-नंद मुजको देही ॥ औ० ॥ ५ ॥

श्रीहुशियारपुर मंडन वासुपूज्य जिन स्तवन ।

॥ राग खमाच ॥

॥ आज दुविधा मेरी मिट गई, ए देशी ॥

वासुपूज्य जिनराज आज मेरो मन हर ली-नो रे ॥ आंकणी ॥ वासव वंदित पद कज छंद । वसुपूज्य राजाके नंद । भविक कमल विकासी चंद, तनू रक्त रंगीलो रे ॥ वा० ॥ १ ॥ कामित

पूरण सुरतरु कंद। कठिन करमका काटे फंद।
अरज करुं अति भाग्य मंद। कुछ दया दिल
ल्यावोरे॥ वा०॥२॥ फसियो मोह दशा महा फंद।
अब काढो प्रभु करुणावंत। चरण शरण मागुं
अमंद। क्युं देर लगावोरे॥ वा०॥३॥ तारक
प्रभुजी जग जयवंत। तार्ये तुमने संत अनंत।
मुज कीरपा कीजो भदंत। निज बिरुद संभा-
लोरे॥ वा०॥४॥ भव भव भमियो में भगवंत।
तुम दरिशण बिन काल अनंत। नगर हुस्यार-
पुरेमें चंग, प्रभु दरिशण पायोरे॥ वा०॥५॥
संवत् नेत्र बाण निधि चंद, आसु शुक्ल द्वितीया
दिन चंग। वीरविजय मांगे अभंग। आतम पद
दीज्योरे॥ वा०॥६॥

श्रीअमृतसर मंडन अरजिन स्तवन।

श्री अरजिन अंतर जामी। तुमसे कहुं सीर
नामी। करुणा दृग् मोये करना। ज्युं वेगे हुवे तर-
नाजी॥ श्री०॥१॥ लेत माल खजाना। नहीं
मागुं त्रिभुवन राना। मन भमरेकुं ए आशा।
तुज पद पंकजमें वासा॥ श्री०॥२॥ ए दुषम
काल दुःख दाई। तुज मुरती है सुख दाई।

नहीं कुमतिके मन भाई। हुवे दुरगत के सहाई ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कुपंथ जिनोने धारे। दुरगतिमें गये बिचारे। जिने तुम आज्ञा नहीं कीनी। तिने पाप पोट सीर लीनी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अमृत-सर मंरूण स्वामी। घट घटमें तुं विसरामी। तोरी आज्ञा सिर पर धारी। हुं वेग वरुं शिव नारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ निधि युग निधि इंदु वरसे, मास कार्तिक शुक्ल पक्षे। तिथि प्रतिपदा गुण गाया। ए वीरविजय सुख दाया ॥ श्री० ॥६॥

॥ अथ अमृतसर मंमन शीतल जिन स्तवन ॥

चलो खेलिये होरी। शीतल जिन नाथ जयोरी ॥ च० ॥ आंकणी ॥ आये वसंत फूली वनराजी। भ्रमर गुंजार भयोरी। माकंद मंजर सुंदर चारवी। कोकिल शोर थयोरी। मेरो मन अति उलस्योरी ॥ च० ॥ १ ॥ मोघर चंपक केतकी फुली। और फुली चित्रवेली। चंबेली मुचकुंद ज फुली। दमनक कलियां मोरी। प्रभु की पूजा रचोरी ॥ च० ॥ २ ॥ कुसुमाभरण करी प्रभु पूजो।

ज्युं पामो भव पारी । केसर रंग के तिलक लगा-
वो ! धुप घटी विरचावो। भवी तुमे भावना भा-
वो ॥ च० ॥ ३ ॥ ताल मृदंग विण रूफ बाजत।
भुंगल गाजत भेरी। गीत नृत्य प्रभुजी के आगे।
करत मिटत भव फेरी। वसंतकी बाहार भलेरी
॥ च० ॥ ४ ॥ नंदा नंदन भव दुख कंदन। नाम
से शीत भयोरी। शौच करत बिचारो चंदन।
नंदन वनमें गयोरी। जाको मान भंग थयोरी ॥
च० ॥ ५ ॥ ढुंढत ढुंढत शहेर शुधामे। शीतल
नाथ मिल्योरी। वीरविजय कहें आतम आनंद
आज हमारे थयोरी। दरशसें पाप गयोरी
॥ च० ॥ ६ ॥



॥ अथ हस्तिनापुर स्तवन ॥

॥ राग होरी ॥

चालो खेलिये होरी जिहां जिन कल्याणक
भयेरी ॥ चा० ॥ टेक ॥ सुंदर हस्तिनागपुर है।
पूरव देस मोझारी। जिहां जिन तिनके कल्या-
णिकका। कथन हे सूत्र मोझारी। सब जीवन
हितकारी ॥ चा० ॥ १ ॥ शांतिनाथ श्रीकुंथुनाथ-
जी अर जिन अंतर जामी। चवन जनम दी-

ज्ञाने केवल । पाये प्रज्ञु धारी । कल्याणिक जग सुखकारी ॥ चा० ॥ २ ॥ दो विध चक्री पद सुख जोगी। ते प्रज्ञु आनंद कारी । समेत शिखर जाइ ध्यान लगाई । लीनी शिव पटराणी । करमक्षय सें जवपारी ॥ चा० ॥ ३ ॥ तीरथयात्रा करो शुज जावें । समकित निरमलकारी । जनम जनम के पाप निवारी । आतमके हितकारी । सदा सुखके दातारी ॥ च० ॥ ४ ॥ शहेर दिल्लीसें यात्रा करनकुं । संघ सकल मिल आये। श्रीश्रीहस्तिनागपुर में । धवल मंगल वरताये । पूजासें आनंद पाये ॥ चा० ॥ ५ ॥ संवत् जुवन बाण निधि इंदु । फाल्गुन शुदि सुखकारी। गुरुवार प्रतिपद जयकारी। वीर विजय हितकारी । प्रज्ञु जेट्यां जवपारी ॥ चा० ॥ ६ ॥

मांडवगढमंमन स्तवन ।

॥ पानीहारीकी देशी ॥

मांडवगढमें बिराजता माहारा वालाजी ॥ मा० ॥ स्वामी सुपास जिणंदा ॥ वा० ॥ तिण कारण तीरथ वडुं ॥ माहा० ॥ जूमंडल प्रचंड ॥ वा० ॥ १ ॥ विषम पहाड जाडी घणी ॥ मा० ॥

दर्शण दुर्लभ देव ॥ वा० ॥ पुन्य विना पावे नहीं ॥ मा० ॥ मांडव मंडन सेव ॥ वा० ॥ २ ॥ तीरथ महिमा अति घणो ॥ मा० ॥ सांभली लाभ अपार ॥ वा० ॥ जात्री जन आवे घणा ॥ मा० ॥ करवा भवनो पार ॥ वा० ॥ ३ ॥ लाभ लेवा जात्रातणो ॥ मा० ॥ रतनपुरी को संघ ॥वा०॥ मांडवगढ प्रति निकले ॥ मा० ॥ बहु आंडबर चंग ॥ वा० ॥ ४ ॥ संघवी डुंगरसी भला ॥ मा० ॥ ओसवंस भूपाल ॥ वा० ॥ लुणियागोते जाणिये ॥ मा० ॥ करता पर उपगार ॥ वा० ॥ ५ ॥ विजयकमल सूरि जिहां ॥ मा० ॥ दस मुनि के परिवार ॥ वा० ॥ साधवी श्रावक श्रावीका ॥ मा० ॥ ठाठ घणो बहु लार ॥ वा० ॥ ६ ॥ चउविध संघ शोभा घणी ॥ मा० ॥ मुख वरणी नहीं जाय ॥ वा० ॥ मोतीजी कटारिया ॥ मा० ॥ आगेवानी थाय ॥ वा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमे आवि बिराजिया ॥ मा० ॥ धारा नगरीके मांय ॥ वा० ॥ चैत्य जुहारी तिहां बहु ॥ मा० ॥ उलट अंग न माय ॥ वा० ॥ ८ ॥ पूरव पुन्ये आविया ॥ मा० ॥ मांडवपुरके मांय ॥ वा० ॥ श्रीसुपास जिन भेटिया ॥ मा० ॥ जेहनी शीतल छांह ॥ वा० ॥ ९ ॥ शशी रस निधि

शशी वत्सरे ॥ मा० ॥ फाल्गुन मास प्रमाण ॥ वा० ॥ कर्मवाटी ए चतुर्दशी ॥ मा० ॥ कृष्णपक्ष की जाण ॥ वा० ॥ १० ॥ सूर्यवारे सुखिया थया ॥ मा० ॥ भेटी प्रभुका पाय ॥ वा० ॥ वीरविजय कहे दीजिये ॥ मा० ॥ आतम हित सुखदाय ॥ ॥ वा० ॥ ११ ॥



श्रीसमेतशीखरजीनुं स्तवन ।

वस गीया वस गीया वस गीयारे मेरा मनवा । मेरा मनवा शीखर पर वस गीयारे ॥मे०॥ आंकणी ॥ समेतशीखर गिरिवर को भेटी । आनंद हृदयमें भर गीयारे ॥ मे० ॥ १ ॥ धन्य घमी दिन आज हमारो । तीरथ भेटी तर गियारे ॥ मे० ॥ २ ॥ वीसे टुंके वीस जिनेश्वर । अजितादि प्रभु चम गीयारे ॥ मे० ॥ ३ ॥ अणशण करके कारज अपना । योग समाधीसे कर लीया रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ अनंतबली जिनवरको जाणी । मोहराय पिण मर गिया रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ करम कटण कल्याणिक भूमि । सब जिनवर जी कह गयारे ॥ मे० ॥ ६ ॥ पुन्योदयसें पास शामला ।

समेतशिखर पे दरश कियारे ॥ मे० ॥ ७ ॥ वीर विजय कहे तीरथ फरसी । आतम आनंद ले लियारे ॥ मे० ॥ ८ ॥

॥ स्तवन बीजुं ॥

तीरथनी आशातना नवी करीये, ए देशी ॥

समेतशीखरनी जातरा नित्य करिये । नित्य करियेरे नित्य करिये । नित्य करिये तो दुरित नीहरिये । तरिये संसार ॥ समे० ॥ १ ॥ शिववधु वरवा आविया मन रंगे । विश जिनवर अति उछरंगे । गिरी चढिया चढते रंगे । करवा निज काज ॥ समे० ॥ २ ॥ अजितादि वीश जिनेश्वरा वीश टुंके । कीधुं अणशण कीरिया न चुके । ध्यान शुक्ल हृदयथी न मुके । पाया पद निरवाण ॥ समे० ॥ ३ ॥ शिव सुख भोगी ते थया जिनराया । भांगे सादि अनंत कहाया । पर पुद्गल संग छोडाया । धन धन जिनराय ॥ समे० ॥ ४ ॥ तारण तीरथ तेहथी ते कहीये । नित्य तेहनी छांया रहीये । रहिये तो सुखिया थइये । बीजुं शरण न होय ॥ समे० ॥ ५ ॥ ओगणिसे

बासठ माघनी वदी जाणो । चतुर्दशी श्रेष्ठ वखाणो । हमे भेट्यो तीरथनो राणो । रंगे गुरुवार ॥ समे० ॥ ६ ॥ उत्तम तीरथ जातरा जे करशे । वली जिन आज्ञा शिर धरशे । कहे वीरविजय ते वरशे । मंगल शिवमाल ॥ समे० ॥ ७ ॥



॥ स्तवन तीजुं ॥

रहेने रहेने रहेने अलगी रहेने, ए देशी ॥

भेटो भेटो भेटो भवियण भेटो । समेत शीखर गिरि भेटो ॥ भ० ॥ जनम मरण दुःख मेटो ॥ भ० ॥ आंकणी ॥ मोहरायने विवर दियो जब । भाग्योदय थयो बलियो । पुरव पुन्ये आज हमारे । तीरथ मेलो मलियो ॥ भ० ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । मनना मनोरथ फलिया । समेत शीखर गिरिवरने भेटी । भवना फेरा टलिया ॥ भ० ॥ २ ॥ भवोदधि तरिये पार उतरिये । तीरथ कहिये तेह । पुन्यतणा तो पोठी भरिये । तेहमां नहीं संदेह ॥ भ० ॥ ३ ॥ स्वपरिवारे वीस जिनेश्वर । समेतशिखर गिरी चढिया । काम क्रोध मद मोह निवारी । समता

रसना नरिया ॥ ज० ॥४॥ अजित संनव अनि-नंदन सुमति । पद्मप्रनुजी जाणो । सुपास चंद्र-प्रनुने सुविधि । शीतल जिनने वखाणो ॥ ज० ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस विमलने अनंत जिन । धर्म जिनेश्वर कहिये । शांति कुंथु अर जिनवरनी । नक्ति करी शिव लहिये ॥ ज० ॥ ६ ॥ मल्लि-नाथने मुनिसुव्रत जिन। नमि पार्श्व गुण नरिया । वीसे टुंके वीस जिनेश्वर । अणशण करी शिव वरिया॥ ज०॥ ७॥ वीस प्रनु निरवाण थयाथी, वीस कल्याणिक जाणो । पावन तीरथ तेहथी कहिये । शंका मन नहीं आणो ॥ ज० ॥ ८ ॥ तीरथ सेवा सद्गति आपे । कहे सिद्धांत नहीं खोटुं । सम-कीत शुद्ध थवानुं कारण। ए तीरथ छे मोटुं ॥ज०॥ ए॥ जात्रा करवा शिव सुख वरवा। संघ सकल हवे मलियो । स्वपरिवारे चढते नावें । लश्करथी निकलियो ॥ ज० ॥ १० ॥ शेठजी नथमल्ल वाघ-मल्लजी । लश्कर शहेरना जाणो । गोलेछा जो गोते कहिये । श्रावक श्रेष्ठ वखाणो ॥ ज० ॥ ११ ॥ शेठजी नगीनचंद कपूरचंद । सुरत शहेरना कहिये । ललुनाइने दलसुखनाई । फुलचंदना-इने लहिये ॥ ज० ॥ १२॥ नगयानसिंहजी नक्ती

करता । संघ सकल हवे चाले । काशी आदि तीरथ करता । समेतशीखरजी आवे ॥ ज० ॥ १३ ॥ ओगणिसे बासठ माघ वदीनी । चतुरदशी गुरुवारे । तीरथ जेटी जे आनंद लीधो । केवल-ज्ञानी ते जाणे ॥ ज० ॥ १४ ॥ संघनी सहाजे हमे जली जाते । जात्रानुं फल लीधुं । वीर विजय कहे आज हमारा । मननुं कारज सिध्युं ॥ ज०॥१५॥

श्रीमहावीरजिन स्तवन ।

महावीर महावीर जज ले तुं जाई । महा-वीर विन है न कोई सहाई ॥ मा० ॥ आंकणी ॥ मनुष्य जन्मकी करले कमाई । सिद्धारथ सूनुं बना ले तूं सांई ॥ मा० ॥ १ ॥ निष्कारण बंधु परम सुखदाई । महावीरजीकी है एही बमाई ॥ मा० ॥ २ ॥ स्वारथकी तुं गेमदे मात पित जाई । इनोसे न होगी तुजे कुछ जलाई ॥ मा० ॥ ३ ॥ देखो डुनियांकी है कैसी सगाई । सवी लुंट लेवे ओ अपनी कमाई ॥ मा० ॥ ४ ॥ गेम सब मोह लोह डुःखदाई । शरण कर वीर विजु मेरे जाई मा० ॥ ५ ॥

श्रीपावापुरी महावीर जिन स्तवन ॥

हर लिया हर लिया हर लियारे, मेरा मनवा महावीरजीने हर लियारे ॥ आंकणी ॥ विचरता वीर जिनेश्वर आया । पावापुर पावन कीयारे ॥ मे० ॥ १ ॥ सुरवर समोवसरणकी रचना । करी भक्तिमें भर गीयारे ॥ मे० ॥ २ ॥ सिंहासनपें प्रभुजी बिराजी । देशना अमृत वरसियारे ॥ मे० ॥ ३ ॥ शोल पहोर प्रभु देशना दीनी । अवसर अणशण का लीयारे ॥ मे० ॥४॥ सर्वसमाधी अणशण पाली । मन वच काया वस कीयारे ॥ मे० ॥ ५ ॥ शिववधु वरिया, भवोदधि तरिया । पारंगतका पद लियारे ॥ मे० ॥ ६ ॥ मोक्ष कल्याणिक महोच्छव जाणी । इंद्रादिक सब मिल गीयारे ॥ मे० ॥ ७ ॥ बम्रे ठाठसें महोच्छव करके । नाम पावापुरी कह गियारे ॥ मे० ॥ ८ ॥ तीरथ भेटी भवदुःख मेटी । आतम आनंद ले लियारे ॥ मे० ॥ ९ ॥ ओगणिसे बासठ माघ शुदकी । पंचमी दिन पावन थियारे ॥ मे० ॥ १० ॥ वीरविजय कहे वीर जिणंदका । दर्शण विन हम रह गयारे ॥ मे० ॥ ११ ॥

करता । संघ सकल हवे चाले । काशी आदि तीरथ करता । समेतशीखरजी आवे ॥ भ० ॥ १३ ॥ ओगणिसे बासठ माघ वदीनी । चतुरदशी गुरुवारे । तीरथ भेटी जे आनंद लीधो । केवल-ज्ञानी ते जाणे ॥ भ० ॥ १४ ॥ संघनी सहाजे हमे भली भाते । जात्रानुं फल लीधुं । वीर विजय कहे आज हमारा । मननुं कारज सिध्युं ॥ भ०॥१५॥

श्रीमहावीरजिन स्तवन ।

महावीर महावीर भज ले तुं भाई । महा-वीर विन है न कोई सहाई ॥ मा० ॥ आंकणी ॥ मनुष्य जन्मकी करले कमाई । सिद्धारथ सूनुं बना ले तूं सांई ॥ मा० ॥ १ ॥ निष्कारण बंधु परम सुखदाई । महावीरजीकी है एही बडाई ॥ मा० ॥ २ ॥ स्वारथकी तुं छोडदे मात पित भाई । इनोसे न होगी तुजे कुछ भलाई ॥ मा० ॥ ३ ॥ देखो दुनियांकी है कैसी सगाई । सवी लुंट लेवे ओ अपनी कमाई ॥ मा० ॥ ४ ॥ छोड सब मोह लोह दुःखदाई । शरण कर वीर विभु मेरे भाई मा० ॥ ५ ॥

श्रीपावापुरी महावीर जिन स्तवन ॥

हर लिया हर लिया हर लियारे, मेरा मनवा महावीरजीने हर लियारे ॥ आंकणी ॥ विचरता वीर जिनेश्वर आया । पावापुर पावन कीयारे ॥ मे० ॥ १ ॥ सुरवर समोवसरणकी रचना । करी नक्तिमें नर गीयारे ॥ मे० ॥ २ ॥ सिंहासनपें प्रजुजी बिराजी । देशना अमृत वरसियारे ॥ मे० ॥ ३ ॥ शोल पहोर प्रजु देशना दीनी । अवसर अणशण का लीयारे ॥ मे० ॥४॥ सर्वसमाधी अणशण पाली । मन वच काया वस कीयारे ॥ मे० ॥ ५ ॥ शिववधु वरिया, नवोदधि तरिया । पारंगतका पद लियारे ॥ मे० ॥ ६ ॥ मोक्ष कल्याणिक महोच्छव जाणी । इंद्रादिक सब मिल गीयारे ॥ मे० ॥ ७ ॥ बफे ठाठसें महोच्छव करके । नाम पावापुरी कह गियारे ॥ मे० ॥ ८ ॥ तीरथ नेटी नवदुःख मेटी । आतम आनंद ले लियारे ॥ मे० ॥ ए ॥ ओगणिसे बासठ माघ शुदकी । पंचमी दिन पावन थियारे ॥ मे० ॥ १० ॥ वीरविजय कहे वीर जिणंदका । दर्शण विन हम रह गयारे ॥ मे० ॥ ११ ॥

कलकत्तामंमन महावीर जिन स्तवन ।

रानी त्रिशलादे नंदारे वीर जिणंदा । सिद्धारथ कुल नज्ञ चंदा रे सुखको रे कंदा ॥ रानी० ॥ आंकणी ॥ जब जन्मे जिनवर राया । छप्पन कुमरि हुलराया । हरि हरष धरी तब आयारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ १ ॥ हरि पंचरूप बन जावे । प्रनु मेरुशीखर पे ल्यावे । करे जनम महोच्छव नावेरे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ २ ॥ अनिषेक कलस कर धारी । करे प्रनु नवणकी त्यारी । हरि शंका दिलमें धारीरे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ३ ॥ प्रनु जनमतही है नाणी । मन शंका शक्रकी जाणी । तब मेरु कंपायो ताणी रे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ४ ॥ चमके सब सुरवर राया । शंका मन दूर कराया । करी महोच्छव आनंद पायारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ५ ॥ धन्य वीर जिनेश्वर स्वामी । तुं बालपणे नये नामी । तुम गुणमें को नहीं खामीरे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ६ ॥ कलकत्ता मंमन राया । बैठे प्रनु ध्यान लगाया । में दर्श बगिचे पायारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ७ ॥ ओगणिसें त्रेशठ नाया । कार्त्तिक पुनम दिन आया । एम वीरविजय गुण गायारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ८ ॥

॥ आगरामंडन चिंतामण जिन स्तवन ॥

॥ राग कनडा शियाना ॥

चिंतामणजी पास मोहे प्यारा । मन वंछित के पूरण हारा । नाम मंत्र जपलो एकवारा । कठिन करमके चुरनहारा ॥ चिं० ॥ १ ॥ अरज एक प्रभुजीसें मोरी । सेवा चाहु में जव जव तोरी । लक्ष चौरासी रुलता में आया । पुरव पुन्य चिंतामणि पाया ॥ चिं० ॥ २ ॥ और देवन की सेवा में कीनी । पापकी गठडी में सीर लीनी । कहो रे न मान्यो कुमति वस किसको । प्यालो न पीयो अमृत रसको ॥ चिं० ॥ ३ ॥ और देवनकुं कबहुं न मानुं । सच्चा पास चिंतामणि जानुं । प्रभुके चरण शरण कर लीनी । और देवनकुं जलांजली दिनी ॥ चिं० ॥ ४ ॥ आगरा मंडन सब दुःख खंडन । पास चिंतामणि शीतल चंदन । वीरविजय कहे तपत बुझावो । नाम जगतमें हे तुम चावो ॥ चिं० ॥ ५ ॥ जुग रस निधि इंदु वत्सरमें । मास जाद्रपद शुक्ल पक्षमें । दिन संवच्छरीका जव आया । चिंतामणि पास गुन गाया ॥ चिं० ॥ ६ ॥

श्रीअंबालामंमन श्रीसुपास जिन स्तवन ।

क्युं नहो सुनाई स्वामी । ऐसा गुना क्या कीया ॥ आंकणी ॥ औरोंकी सुनाई जावे । मेरी वारी नाहीं आवे । तुम बिन कोन मेरा, मुजे क्युं नुला दिया ॥ क्युं० ॥ १ ॥ नक्त जनों तार दीया, तारवेका काम कीया । बिन नक्ति वाला मोंपे । पक्षपात क्युं लिया ॥ क्युं० ॥ २ ॥ राव रंक एक जानो । मेरा तेरा नहीं मानो । तरन तारन ऐसा । बिरुद धार क्युं लिया ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ गुना मेरा बक्ष दिजे । मोपें एति रहेम कीजे । पक्काही नरोंसा तेरा । दिलोमें जमा लिया ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ तुही एक अंतर जामी । सुनो श्री सुपास स्वामी । अब तो आशा पुरी मेरी । कहेना सो तो कह दीया ॥ क्युं० ॥ ५ ॥ शहेर अंबाले नेटी । प्रनुजीका मुख देखी । मनुष्य जनमका लाहा । लेना सो तो ले लीया ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ उन्निसो ठासठ ठबिला । दीपमाल दिन रंगिला ॥ कहे वीरविजे प्रनु । नक्तिमें जगा दिया ॥ क्युं० ॥ ७ ॥

॥ श्रीचंपामंमन वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

चंपा मंमन सुखदाया । श्री वासुपूज्य जिन

राया ॥ आंकणी ॥ प्रभु जयादेवीके जाया । वसु रायके वंस दीपाया ॥ मिल चौसठ इंद्रे गाया । में पुन्ये दरिसण पाया ॥ श्री० ॥ १ ॥ प्रभु पंच कल्याणिक जाया । च्युति जन्म वैराग्य भराया ॥ वर नाण परमपद पाया । मंगल चंपामें गवाया ॥ श्री० ॥ २ ॥ कल्याणिक भूमि जाणी । तिरथमें चंपा गवाणी । नगरीमें वन गई राणी । ए महावीरकी वाणी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तीरथकी महिमा जाणी । संघ यात्रा करे गुणखाणी । भूमरूल महिमा गवाणी । तीरथ भेटो भवी प्राणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ यात्रा करनेकुं आवे । देस पूरवसे संघ ल्यावे । ताकी सोभा कहुं में भावें । सुणतां श्रद्धा चित्त आवे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ शहेर मुर्शिदाबाद कहाया । जिहां वसे धनपतसिंह राया । राणी मेनाकुमरी जाया । सुत महाराज बाहाडुर राया ॥ श्री० ॥ ६ ॥ मंत्रि बुद्धीके बलिया । गोपीचंद बाबु मलिया । हुल्लास बाबु मति जागी । संघ भक्ति करे वडभागी ॥श्री०॥ ७॥ यात्राकी मरजी कीनी । तव गुरुसें आज्ञा लिनी । संघपति तिलक पद लीया । सूरि विजयकमलने दीया ॥ श्री० ॥ ८ ॥ संघवीकी सोभा भारी ।

संघवण कस्तुरकुमारी । हे पुन्यकी खुवी न्यारी। चमके सकल नरनारी ॥ श्री० ॥ए॥ नेरी नंना वजावे । तब संघ सकल मिल आवे। गौरी मंगल गवरावे । सब जन चमते नावे ॥ श्री० ॥ १० ॥ ओगणिसें त्रेसठ जाणो । मगसर शुदि नवमी वखाणो । शनिवारने सिद्धी जोगे । संघ निकसे सुख संजोगे ॥ श्री० ॥११॥ सपादशत शकटानी। हस्ति घोमे गुलतानी । शेठ साहुकारने पाला । संघ लोक घणा मसराला ॥ श्री० ॥ १२ ॥ सूरि विजयकमल गुण दरिया । एकादस मुनि परि-वरिया । जपदेस करे गुणरागी । जाके धरम वासना जागी ॥ श्री० ॥ १३ ॥ हे चैत्य प्रनुका संगे । संघ दरिसण करे मनरंगे । ऐसी विधि संघकी जाणो । फेर नहीं मिले एहवो टाणो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ अनुक्रमे चंपामें आया । ओगणिसें त्रेसठ नाया । पोसवदि एकादशी लीधी । बुध-वारे यात्रा कीधी ॥ श्री० ॥ १५ ॥ यात्रा करी आनंद लीया । नरनव बहु सफला कीया । आतम आनंद रस लीया । कहे वीर विजय नर पीया ॥ श्री० ॥ १६ ॥

॥ श्रीहस्तिनापुर स्तवन ॥

॥ राग पीलु ॥

चलोरी चलो तुम चमते रंगे । तीरथ यात्रा करो मन रंगे । तीरथ जात्रा जिनवर नांखी । इन बातनमें शास्त्र हे शाखी ॥ च० ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणिक जिहां थावे । तीर्थंकर तीरथ फरमावे । जैन तीरथकी महिमा नारी । सब जीवनकुं हे हितकारी ॥ च० ॥ २ ॥ हथिणापुर में हरष घनेरा । द्वादश कल्याणिक हे नलेरा । शांति कुंथु अर जिनवर केरा । दरश करनसें कटे नव फेरा ॥ च० ॥ ३ ॥ तीरथ जात्रा विधिशुं कीजे । मनुष्य जनमका लाहा लीजे । धरम करनमें देरी न कीजे । अमृत रस सोही ऊटपट पीजे ॥ च० ॥ ४ ॥ ए तीरथकी महिमा नारी । सुनके संघने किनी त्यारी । शहेर अंबालासें संघ चलियो । मनमोहन मानुं मेलो मलियो ॥ च० ॥ ॥ ५ ॥ श्रावक जन सब संघकी सेवा । करता नक्ति शिवसुख लेवा । अनुक्रमें हथिणापुरमें आया । धवल मंगल आनंद वरताया ॥ च० ॥ ॥ ६ ॥ इषु रस निधि इंदु वत्सरमें । चैत मास के कृष्ण पक्षमें । करमवाटी पंचमी दिन आया ।

जात्रा करी सब आनंद पाया ॥ च० ॥ ७ ॥ तीरथ सेवा नित्य नित्य कीजे । फेर संसारमें नाही भमीजे । वीरविजय कहे सुकृत कीजे । आतम आनंद मुजको दीजे ॥ च० ॥ ८ ॥



॥ श्रीवीकानेरमंमन रुषभ जिन स्तवन ॥

॥ तुम चिदघन चंद आनंद लाल, ए देशी ॥

तुम आदि जिनंद मारु देवानंद । अब शरण लही प्रभु थारी ॥आंकणी॥ प्रथम नरेश्वर प्रथम जिनेश्वर प्रथम भये उपगारी मोरा० ॥ तु० ॥ १ ॥ लोक धरम मरजादाकारी । जुगलां धरम निवारी । मोरा० ॥ २ ॥ संजमधारी वरस बिन-आहारी । विचरया उग्र विहारी । मोरा० ॥ तु० ॥ ३ ॥ परिसह फोजकुं वेग विमारी । ज्ञान खम्ग कर धारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ४ ॥ शुद्ध उपयोगी अद्भुत जोगी । विषय वासना वारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अष्टापदपें आसन धारी । वरिया सदा शिव नारी ॥ मोरा० ॥ तुं० ॥ ६ ॥ प्रभुकी महीमा मुखसें कहिवा । जिभ्भली गई हारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥७॥ वीकानेरमें आदि जिनंदकी ।

मूरति मोहनगारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ८ ॥ वीर-विजय कहे प्रभुजी भेटी । दुरगति दुःख नि-वारी ॥ मोरा०॥ तु० ॥ ए ॥

वीकानेर समोसरणका स्तवन ।

॥ अपने पदको तजकर चेतन, ए देशी ॥

देखो प्रभुका अजब महोच्छव । कैसा ठाठ जमाया है। वीकानेर में संघ सकल मिल। समो-सरण विरचाया है ॥ दे० ॥ ॥ १ ॥ क्या कहुं मंरूपकी शोभा । कहे विन कोउ न रहेता है । देवलोक का एक निशाना । देखन वाला कहेता है ॥ दे० ॥ २ ॥ चौमुख समोसरण में सोहे । जिनवर मुज मन भाया है । दरिशण वाहाने देखो प्रभुकुं । कैसा ध्यान लगाया है ॥ दे० ॥ ३ ॥ चामर छत्र सिंहासन सोहे । झगमग ज्योति सवाया है । देख देखके प्रभु दरिशणकुं । नगर लोक सब आया है ॥ दे० ॥ ४ ॥ अजितनाथ प्रभुकी महिमा का । चमतकार ए पाया है । वीकानेर में आज अनोपम । धवल मंगल वर-ताया है ॥ दे० ॥ ५ ॥ गान तान सब साज मा-

नसें । भेरी नाद बजाया है । तन मन धनसें ओच्छव करके। संघ सकल हरखाया है ॥ दे० ॥ ६ ॥ सपरिवारे विजय कमलसूरि । चतुरमास जब आया है । वीकानेर में ओच्छव महोच्छव । अधिक अधिक झलकाया है ॥ दे० ॥ ७ ॥ ओगणिसें सत्तसठ आशो सुदकी । पूर्णमासी दिन आया है । वीरविजय कहे प्रभु दरिशणसें । आतम आनंद पाया है ॥ दे० ॥ ८ ॥

ओसिया नगरी श्रीवीरजिन स्तवन ।

॥ ए अरजी मोरी सैयां, ए देशी ॥

महावीरजी मुजरो लीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥ माहा० ॥ आंकणी ॥ तुं निष्कारण उपगारी । चंदनबालाकुं तारी । ऐसी नजर प्रभु कीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥ १ ॥ चंडकोसियो करमसें भारी। कीयो स्वर्ग तणो अधिकारी। युं बांह पकडकर लीजे ॥ सेव० ॥ २ ॥ संगमपें करुणा कीनी । उपसर्गमें दृष्टी न दीनी । प्रभु तारिफ केती कीजे ॥ सेव० ॥ ३ ॥ तुं ओसिया मंडन स्वामी । पुन्ये प्रभु दरिशण पामी । कहे वीरविजय संग लीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥ ४ ॥

अथ जेसलमेर जिन स्तवन ।

जिनराज वधावोरे माणक मोती हीरा लालसुं, ए देशी ॥

जेसलमेर जावोरे जात्रा करण नवी नावसुं ॥ जिनराज जुहारोरे नाव नगती बहु मानसुं ॥ आंकणी ॥ जेसलमेर में जिनवर केरा, चैत्य अनेक नलेरा । चैत्य चैत्य में सुंदर शोने, अरिहंत बिंब घनेराजी ॥ जे० ॥ १ ॥ जैन तीरथ जेसलमेर जाणी । सरधा दिल में आणी । देश देशके जात्री आवे । पुन्यवंत बहु प्राणीजी ॥ जे० ॥ २ ॥ ओगणिसें सत्तसठ मगसर सुदकी । एकादशी सोमवारे । वीकानेरसें सघ निकलियो । सरव कुटुंब परिवारेजी ॥ जे० ॥ ३ ॥ चत्ते रंगे अति उछरंगे । संघ चतुरविध चाले । सपरिवारे विजयकमल सूरि । धरम देशना आलेजी ॥ जे० ॥ ४ ॥ संघवी सिवचंद शेठ सुराणा । संघवी पद हे पुराणा । जेसलमेरकी जात्रा जातां । आनंद हरष नराणाजी ॥ जे० ॥ ५ ॥ विकट पंथने विकट उजाली । क्या कहुं उनकी कहाणी । कांटा नाठा जुरुट ऊांखरां । पूरण न मिले पाणी-

जी ॥ जे० ॥ ६ ॥ गाम गाममें गाम न आवे । जो आवे तो ढाणी । संघ मुकाम करे जंगलमें । डेरा तंबू ताणीजी ॥ जे० ॥ ७ ॥ दिनरात रस्तामें पहेरा । देता चोंकीवाला । फाढी मुंढाने मसराला । हाथमें बंदूक नाला जी ॥ जे० ॥ ८ ॥ अनुक्रमे कठिण पंथ ओलंघी । विघन रहित सब जावे । पोकरण फलोधी जात्रा करके । जेसलमेरमें आवेजी ॥ जे० ॥ ए ॥ ओगणिसें सत्सठ पोष शुदकी । दशमी मंगलवारे । जेसलमेरमें जिनवर नेट्या । आनंद मंगला च्यारेजी ॥ जे० ॥१०॥ तन मन धनसें जात्रा कीजे । नरनव लाहो लीजे । वारवार अवसर नहीं आवे । सदगुरुसें सुणिजे जी ॥ जे० ॥ ११ ॥ करमरायने विवर दीयो जब । नाग्योदय नया बलिया । वीरविजय कहे आज हमारे । मनका मनोरथ फलियाजी ॥ जे० ॥ १२ ॥



॥ श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

मति विसरो पास जिनेश्वरकुं मति विसरो । मति विसरो अंतरिक्ष पारशकुं ॥ मति० ॥ आं-

कर्णी ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदा । चरण सेवे चौसठ इंदा ॥ मति० ॥ १ ॥ आसन धोरे अधर जिणंदा । पंचमकालमें सुखकंदा ॥ मति० ॥ २ ॥ सोहे अंतरिक्ष पाश जिणंदा । ज्युं गगने सूरज चंदा ॥ मति० ॥ ३ ॥ चमतकार चौदिशमें चंगा ॥ आश पूरण सुरतरुकंदा ॥ मति० ॥ ४ ॥ ज्युं कमला दिलमें गोविंदा । ज्युं चकोर मनमें चंदा ॥ मति० ॥ ५ ॥ त्युं मुज मनमें पाशजिणंदा । नित्य रहो हरो दुख दंदा ॥ मति० ॥ ६ ॥ भाग्यहीन प्रभु में मतिमंदा । नजर करो जिन-वर इंदा ॥ मति० ॥ ७ ॥ रतनपुरी मालवमें सो-हंदा । शेठ कुंगरसी गुणकंदा ॥ मति० ॥ ८ ॥ संघ निकाला हरष आनंदा । पुन्यवान् परगट वंदा ॥ मति० ॥ ९ ॥ ओगणिसें अरूसठ वर्षे आनंदा । माघ कृष्ण द्वितीया नंदा ॥ मति० ॥ ॥ १० ॥ वीरविजय कहे पास जिणंदा । भेटी भया परमाणंदा ॥ मति० ॥ ११ ॥

॥ श्रीअजित जिन स्तवन ॥

अखियां तरूफ रही मेरी आजके । दरि-

शण देव दीजे । अखियां शांत कीजे ॥ १ ॥ अखियां बिन दरिशण जिनराजके । फुर फुर पानी वरसे । दरिशण खास तरसे ॥ २ ॥ अखियां काल अनंते बादके । तुम छबी आज देखे । सब भये काज लेखे ॥ ३ ॥ अखीयां सफल भयी मेरी आज । अजित जिनराज भेटे । सब ही पाप मेटे ॥ ४ ॥ अरजी वीरविजय की एह । अजित जिनराज लीजे । शिवपुर राज दीजे ॥ ५ ॥



॥ श्रीऊगमीयामंभन आदिजिन स्तवन ॥

॥ श्रीराग ॥

आदिजिन मूरति नयनानंद ॥ आंकणी० ॥ क्या तारीफ करुं प्रभु तुमरी । दरिशण दिठे परमाणंद ॥ आ० ॥ १ ॥ और सबी देवनकी छबी आगे । तुम छबी प्रभुजी सुखको कंद ॥ आ० ॥ २ ॥ सत्‌चित् आनंदरूप तुमारो । योगीश्वर सब ध्यान करंद ॥ आ० ॥ ३ ॥ पारंगत प्रभु तुम गुणवृंदको । त्रिभुवनमें कोण पार लहंद ॥ आ० ॥ ४ ॥ शांत रसमय मूरति भेटी । भविजन भव संसार तुरंत ॥ आ० ॥ ५ ॥ ऊगमीयामंभन दुःखखंभन । काटो कठीण करम

फंद ॥ आ० ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे आदि जिनेश्वर। आयो प्रभुजी परमाणंद ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ श्रीगंधारमंडन श्रीचिन्तामणि-पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ मेरे तो चिन्तामणि प्रभु पासजीका काम है जी ॥ ए आंकणी ॥ जलधि किनारे न्यारा, नगर गंधार सारा। चिंतामणि पास प्रभुका, जहां वडा धाम है जी ॥ मे० ॥ १ ॥ मूरति प्रभुकी मीठी, ऐसी छवी नाही दीठी । शान्त सुधारस केरा, मानुं एक ठाम है जी ॥ मे० ॥ २ ॥ दुषम कालमें स्वामी, दुःखकी है नाही खामी ॥ आनंद समाधि दीजे, मुजे वडी हाम है जी ॥ मे० ॥ ३ ॥ अखूट खजाना तेरा, थोडा वहोत करदो मेरा। सुख जनकुं देना वेतो, प्रभु तोरा काम है जी ॥ मे० ॥ ४ ॥ विरूद संभाल लीजे, मेरा तेरा नाहीं कीजे। तरण तारण ऐसा, प्रभु तोरा नाम है जी ॥ मे० ॥ ५ ॥ वीर कहे सीर नामी, सुनो हो गंधारस्वामी ॥ देना हो तो ज्ञान देदो. दुजा नही काम है जी ॥ मे० ॥ ६ ॥

निधि रस निधीन्दु वर्षे, पोस मासे सित पक्षे। चतुर्दशी दिन जेटे, एही अजीराम है जी॥ मे० ॥ ७ ॥



श्रीसीनोरमंमन सुमति जिन स्तवन।

सुखकारी, सुखकारी, सुखकारी, कृपानाथ हो जाउं वारी, सुमतिजिन सुमति सेवकने दीजियेजी॥ ए आंकणी ॥ दरिसण देव दीजे, कुमतिकुं दूर कीजे॥ एही मागुंछुं हे दातारी ॥ कृपा० ॥ १ ॥ कुमतिने कामण कीया, मुजको भरमाई दीया। इनसें छोमा दो हे सरदारी कृपा० ॥ २ ॥ पंचम अवतार लीया, दुनियांकुं तार दीया ॥ आशा पुरो कहुंछुं पोकारी ॥ कृपा० ॥३॥ निरादर नाहीं कीजे, बिरूद संभाल लीजे। तरणतारण छो हे अधिकारी ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ सीनोर मंमन नामी, सुमति जिनेश्वर स्वामी ॥ वेमी उतारो प्रभुजी हमारी ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ निधि रस निधि चंदा, संवत् है सुखकंदा । वीर विजयकुं आनंदकारी ॥ कृपा० ॥ ६ ॥



॥ अथ पदानि ॥

नेम राजुल संबंधी पद ।

॥ राग पंजाबी ठेको ॥

पीया कारण गढ गीरनार चली । राणी राजेमति व्रत चित्त धरी ॥ पी० ॥ १ ॥ अधिक प्रीत रस रीत जानके। नेम प्रिया कर सीर धरी ॥ पी० ॥ २ ॥ तप जप संजम ध्यानानलसें । करम इंधन परजाल चली ॥ पी० ॥ ३ ॥ नेम राजुलकी प्रीत पुराणी । अंतमें ज्योतीसें ज्योत मीली ॥ पी० ॥ ४ ॥ प्रह उगमते दंपती नामे । वीरविजय मन रंग रली ॥ पी० ॥ ५ ॥



॥ पद बीजुं ॥

मोरे मंदिरवा प्रभुजी न आये । नाये ऐसा जदुपति रथ फीराये ना हाथ मिलाये ॥ मो० ॥ आंकणी ॥ पशुवनपें प्रभु करुणा कीनी । क्या तकसीर मेनुं छरु दीनी ॥ मो० ॥ १ ॥ नव भव केरी प्रीत जो तोरी । सोकन शिव वधूसें दिल जोरी ॥ मो० ॥ २ ॥ राजुल राग द्वेषको छोरी । संयम लेइ करम बंध तोरी ॥ मो० ॥ ३ ॥ मन

मान्यो मोक्ष सुख पाई। वीरविजय कहे धन्य कमाई ॥ मो० ॥ ४ ॥

पद त्रीजुं।

॥ मालकोश ॥

मेनुं छमके गिरनारी गये मेरे सांही। में भुली नहीं जब पकमती दों बांही ॥ मे० ॥ १ ॥ था दिलों में दगा तव क्युं कीनी सगाई। मालिक मैंने कीनी क्या ऐसी बुराई ॥ मे० ॥ २ ॥ जूठी है बुरी है दुनियांकी सगाई। वैराग्य लियो है गिरनारीपें जाई ॥ मे० ॥ ३ ॥ बमा तप करके मोक्ष पद पाई। कहे वीर विजय धन्य उनकी कमाई ॥ मे० ॥ ४ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग सारंग ॥

घट जागी ज्ञान वैराग्यरी। तुम छंमो माया जालरी ॥ घट० ॥ आंकणी ॥ एक सहस्त्र अंतेउर जाके। रूप रूपके आगरी। मिथिला राज्य छोमके निकसे। राज ऋषि नमि रायरी ॥ घ० ॥ ॥ १ ॥ रूपकी संपद सुरपति बरनी। चक्रि

सनतकुमाररी । ठिनमें रोग जये निज तनमें । देखो कर्मकथा वरी ॥ घ० ॥ २ ॥ देखत देखत सवही विनसत । तन धन अथिर स्वजावरी । ऐसी जावना जावतही मन । ठोरु लियो वैराग्यरी ॥ घ० ॥ ३ ॥ सच्चा त्याग किये विन कवहु । पावत नहीं जव पाररी । पर परिणती त्यागो चेतन । वीर वचन चित्त धाररी ॥ घ० ॥ ४ ॥

॥ अथ सज्झायो ॥

मुनिगुण सज्झाय ।

हां देखो मुनिवर ममता मारी । जये पंच महाव्रत धारीरे ॥ हां देखो० ॥ आंकणी ॥ हिंसा जुठ चोरीने वारी । ब्रह्मचर्य व्रत धारीरे । वाह्याज्यंतर ग्रंथी निवारी । जोग तरसना गरीरे ॥ हां दे० ॥ १ ॥ तप शोपित तनु कृशधारी । जगजन आनंद कारीरे । पूजक निंदक दो शमकारी । जजते उग्र विहारीरे ॥ हां दे० ॥ २ ॥ राग द्वेषकी परिणती वारी । परिसह फोजकुं मारीरे । गुणश्रेणि गुण स्थानक धारी । ध्यानारूढ जय वारीरे ॥ हां दे० ॥ ३ ॥ शोक

मान्यो मोक्ष सुख पाई। वीरविजय कहे धन्य कमाई ॥ मो० ॥ ४ ॥

पद त्रीजुं।

॥ मालकोश ॥

मेनुं छमके गिरनारी गये मेरे सांही। में जुली नहीं जब पकमती दों बांही ॥ मे० ॥ १ ॥ था दिलों में दगा तब क्युं कीनी सगाई। मालिक मैंने कीनी क्या ऐसी बुराई ॥ मे० ॥ २ ॥ जूठी है बुरी है दुनियांकी सगाई। वैराग्य लियो है गिरनारीपें जाई ॥ मे० ॥ ३ ॥ बमा तप करके मोक्ष पद पाई। कहे वीर विजय धन्य उनकी कमाई ॥ मे० ॥ ४ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग सारंग ॥

घट जागी ज्ञान वैराग्यरी। तुम छमो माया जालरी ॥ घट० ॥ आंकणी ॥ एक सहस्र अंतेउर जाके। रूप रूपके आगरी। मिथिला राज्य छोमके निकसे। राज ऋषि नमि रायरी ॥ घ० ॥ ॥ १ ॥ रूपकी संपद सुरपति बरनी। चक्रि

सनतकुमाररी । छिनमें रोग भये निज तनमें । देखो कर्मकथा बरी ॥ घ० ॥ २ ॥ देखत देखत सबही बिनसत । तन धन अथिर स्वभावरी । ऐसी भावना भावतही मन । छोरू लियो वैराग्यरी ॥ घ० ॥ ३ ॥ सच्चा त्याग किये बिन कबहु । पावत नहीं भव पाररी । पर परिणती त्यागो चेतन । वीर वचन चित्त धाररी ॥ घ० ॥ ४ ॥

॥ अथ सज्झायो ॥

मुनिगुण सज्झाय ।

हां देखो मुनिवर ममता मारी । भये पंच महाव्रत धारी रे ॥ हां देखो० ॥ आंकणी ॥ हिंसा झुठ चोरीने वारी । ब्रह्मचर्य व्रत धारी रे । बाह्याभ्यंतर ग्रंथी निवारी । भोग तरसना छारी रे ॥ हां दे० ॥ १ ॥ तप शोषित तनु कृश-धारी । जगजन आनंद कारी रे । पूजक निंदक दो शमकारी । भजते उग्र विहारी रे ॥ हां दे० ॥ २ ॥ राग द्वेषकी परिणती वारी । परिसह फोजकुं मारी रे । गुणश्रेणि गुण स्थानक धारी । ध्यानारूढ भय वारी रे ॥ हां दे० ॥ ३ ॥ शोक

संतापको दूर निवारी। एकमगनता धारी रे। छिनमें निज आतमको तारी। भजते भवदधि पारी रे ॥ हां दे० ॥ ४ ॥ ऐसे मुनिवर हे व्रत-धारी। आतम आनंद कारी रे। वीर विजय कहे हुं बलिहारी। नमुं नमुं सो सो वारी रे ॥ हां दे० ॥ ५ ॥



गुरुदेवकी सज्झाय।

॥ रेखता ॥

विजे आनंद सूरि राया। पूरवले पुन्यसें पाया। चतुरविध संघमे धोरी। गुरुजीसें वंदना मोरी ॥ वि० ॥ १ ॥ गुणषट्त्रिंशके धरता। अहो उपगारके करता। धरमकी टेक हे भारी। गुरु है बाल ब्रह्मचारी ॥ वि० ॥ २ ॥ गुरुजी ज्ञानके धरता। कुमतके मानको हरता। देखके वादी सब डरता। न सन्मुख पेर को धरता ॥ वि० ॥ ॥ ३ ॥ शीतलता चंद्रमा जैसी। मेरु सम धीरता ऐसी ॥ सायर गंभीर नहीं ऐसा। गुरु गंभीर है जैसा ॥ वि० ॥ ४ ॥ कंचन और काच सम माने। नारीको नागिणी जाने ॥ अंतरगत मोह सब छारी। गुरु उदासीनता धारी ॥ वि० ॥ ५ ॥ ऐसे गुरु-

राजजी केरा । चरणमें चित्त हे मेरा । सेवक कहे वीर कर जोडी । लंघावो पार मुज बेडी ॥ विजे० ॥ ६ ॥

कर्मविपाक सज्झाय ।

॥ अडल छंद ॥

श्रीगुरुविजयानंद चंद वंदन करी । सुनो करमकी बात कहुं गुरुसे लही । सब दुःख देवनहार करम दुष्कृत तजो । शासन के सिरदार श्री वीर चरण भजो ॥ १ ॥ तीर्थंकर बल चक्री हरि नृप जे थया । कर्मतणे वस तेह सवी संकट लीया । आदीसर अरिहंत संत अनंत बली । एक वरस बिन आहार भुख तरिषा सही ॥ २ ॥ विप्र घेरे अवतार वीर विभूने लीया । करम न छोडे लिगार पूरव जो मद कीया । चक्री सनतकुमार रोग बहुला लही । करमतणी गत जाय कहो ते किम कही ॥ ३ ॥ लक्ष्मण राजन रामचंद्र सीता सती । बार वरस वनवास दुष्ट करमगति । द्वारावती भयी दाहसें कृष्ण जादवपति । लंकाभ्रष्ट लंकेश करमगति नहीं मिटी ॥ ४ ॥ पांडुराय के पुत्र पंच पांडव भला । हारी द्रुपदी नार प्रगट खेली जुवा । बार वरस वनवास दासपणे

ते रही । करम न करशो कोई बात प्रजुने कही ॥ ५ ॥ सती सुजड्रा नार दूजी अंजना सती । करम तणें परजाव कलंक चम्यो अति । चारों चौट बिच विकी चंदना सती । करम विना कहो कौन करे ऐसी गति ॥ ६ ॥ राजा हरिचंद निच घरे नोकरी करे । राणी सुतारा निच घरे पानी जरे । सती सीरदार दोनुने दुःख लह्यु । करम मरम सब जाणजो सिद्धांते कह्यु ॥ ७ ॥ ऐसें करम विपाक देखी जवसें मरो । दुखके देवनहार करम कोई ना करो । ए उपदेश है लेश जवी जो चित्त धरे । वीरविजय कहे तेह जवी जवजल तरे ॥ ८ ॥ संवत् ओगनिसे साल तेवंजा मन रली । आसो सुदिकी त्रिज तिथी जयी निरमली । नगर स्यारपुर बिच चौमासुं रही करी । करम कथा कही एह सुनो सब दिल धरी ॥ ए ॥

॥ त्याग सज्झाय ॥

तुम ठोमो जगतके यारा । इनसें नहीं हो निस्तारा ॥ आंकणी ॥ धन कण कंचनकी कोमी । गये वमे वमे सब ठोमी । सुत मात तात अरु ज्रात । जगतके ठाठ, अंतमें न्यारा ॥ इन० ॥ १ ॥ ए

दुनियां दुखकी खानी । जिहां राग द्वेष है पानी । ए महावीर की वानी । हे खुरक स्वादका स्वाद, नहीं आबाद, बमा दुख जारा ॥ इन० ॥ २ ॥ ठरु मोह पास गले माारा । प्रभु नाम पकमले प्यारा । करले गुरु ज्ञान विचारा । ए सो बातन की बात, रहेगी लाज । सवी सुख सारा ॥ इन० ॥ ३ ॥ वैराग्यकी बातां दाखी । विषयों में म करो ऊांखी । कहे वीर विजय में शाखी । है सब दुखोंका मूल, नहीं अनुकूल, ठमो मेरे प्यारा ॥ इन० ॥ ४ ॥



॥ श्रीनेम राजुल सज्झाय ॥

तूं ठमदे स्वामी शिव शोकनको संग ॥ आंकणी ॥ बहोत बरातसें व्याहन आये । ते अब क्युं पावत जंगरे ॥ तुं० ॥ १ ॥ सतीव्रत धारी में बाल कुमारी । ते करक्षे मुजसु रंगरे ॥ तुं० ॥ २ ॥ शिव रमणिकी कुमी हे करणी । ते परणी सिद्ध अनंतरे ॥ तुं० ॥ ३ ॥ कामणगारी डुख देन हारी । ते करती रंगमें जंगरे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ मोमन मतियां तो हमरी क्या गतियां । ठतियां होत हे जंगरे ॥ तुं० ॥ ५ ॥ विनती न धारी

चली गिरनारी । राजुल नेमी संगरे ॥ तुं० ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे नेम ने राजुल । पाये सुख अनं- गरे ॥ तुं० ॥ ७ ॥

॥ अथ गुंहली ॥

॥ सेवो नवियण जिन त्रेवीसमोरे, ए देशी ।

गुरु मारा गाम नगर पुर विचरंता रे । बहु शिष्य ने परिवार । ज्ञान अमृत जले करी सींच- तारे । हिंसता नविक कमल संघात । हुं बलि- हारी ए गुरुराजनीरे ॥ आंकणी ॥ १ ॥ अवसर क्षेत्र फरसना करीरे । पालीताणा नगर मोजार । सिद्धक्षेत्र सिद्धाचल नेटवारे । आव्या आतम- राम अणगार ॥ हुं० ॥ २ ॥ पंच समिति तिन गुप्ति बिराजतारे । धरता धरमतणुं एक ध्यान । हरता मोह दशा महा फंदनेरे । करता ज्ञान ध्यान एक तान ॥ हुं० ॥ ३ ॥ पंचम कालमें कुगुरु सोहलारे । दोहला सुगुरु तणा देदार । पामी नव्य जीव तुमे सांनलोरे । नगवती सूत्र तणो अधिकार ॥ हुं० ॥ चातकने मन जलधर चाहनारे । कामनीने मन कंथनी चाह । तेम मारा

गुरुजीनी वाणी उपरेरे। श्रोता जननी प्रीति अथाह ॥ हुं० ॥५॥ गुणवती सहीयर सब टोले मलीरे। आवती गुरुजीने दरबार। चउगति चूरण साथियो पुरतारे। गावता गुंहली गीत रसाल ॥ हुं० ॥ ६ ॥ गुरुजीना चरणकमलनी उपरेरे। भमरपरे मुनिगणनो वृंद। लेता सद्गुण रूपी वासनारे। देता वीरविजयने आणंद ॥ हुं० ॥७॥

॥ गुंहली बीजी ॥

सुनोरे सखी एक वीनतीरे। आज आनंद अपार। चालो वंदन चलिये ॥ आंकणी ॥ गाम नगर पुर विचरंतारे। बहु शिष्यने परिवार ॥ चा० ॥ ॥ १ ॥ अनुक्रमे आवी बिराजीयारे। राजनगरके मोझार ॥ चा० ॥ आतमराम आनंदविजेजी। अनुपम नाम रसाल ॥ चा० ॥ २ ॥ पठन करावता शिष्यनेरे। ज्ञान ध्यान एकतान ॥ चा० ॥ ज्ञान क्रिया करी शोभतारे। ए गुरु गुण मणिमाल ॥ चा० ॥ ३ ॥ मधुरी दिये गुरु देशनारे। भव भय भंजणहार ॥ चा० ॥ सुणतां समकित उपजेरे। मिथ्या तिमिर विनाश ॥ चा० ॥ ४ ॥

संघ सकल आग्रह करी रे । विनती करे मनोहार ॥ चा० ॥ ज्नव्य जीव प्रतिबोधवारे । गुरुजी करे चौमास ॥ चा० ॥ ५ ॥ संघ सकल हवे आदेरे । जिन ज्नक्ति बहुमान ॥ चा० ॥ नवनवी पूजा प्रज्नावनारे । अठाई महोच्छव ठाठ ॥ चा० ॥ ६ ॥ समकीत नीरमल जेहथीरे । तेह तणा बहुमान ॥ चा० ॥ ओच्छव रंग वधामणारे । वर्त्या छे जय जयकार ॥ चा० ॥ ७ ॥ सहीयर सवी टोले मलीरे । आवे गुरु दरबार ॥ चा० ॥ चहुं गति चुरण साथीयोरे । करती गुरुने पाय ॥ चा० ॥ ८ ॥ गुणवती गावे घोवलीरे । ज्नाव ज्नले उदार ॥ चा० ॥ राजनगरमें हुई रहारे । आनंद मंगल ठाठ ॥ चा० ॥ ए ॥ उत्तम गुरु गुण गावतांरे । ज्नांगे ज्नवनी पास ॥ चा० ॥ वीरविजय मुनि हुई रहारे । आतम लक्ष्मीके दास ॥ चा० ॥ १० ॥

॥ गुंहली त्रीजी ॥

॥ झिणा झरमर वरसे मेह न्निंजे मारी चुंदमली, ए देशी ॥

सखी अंतरगतनी वात सुण सोभागीरे। गुरु गुण गावाने आज मुने रढ लागीरे ॥ आंकणी ॥ धन गुरु दाताने धन गुरु देवा। विजय आनंदसूरि रायरे। धन तेहना परिवारनेरे कांई। लली लली लागुं पाय गुरु उपगारीरे। देइ शुद्ध धरम उपदेश दुनियां तारीरे। सखी० ॥ १॥ पंच महाव्रत लही करिरे। पामी गुरु आदेसरे। पंजाब देश पावन कीयो गुरु। पुरी मननी टेक पुरण प्रीते रे। कीयो ढुंढकनो उच्छेद आगम रीतेरे ॥ सखी० ॥ २ ॥ मरुधर मालव देशमांरे। मुनि मंडलनी साथरे। मधुरी वाणीये गाजतारे कांइ। करता बहु उपगार आतम हेतेरे। गुरु षटकायके प्रतिपाल संजम लेखेरे ॥ सखी० ॥ ३ ॥ ज्ञानि गुरुजीना ज्ञानथीरे गुण पर मतमें थायरे। राणीजीना राजथीरे। कांइ पुस्तक भेटणुं आय गुरुने संगेरे। थयो महीमा धरमनो जेह चडते रंगेरे ॥ सखी० ॥ ॥ ४ ॥ गुणवाली गुजरातमांरे। ग्राम नगर पुर जेहरे। गुरुजी हमारे गुण बहु कीधो। दीधो धरम उपदेश सांभली बुझारे। केइ भव्य जीवना थोक संजम लीधारे ॥ सखी० ॥ ५ ॥ सद्गुरु सिद्धाचलजी भेटी। जनमनो लाहो लीधरे। संघ

चतुरविध मली करीरे । सूरि पदवी दीध गुरुजी ने रंगेरे । ओगणिसें बेतालीस अधिक उमंगेरे ॥ सखी० ॥ ६ ॥ एम अनेक गुण गुरुजी केरा कहेतां नावे पाररे । पंचमे आरे परगट करता । गुरुजी बहु उपगार एहने सेवोरे । ए गुरुजीनो संयोग मोक्षनो मेवोरे ॥ स० ॥ ७ ॥ दरजावतीमें रही चौमासुं ओगणिसें बेतालीसरे । वीरविजय कहे सेविये रे कांइ । ए गुरु विसवावीस मनने जावेंरे। कांइ ए संसारनुं दुख फेर नहीं आवेरे ॥ सखी० ॥ ८ ॥



॥ गुंहली चोथी ॥

लघुवय जोग लीयोरे, ए देशी ॥ विजयानंद सूरिरायनांरे । केतां करूंरे वखाण । गुरुजीये ज्ञान दियोरे । जव्य जीव प्रतिबोधवारे । मानुं उग्यो जाण अघ तम दूर कीयोरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पालतारे मालता निजगुण मांहि ॥ गु० ॥ पर पदारथ जालमांरे । गुरुजी पेसता नांहि ॥ गु० ॥ २ ॥ अध्यातम रस ऊीलतारे । पीलता पाप करंरु ॥ गु० ॥ अनुजव ज्ञानथी जाणतारे ।

मोह दशा महाफंद ॥ गु० ॥ ३ ॥ अशुभ योग निवारतारे करता करम निकंद ॥ गु० ॥ स्वपर सत्ता भावतारे । चैतन्य जडनो संग ॥ गु० ॥ ४ ॥ वस्तुस्वभाव निहालतारे । एक अनेकनो रंग ॥ गु० ॥ नित्यानित्य विचारता रे । भेदाभेदनो भंग ॥ गु० ॥ ५ ॥ तत्त्वातत्त्वने खोजतारे । खेंचता निज सुख चंग ॥ गु० ॥ ज्ञान क्रिया रस झीलतारे । मनमें धरिय उमंग ॥ गु० ॥ ६ ॥ करी उपगार भूमंडलेरे । लीधो लाभ अभंग ॥ गु० ॥ आप तर्यां पर तारिनेरे । स्वर्गि थया सुख कंद ॥गु०॥ ७ ॥ पुन्यसंयोगे पामीये रे । एहवा गुरुनो संग ॥ गु० ॥ वीरविजय कहे गुरु तणोरे । रहेजो अविचल रंग ॥ गु० ॥ ८ ॥

गुंहली पांचमी ।

॥ कंगना खुलदानही महाराय, ए चाली ॥

विजयानंदसूरि महाराय । जिनके नामसें मंगल थाय ॥ वि० ॥ आंकणी ॥ समता सागरके विसरामी । कंचन कामिनिके नहीं कामी ॥ नामी सब दुनियांमें थाय ॥ वि० ॥ १ ॥ संजम मारगमें बहुरागी । छोड परिग्रह भये वैरागी ॥ त्यागी

जगमें नाम धराय ॥ वि० ॥ २ ॥ सब कुपंथ त्याग कर दीया । अपना जनम सफल कर लीया । पूजो ऐसें गुरुके पाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ सत उपदेशही सबको दीया । सत मारग सो थापन कीया । ऐसे जग उपकारी थाय ॥ वि० ॥ ४ ॥ चलो सखी दरिशनको जावें । देख वदन आनंद भर पावे । ऐसे नहीं कोई राणे राय ॥ वि० ॥५॥ सखियां मिल आनंद भरपूरे । गुरुचरणोमें गुंहली पुरे । आनंद वीर विजयको थाय ॥ वि० ॥ ६ ॥



॥ श्रीगौतम स्वामीकी गुंहली ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर मरुदेवी नंदा, ए देशी ॥

गौतम स्वामी शिवसुख कामी । गुण गाउं सीर नामी रे । गुरु गौतमस्वामी ॥ ए आंकणी ॥ जीव सत्ताका संशय पडिया । वीरचरण जइ अडियारे ॥ गु० ॥ १ ॥ हुवा गणधारी शंका निवारी । प्रभुजीये त्रिपदी आलीरे ॥ गु० ॥ २ ॥ चौद पूरवकी रचना कीनी । जग जश कीरती लीनीरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ लब्धि बलिया अष्टापद चडिया । वीरवचन रस भरियारे ॥ गु० ॥ ४ ॥

गुरुजी जात्रा करके वलिया । पन्नरसें तापस मलियारे ॥ गु० ॥ ५ ॥ संजम लेवा विनती कीनी । गुरुजीयें दिक्षा दीनीरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वीर प्रभुका दरिशण चलिया । केवल लक्ष्मी वरियारे ॥ गु० ॥ ७ ॥ एम अनेक शिष्यकुं तारी ॥ ए गुरुकी बलिहारीरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ सखियां सघली गुंहली गावे। गौतम स्वामीकी जावे रे ॥ गु० ॥ ए ॥ वीर प्रभुका राग निवारी । आतम एकता धारीरे ॥ गु० ॥ १० ॥ केवल पाइ मोक्ष पद पाया । पृथ्वीमाताका जायारे ॥ गु० ॥११॥ ओगणिसें सम्सठ संवत् पाया । दीवाली दिन आयारे ॥ गु० ॥ १२ ॥ वीरविजय गौतम गुण गाया । बीकानेर जब आयारे ॥ गु० ॥ १३ ॥

॥ श्रीकल्पसूत्र की गुंहली ॥

॥ सहीयर सुणियेरे, जगवती सूत्रनी वाणी, ए देशी ॥

जवियण सुणजोरे, कल्पसूत्रनी वाणी ॥ मीठी लागेरे वाणी अमीय समाणी ॥ आंकणी ॥ कल्पसूत्रनी मोटी महिमा, वीर जिणंद वखाणे ॥

गौतम गणधर वीर वचनने हृदय कमलमां धारे ॥ ज्ञवि० ॥ १ ॥ अरिहंत सम नहीं देव जगतमें, पदमें परमपद मोटुं । तीरथमें शत्रुंजय जाणो, सूत्रमें कल्प वखाणो ॥ ज्ञवि० ॥ ॥ २ ॥ देवगणोमें इंद्र ठे मोटा, तारागण में चंद्र ॥ न्याय नीतिमें राम वखाणो, काम स्वरूपमें जाणो ॥ ज्ञवि० ॥ ३ ॥ रूपवतीमें रुक्मि रंज्ञा, वाजित्रमें जेम ज्ञंज्ञा। गजवरमें ऐरावण कहिये, युद्धमें रावण लहिये ॥ ज्ञवि० ॥ ४ ॥ बाणावली में अर्जुन बलियो, गुणमें विनय ज्युं ज्ञणियो । मंत्रमांहि नवकारज जाणो, बुद्धिमें अज्ञय गवाणो ॥ ज्ञवि० ॥ ५ ॥ सर्व वृक्षमें कल्प वृक्ष जेम, अधिक बमाई धारे । सर्व सूत्रमें कल्पसूत्र तेम, पाप कलंक निवारे ॥ ज्ञवि० ॥ ६ ॥ कल्पसूत्र जे ज्ञणशे गणशे, तिसत्त वार सांज्ञलशे ॥ वीर कहे सांज्ञलजो गौतम, ते ज्ञवसायर तरशे ॥ ज्ञवि० ॥ ७ ॥ निधि रस निधि इंदु वत्सरमें, रही सीनोर चौमासुं ॥ वीरविजय कहे वीरप्रज्ञुकी, वाणीमें नहीं काचुं ॥ ज्ञवि० ॥ ८ ॥

॥ समाप्त ॥



॥ ॐ वन्दे वीरम् ॥

श्रीउदयरत्नजी कृत चोविशी ।

ऋषभ जिन गीत.

वार वार रे वीठल वंश मुने तो न गमेरे, ए देशी ।

मरुदेवीनो नंद माहरो, स्वामी साचोरे । शिव वधूनी चाह करो तो, एहने याचोरे ॥म०॥ ॥ १ ॥ केवल काचना कुपा जेहवो, पिंड काचोरे । सत्य सरुपी साहिबो एहने, रंगे राचोरे ॥ म० ॥ ॥ २ ॥ यम राजाना मुखडा उपर, देइ तमाचोरे । अमर थइ उदयरत्न प्रभुशुं, मिली माचोरे ॥ म० ॥ ३ ॥

श्रीअजितनाथ जिन गीत ।

विषयने विसारी, विजयानंदन वंदोरे । आनंद पदनो ए अधिकारी, सुखनो कंदोरे ॥ वि० ॥१॥ नाम लेतां जे निश्चय फेडे, भवनो फंदोरे । जनम मरण जराने टाली, दुखनो दंदोरे ॥ वि० ॥ २ ॥ जग जीवन जे जग जयकारी, जगती चंदोरे । उद-

१ फन्द । २ टाले ।

यरत्न प्रभु पर उपगारी, परमानंदोरे ॥वि० ॥३॥



श्रीसंभवनाथ जिन गीत ।

दीन दयाकर देव, संभवनाथ दीठोरे । साकरने सुधा थकी पण, लागे मीठोरे ॥ दी० ॥१॥ क्रोध रह्यो चंमालनी परे, दूर धीठोरे । अज्ञान रूप अंधकारनो हवे, वेग नीठोरे ॥ दी० ॥ २ ॥ भली परे भगवंत मुने, भगते तूठोरे । उदय कहे माहरे आज दूधे, मेह वूठोरे ॥ दी० ॥ ३ ॥



श्रीअभिनंदन जिन गीत ।

सिद्धार्थाना सुतना प्रेमे, पाय पूजोरे । दुनिया मांहि एह सरिखो, देव न दूजोरे ॥ सि० ॥ १ ॥ मोहरायनी फोज देखी, कां तूमे धूजोरे । अभि-नंदनने ओठे रहीने, जोरे झूझोरे ॥ सि० ॥ २ ॥ शरणागतनो ए अधिकारी, बूझो बूझोरे । उदय प्रभुशुं मली मननी, करीये गुंझोरे ॥ सि० ॥ ३ ॥



श्रीसुमति जिन गीत ।

सुमतिकारी सुमतिवारु, सुमति सेवोरे । कु-

१ खूझ्यो । २ गुह्य=छानी वातो ।

मतिनुं जे मूल कापे, देव देवोरे ॥ सु० ॥ १ ॥ भव जंजीरना बंध दे भागी, देखतां खेवोरे। दरशन तेहनुं देखवा मुहने, लागी टेवोरे ॥सु०॥२॥ कोडि सुमंगलकारी सुमंगला, सुत एहवोरे। उदय प्रभु ए मुजरो माहरो, मानी लेवोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

श्रीपद्मप्रभु जिन गीत।

लाल जासूना फूलसो वारु, वान देहनोरे। भुवन मोहन पद्म प्रभु, नाम जेहनोरे ॥ला० ॥१॥ बोध बीज वधारवा जेम, गुण मेहनोरे। मन वचन काया करी हुं, दास तेहनोरे ॥ ला० ॥ २ ॥ चंद चकोर परे तुजने चाहुं, बांध्यो नेहनोरे। उदय कहे प्रभु तुं विण नहीं, आधीन केहनोरे ॥ला०॥३॥

श्रीसुपार्श्व जिन गीत।

सुपासजी ताहरुं मुखडुं जोतां, रंग भीनोरे। जाणे पंकजनी पांखडी उपर, भ्रमर लीनोरे[1]॥सु०॥१॥ हेत धरी में ताहरे हाथे, दिल्ल दीनोरे। मनडा मांहि आव तुं मोहन, मेहली कीनोरे ॥ सु० ॥ २ ॥ देव बीजो हुं कोइ न देखुं, तुज समीनोरे। उदय रत्न कहे मुज प्रभु ए, छे नगीनोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

---

१ भ्रमर।

श्रीचंद्रप्रभु जिन गीत।

चंद्रप्रभुना मुखनी सोहे, कान्ति सारीरे। कोडि चन्द्रमा नाखुं वारी, हुं बलिहारीरे॥ चं०॥ १॥ श्वेत रजतसी ज्योति बिराजे, तननी ताहरीरे। आशक थइ ते उपर भमे, आंखडी माहरीरे॥ चं०॥ २॥ भाव धरी तुजने भेटे जे, नर ने नारीरे। उदयरत्न प्रभु पार उतारे, भवजल तारीरे॥ चं०॥ ३॥

श्रीसुविधि जिन गीत।

सुविधि साहिबशुं मन्न माहरुं, थयुं मगन्नरे। जिहां जोउं तिहां तुजने देखुं, लागी लगन्नरे॥ सु०॥ १॥ मनडामां जिम मोर इच्छे, गाजें गगन्नरे। चितडामां जिम कोयल चाहे, मास फग-न्नरे॥ सु०॥ २॥ एहवी तुजशुं आसकी मुने, भरुं डग नरे। जोर जस फोजनो तुं, एक ठगनरे॥ सु०॥ ३॥ पंच इन्द्रि रूप चून्नोजे, करीय नगनरे। उदयरत्न प्रभु मिली तेशुं, खाय सोग-नरे॥ सु०॥ ४॥

श्रीशीतल जिन गीत ।

शीतल शीतलनाथ सेवो, गर्व गालीरे। भव दावानल भंजवाने, मेघमालीरे ॥ शी० ॥ १ ॥ आश्रव रुंधी एक बुद्धि, आसन वालीरे। ध्यान एहनुं मनमां धरो, लेइ तालीरे ॥ शी० ॥ २ ॥ कामने वाली क्रोधने टाली, रागने रालीरे। उदय प्रभुनुं ध्यान धरंतां, नित दीवालीरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

श्रीश्रेयांस जिन गीत ।

मूरति जोतां श्रेयांसनी म्हारूं, मनडुं मोह्युंरे। भावे भेटतां भवना दुखनुं, खांपण खोयुंरे ॥ मू० ॥ १ ॥ नाथजी माहरी नेहनी नजरे, सामुं जोयुंरे। महिर लहि माहाराजनी में तो, पाप धोयुं रे ॥ मू० ॥ २ ॥ शुद्ध समकित रूप शिवनुं, बीज बोयुंरे। उदयरत्न प्रभु पामतां भाग्य, अधिक सोह्युंरे ॥ मू० ॥ ३ ॥

श्रीवासुपूज्य जिन गीत ।

जूओ जूओरे जयानंद जोतां, हर्ष थयोरे। सुर गुरु पण पार न पामे, न जाय कह्योरे ॥ जू० ॥ १ ॥ भव अटवीमां भमतां बहु, काल गयोरे।

कोइ पुण्य कलोलथी अवसर में, आज लह्योरे। ॥ जू० ॥ २ ॥ श्रीवासुपूज्यने वंदतां सघलो, दुख दह्योरे। उदयरत्न प्रभु अंगीकरीने, बांहि ग्रह्यो रे ॥ जू० ॥ ३ ॥

श्रीविमल जिन गीत ॥

विमल ताहरुं रूप जोतां, रढ लागीरे।
दुखडां गयां विसरीने, सूखडी जागीरे ॥ वि० ॥१॥
कुमतिये माहरी केड तजी, सुमति जागीरे।
क्रोध मान माया लोभे, शीख मागीरे ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ पंच विषय विकारनो हवे, थयो त्यागीरे।
उदयरत्न कहे आजथी हुं तो, ताहरो रागीरे ॥ वि० ॥ ३ ॥

श्रीअनंत जिन गीत ॥

अनंत ताहरा मुखडा उपर, वारी जाउंरे।
मुगतनी मुने मोज दीजे, गुण गाउंरे ॥ अ० ॥१॥
एक रसो हुं तलसु तुने, ध्यान ध्याउंरे। तुज मिलवाने कारण ताहरो, दास थाउंरे ॥ अ० ॥ २ ॥
भजन ताहरो भवो भव, चित्तमां चाहुंरे। उदय रत्न प्रभु जो मिले तो, भेटी साहुंरे ॥अ० ॥ ३ ॥

श्रीधर्मनाथ जिन गीत ॥

वारुरे वाहला वारु तुं तो, मे दिलवाहीरे । मुजने मोह लगाड्यो पोते,बेपरवाहीरे ॥ वा० ॥१॥ हवे हुं हठ लइ बेठो, चरण साहीरे । केइ पेरे मेलावशो कहोने, द्यो बताईरे ॥ वा० ॥ २ ॥ कोड़ गमे जो तुज्जशुं, करूं गहिलाईरे । तोपण तुं प्रभु धर्म धारी, ल्यो निवाहीरे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तु ताहरा अधिकार साहमुं, जोने चाहिरे । उदय प्रभु गुण हीननें तारतां, छे वडाइरे ॥ वा० ॥ ४ ॥



श्रीशान्तिनाथ जिन गीत ।

पोसहमां पारेवडो राख्यो, शरण लेइरे । तन साटे जीवाड्यो अभय, दान देइरे ॥ पो० ॥ १ ॥ अनाथ जीवना नाथ कहावे, गुणनो गेहीरे । तो मुजने प्रभु तारतां कहो, ए वात केहीरे ॥ पो० ॥ २ ॥ गरीबनिवाज तुं गरुओ साहिब, शान्ति सनेहीरे । उदयरत्न प्रभु तुजशुं बांधी, प्रीत अछेहीरे ॥ पो० ॥ ३ ॥

---

१ गांडाइ । २ कबुतर ।

श्रीकुंथु जिन गीत ।

वाइ वाइरे अमरी वीण वाजे, मृदंग रणकेरे । ठमक पाय बिछुवा ठमके, नेरी नणकेरे ॥ वा० ॥१॥ घम घम घम घुघरी घमके, झांझरी झमकेरे। नृत्य करती देवंगना जाणे, दामनी दमकेरे ॥ वा० ॥२॥ दौ दौ किंदौ दुंदुभि बाजे, चूडी खलकेरे । फूदडी लेतां फूमती फरके, झाल झबूकेरे ॥ वा० ॥३॥ कुंथु आगे इम नाच नाचे, चालने चमकेरे । उदय प्रभु बोध बीज आपो, ढोलने ढमकेरे ॥ वा० ॥ ४ ॥



॥ श्रीअरजिन गीत ॥

अरनाथ ताहरी आंखडीये मुज, कामण कीधुंरे । एक व्हेजामां मनडुं माहरुं, हरि लीधुंरे ॥ अ० ॥ १ ॥ तुज नयणे वयणे माहरे, अमृत पीधुंरे । जन्म जरानुं जोर भाग्युं, काज सीध्युंरे ॥ अ० ॥ २ ॥ दुरगतिनां सरवे दुःखनुं हवे, द्वार दीधुंरे । उदयरत्न प्रभु शिव पंथनुं में, सबल लीधुंरे ॥ अ० ॥ ३ ॥



श्रीमल्लिनाथ जिन गीत ।

तुज सरीखो प्रभु तुंज दीसे, जातां घर-मांरे। अवर देव कुण एहवो वलियो, हरि हरमांरे ॥ तु० ॥ १ ॥ ताहरो अंगनो लटको मटको, नारी नरमांरे । मही मंडलमां कोइ नावे, माहरा हरमांरे ॥ तु० ॥ २ ॥ मल्लि जिन आवीने माहरा, मन मंदिरमांरे । उदयरत्न प्रभु आवी वसो, तु निजरमांरे ॥ तु० ॥ ३ ॥

श्रीमुनिसुव्रत जिन गीत ।

मुनिसुव्रत माहराज माहरा, मननो वासीरे। आशा दासी करीने थयो, तुं उदासीरे ॥ ॥ मु० ॥ १ ॥ मुगति विलासी तुं अविनाशी, भवनी फांसीरे । भंजीने भगवंत थयो तुं, सहज विलासीरे ॥ मु० ॥ २ ॥ चौद राज प्रमाण लोका-लोक प्रकासीरे । उदयरत्न प्रभु अंतर-जामी, ज्योति विकासीरे ॥ मु० ॥ ३ ॥

श्रीनमिनाथ जिन गीत ।

नमि निरंजन नाथ निर्मल, धरुं ध्यानेरे ।

सुंदर जेहनो रूप सोहे, सोवन वानेरे ॥ न० ॥ १ ॥ वेण ताहरा हुं सुणवा रसीओ, एक तानेरे । नेण माहरा रह्यांछे तरसी, निरखवानेरे ॥ न० ॥ २ ॥ एक पलक जो रहस्य पामुं, कोइक थानेरे । हुं तुं अंतरमें हली मलुं, अभेद ज्ञानेरे ॥ न० ॥ ३ ॥ आठ पहोर हूं तुज आराधुं, गावुं गानेरे । उदयरत्न प्रभु निहाल कीजे, बोधि दानेरे ॥ न० ॥ ४ ॥



श्रीनेमिनाथजिन गीत ।

बोल बोलरे प्रीतम मुजशुं बोल, मेल आंटोरे । पगले पगले पीरू मुजने, प्रेमनो कांटोरे ॥ बो० ॥ १ ॥ राजेमती कहे छोरू छबीला, मननो गांठोरे । जिहां गांठे तिहां रस नही जिम, शेलडी सांठोरे ॥ बो० ॥ २ ॥ नव भवनो मुने आपने नेमजी, नेहनो आंटोरे । धोयो किम धोवाय जादवजी, प्रीतनो छांटोरे ॥ बो० ॥ ३ ॥ नेम राजुल बे मुगति पोहतां, विरह नाठोरे । उदयरत्न कहे आपने स्वामी, भवनो कांठोरे ॥ बो० ॥ ४ ॥



श्रीपार्श्व जिन गीत ।

चाल चालरे कुमर चाल ताहरी, चाल गमेरे ।

तुज दीठडा विना मीठडा माहरा, प्राण जमेरे ॥ चा० ॥ १ ॥ खोला मांहि पड्तुं मेहले, रीसे दमेरे। मावडी विना आवडुं खुंधुं, कुण खमेरे ॥ ॥ चा० ॥ २ ॥ माता वामा कहे मुखडुं जोतां, दुःखडां शमेरे, लळी लळी उदयरत्न प्रभु, तुजने नमेरे ॥ चा० ॥ ३ ॥

श्रीमहावीर जिन गीत ।

आव आवरे माहरा मनडा मांहे, तुं छे प्यारोरे। हरि हरादिक देव हुंती, हुं छुं न्यारोरे ॥ आ० ॥ १ ॥ अहो महावीर गंभीर तुं तो, नाथ माहरोरे । हुं नमुं तुने गमे मुने, साथ ताहरोरे। ॥ आ० ॥२॥ साही साहीरे यीठडा हाथ माहरा, वैरी वारोरे । द्ये द्ये रे दर्शन देव मुने, द्येने लारोरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ तुं विना त्रिलोक में केहनो, नथी चारोरे। संसार पारावारनो स्वामी, आपने आरोरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ उदयरत्न प्रभु जगमें जोतां, तुं छे तारोरे। तारताररे मुने तार तुं, संसार सारोरे ॥ आ० ॥ ५ ॥

इति श्रीउदयरत्नजीकृता चोविशी संपूर्णा ॥

अथ श्रीयशोविजयोपाध्यायकृत चोविशी।

श्रीऋषभजिन स्तवन।

(महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं, ए देशी)

जगजीवन जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लालरे। मुख दीठे सुख उपजे, दरिशण अतिहि आणंद लालरे ॥ ज० ॥ १ ॥ आंखडी [1]अंबुज पांखडी, [2]अष्टमीशशिसम भाल लालरे। [3]वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाल लालरे ॥ ॥ ज० ॥ २ ॥ लक्षण अंगे विराजतां, [4]अडहिय सहस उदार लालरे। रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र रवि गिरी तणा, गुण लेइ घडीउं अंग लालरे। भाग्य किहां थकी आवीउं, अचरिज एह उत्तंग लालरे ॥ ज० ॥ ४ ॥ गुण सघला अंगे कर्या, दूर कर्या सवि दोष लालरे। वाचक जशविजये थुणयो, देजो सुखनो पोष लालरे ॥ ज० ॥५॥

---

१ कमलनी पांखडी जेवी। २ अरधा चंद्रमा जेवुं कपाल। ३ म्होढुं आसो मासना चंद्रमा जेवुं तेजदार। ४ एक हजार आठ।

श्रीअजितनाथ जिन स्तवन।

(निदरडी वेरण होइ रही, ए देशी)

अजित जिणंदश्युं प्रीतडी, मुज न गमे हो वीजानो संग के। मालती फूले मोहियो, किम वेसे हो बावलतरु [1]भृंग के ॥ अ० ॥ १ ॥ गंगा-जल मां जे रम्या, किम [2]छिल्लर हो [3]रति पामे [4]मराल के। सरोवर जल [5]जलधर विना, नवि याचे हो जग [6]चातकबाल के ॥ अ० ॥ २ ॥ कोकिल [7]कलकूजित करे, पामी [8]मंजरी हो पंजरि [9]सहकार के। ओछा तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो होये गुणनो प्यार के ॥ अ० ॥ ३ ॥ [10]कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वली कुमु- ग्रे चन्दशुं प्रीतके। [11]गौरी [12]गिरीश गिरी- नवि चाहे हो [14]कमला निज चित्त के तम प्रभुश्युं मुज मन रम्युं, वीजाशुं आव [15]दायँ के। श्रीनयविजय सुगुरू तणो, [16]वाचक जश हो नित नित गुण गाय के ॥ अ० ॥ ५ ॥

---

१ भमरो। २ न्हाना तलावमां। ३ आनन्द। ४ हंस। ५ वरसाद। वपैयो। ७ मीठुं बोले। ८ आंबानो मोर। ९ आंबानुं झाड। १० सूर्य-विकासी कमलिनी सूर्यना किरण उपर अने पोयणी चन्द्र तरफ प्रीति धरेछे। ११ पार्वती। १२ महादेव। १३ कृष्ण। १४ लक्ष्मी। १५ पसन्द। १६ उपाध्याय।

श्रीसंभवनाथ जिन स्तवन।

(मन मधुकर मोही रह्यो, ए देशी)

संभव जिनवर विनती, अवधारो गुणज्ञाता रे। स्वामी नहिं मुज खिजमते। कहिय होश्यो फल दातारे ॥ सं० ॥ १ ॥ कर जोडी ऊभो रहुं, राति दिवस तुम ध्यानेरे । जो मनमां आणो नहि, तो शुं कहिये छानेरे ॥ सं० ॥ २ ॥ खोट खजाने को नहि, दीजे वंछित दानोरे । करुणानजरे प्रभुतणी, वाधें सेवक वानोरे ॥ सं० ॥ ३ ॥ काल लब्धि नही मति गणो, भाव लब्धि तुज हाथेरे । लडथडतुं पण गज बच्चुं, गाजे गजवर साथेरे ॥ सं० ॥ ४ ॥ देश्यो तो तुमही भला, बीजा तो नवि याचुंरे । वाचक जश कहे सांइशुं, फलशे ए मन साचुंरे ॥ सं० ॥ ५ ॥

श्रीअभिनन्दन जिन स्तवन।

(सुणयो प्रभु, ए देशी)

दीठी हो प्रभु दिठी जगगुरु तुज, मूरती हो प्रभु मूरत मोहन वेलडीजी। मीठी हो प्रभु मीठी ताहरी वाणि, लागे हो प्रभु लागे जेसी शेलडीजी ॥ १ ॥ जाणुं हो प्रभु जाणुं जनम कयथ्थ[१], जोउं हो प्रभु

१ कृतार्थ।

जोडं तुम साथे मिल्योजी। सुरमणि हो प्रभु सुर-
मणि पाम्यो हथ्थ, अगण हो प्रभु अंगण मुज
सुरतरु फल्योजी। जाग्या हो प्रभु जाग्या पुण्य अंकुर,
माग्या हो प्रभु मह्रों माग्या पासा ढल्याजी। वूठो
हो प्रभु वूठो अमीये मेह, नाठा हो प्रभु नाठा
अशुभ शुभ दिन वल्याजी ॥३॥ भूख्यां हो प्रभु
भूख्यां मल्यां घृतपूर, तरस्यां हो प्रभु तरस्यां दिव्य
उदक मिल्यांजी। थाक्यां हो प्रभु थाक्यां मिल्यां
सुखपाल, चाहतां हो प्रभु चाहतां सज्जन हेजे
हल्याजी ॥४॥ दीवो हो प्रभु दीवो निशा वनगेह,
शाखी हो प्रभु शाखी थलें जलनो मिलिजी।
कलियुगे हो प्रभु कलियुगे दुल्लहो मुज, दरि-
शण हो प्रभु दरिशण लह्युं आशा फलीजी ॥५॥
वाचक हो प्रभु वाचक जश तुम दास, विनवे हो
प्रभु विनवे अभिनन्दन सुणोजी। कहीयें हो प्रभु
कहीये म देश्यो छेह, देजो हो प्रभु देजो सुख
दरिशण तणोजी ॥ ६ ॥

श्रीसुमति जिन स्तवन ।

(झांझरीया मुनीवरनी देशी)

सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी, वाधे मुज मन

प्रीत। तेल बिंदु जिम विस्तरेजी, जलमांहि भली रीत ॥ सोभागी जिनशुं लाग्यो अविहरु[1] रंग ॥ ॥१॥ सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय । परिमल कस्तूरीतणोजी, मँहिमांहि[2] महकाय ॥ सो० ॥ २ ॥ अंगुलीये नवि मेरु ढंकाये, छावडीये रँवि[3] तेज । अंजलीमां जिम गंग न माये, मुज मन तिम प्रभु हेज ॥ सो० ॥ ३ ॥ हुओ छीपे नही अँधर[4] अरुण जिम, खातां पान सुरंग । पिवत भरभर प्रभु गुण प्याले, तिम मुज प्रेम अभंग ॥ सो० ॥ ४ ॥ ढांकी ईक्षु[5] परालगुंजी, न रहे लही विस्तार । वाचक जश कहे प्रभु गुणेजी, तिम मुज प्रेम प्रकार ॥ ॥ सो० ॥ ५ ॥



श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन ।

(सहज सलुणा हो साधुजी, ए देशी)

पद्मप्रभु जिन जई अलगा रह्या, जिहांथी नावे लेखोजी । कागलने मसि तिहां नवि संपजे, न चले वाट विशेखोजी ॥ सुगुण सनेहारे कदिये न

---

१ कोई वखत भांखो न पडे एवो । २ पृथिवीमां । ३ सूर्यनुं तेज । ४ राता थयेला होठ । ५ परालथी ढांकेली शेलडी ।

वीसरे ॥ १ ॥ इहांथी तिहां जइ कोई आवे नहि, जेह कहे संदेशोजी । जेहनुं मिलवुं तेहशुं दोहिलुं, नेह ते आप किलेशोजी ॥ सु० ॥ २ ॥ वीतराग-शुंरे राग ते एकपखो, कीजे कवण प्रकारोजी । घोडो दोडेरे साहिब काजमां, मननाणे असवारोजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ साची भगतिरे भावनरस कह्यो, रस होये तिहां दोए रीझेजी । होडाहोडेरे बेहु रसरीझथी, मनना मनोरथ सीझेजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पण गुणवन्तारे गोठे गाजिए, मोटा ते विश्रामोजी । वाचक जश कहे एहज आसरे, सुख लहुं ठामो ठामोजी ॥ सु० ॥ ५ ॥



श्रीसुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

(लवलदे मात मलार, ए देशी)

श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिभुवन शिरताज, आज हो छाजेरे ठकुराई, प्रभु तुज पदतणीजी । ॥ १ ॥ दिव्यध्वनी सुर फूल, चामर छत्र अमूल, आज हो राजेरे भामंडल गाजे दुंदुभी जी ॥ २ ॥ अतिशय सहजना च्यार, कर्म खप्याथी अग्यार, आज हो कीधारे ओगणीसे सुरगण भासु-रजी ॥ ३ ॥ वाणी गुण पांत्रीश, प्रातिहारज

जगदीश। आज हो राजे रे दीवाजे छाजे आ-
छशुंजी ॥ ४ ॥ सिंहासन अशोक, बेठा मोहे
लोक। आज हो स्वामी रे शिवगामी, वाचक
जश थुएयोजी ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रभ जिन स्तवन।

(धणरा ढोलानी देशी)

चन्द्रप्रभ जिन साहिबारे, तुमे छो चतुर
सुजाण। मनना मान्या। सेवा जाणो दासनी रे, देशो
फल [1]निरवाण ॥ म० ॥ १ ॥ आवो आवो रे चतुर
सुख भोगी। कीजे बात एकान्ते अभोगी। गुण
गोठे प्रगटे प्रेम ॥ म० ॥ थोडुं अधिकुं पण कहेरे,
[2]आसंगायत जेह ॥ म० ॥ आपे फल जे अणकह्यां रे,
गिरुओ साहिब तेह ॥ म० ॥ २ ॥ दीन कह्या,
विण दानथी रे, दातानी वाधे [3]माम ॥ म० ॥ जल
दीये चातक खीजवी रे। मेघ हुवा तेणे श्याम ॥ म० ॥
॥ ३ ॥ पिऊ पिऊ करि तुमने जपुं रे, हुं चातक
तुमे मेह ॥ म० ॥ एक लहेरमां दुख हरो रे। वाधे

१ मोक्ष। २ प्रेम भावे आश्रय लेनारा सेवक। ३ लाज, मोभो। ४ वपै-
याने चीडावी वरसादे पाणी पीवा आप्युं, तेथी वरसादनो रंग कालो
थयो छे, अर्थात् मांग्या वगर-ककलाव्या वगर दान आपे तो उज्ज्वलता छे।

विमणो नेह ॥ म० ॥ ४ ॥ मोरुं वेहलुं आपवुंरे, तो शी ढील कराय ॥ म० ॥ वाचक जश कहे जग धणीरे, तुम तूठे सुख थाय ॥ म० ॥ ५ ॥

श्रीसुविधिनाथ जिन स्तवन ।

(सुणो मेरी सुजनी रजनी न जावे रे, ए देशी)

लघु पण हुं तुम मन नवि मावुंरे । जगगुरू तुमने दिलमां लावुंरे । कुणने दीये ए शावाशी रे । कहो श्रीसुविधि जिणंद विमासी रे॥ ल० ॥ १ ॥ मुज मन अणुमांहि भगति छे झाझी रे । तेह दरीनो तुं छे माझीरे । योगी पण जे वात न जाणे रे । ते अचरिज कुणथी हुओ टाणे रे ॥ ल० ॥२॥ अथवा थिरमांहि अथिर न मावे रे । मोटो गज दरपणमां आवे रे । जेहने तेजे बुद्धि प्रकाशी रे । तेहने दीजे ए शावाशी रे ॥ ल० ॥३॥ ऊर्ध्व मूल तरुअर अध शाखारे । छन्द पुराणे एहवी छे भाखारे । अचरिज वाले अचरिज कीधुंरे । भगते सेवक कारज सीधुंरे ॥ ल० ॥४॥

---

१ आप जगतना गुरु छो छतां आप जेवा मोटाने हुं न्हानो सेवक हृदयमां धारण करी शकुंछुं, पण आप मोटा छतां मारा जेवा न्हाना सेवकने हृदयमां लावता नथी, तो विचारी जुओ के आपणा बन्नेमां कोण शाबाशीने पात्र छे ?

चारू करी जे बालक बोले रे। मात पिता मन अमीय न तोले रे। श्रीनयविजय विबुधनो शीशरे। जश कहे एम जाणो जगदीशरे ॥ ल० ॥ ५ ॥



श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन।

(अलि अलि कदि आवेगो, ए देशी)

श्री शीतलजिन भेटीयें, करी चोखुं भगते चित्त हो। तेहश्युं कहो छानुं किश्युं, जेहने सुंप्यां तन मन वित्त हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ दायक[1] नामे छे घणां, पण तुं सायर ते कूप हो। ते बहु खजुआ[2] तगतगे, तुं दिनकर[3] तेज स्वरूप हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ मोटो जाणी आदर्यो, दालिद्र भांगो जगतात हो। तुं करुणावंत शिरोमणि, हुं करुणापात्र विख्यात हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अंतरयामी सवी लहो, अम मननी जे छे बात हो। मा आगल मोसालनां, श्यां वरणववां अवदात हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जाणो तो ताणो किश्युं, सेवाफल दीजे देव हो। वाचक जश कहे ढीलनी, ए न गमे मुजने टेव हो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

---

१ दातारीपणानुं नाम धरावनारा घणा छे, पण तुं दरिया जेवो अने ते बधा कूवा जेवा छे। २ आगीया। ३ सूर्यना तेज जेवो।

श्री श्रेयांसप्रभुजिन स्तवन ।

(करम न छूटेरे प्राणीया, ए देशी)

तुमे बहुमित्रीरे[1] साहिबा, माहरे तो मन एक । तुम विण बीजोरे नवि गमे, ए मुज मोटी रे टेक ॥ श्री श्रेयांस कृपा करो ॥ १ ॥ मन राखो तुमे सवि तणां, पण किहां ए मली जाओ । ललचावो लख लोकने, साथी सहज न थाओ ॥ श्री० ॥ २ ॥ राग भरे जन मन रह्यो, पण त्रिहु काले वैराग । चित्त तुमारो रे समुद्रनो, कोय न पामेरे ताग[2] ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एहवाशुं चित्त मेलवो[3], केलव्युं पहेलां न कांइ । सेवक निपट अबूझ[4] छे, निरवहेशो[5] तुमे सांइ ॥ श्री० ॥ ४ ॥ निरागीशुं रागी किम मिले, पण मलवानो एकांत । वाचक जश कहे मुज मिल्यो, भगति ते कामण[6] तंत ॥ श्री० ॥ ५ ॥



श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन ।

(मोतीडानी देशी)

स्वामी तुमे कांइ कामण कीधुं, चीतडुं अ-

---

१ तमारे मारा जेवा बहुए दोस्तदार छे, पण मारे तो तमो एकज दोस्तदार छो। २ पार । ३ लग्न । ४ मूर्ख । ५ निभावशो । ६ कामण तंत्र ।

मारुं चोरी लीधुं ॥ साहिबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य। अमे पण तुमशुं कामण करशुं, जगति ग्रही मन घरमां धरशुं ॥ सा० ॥ १ ॥ मन घरमां धरीया घर शोभा, देखता नित रहेशुं थिर थोभा। मन वैकुंठ अकुंठित भगते, योगी भावे अनुभव युगते ॥ सा० ॥ २ ॥ [1]क्लेश वासित मन संसार, क्लेश रहित मन ते भवपार। जो विशुद्ध मन धरि तुमे आव्या। प्रभु तो अमे नव निधि रिधि पाव्या ॥ सा० ॥ ३ ॥ सात राज अलगा जइ बेठा। पण भगते अम मनमां पेठा। अलगाने वलग्या जे रहेवुं, ते भाणा खरू खरू दुःख सहेवुं ॥ सा० ॥ ४ ॥ ध्यायक ध्येय ध्यान गुण एके, भेद छेद करशुं हवे टेके। खीर नीर परे तुमशुं मिलशुं, वाचक जश कहे हेजे हलशुं ॥ सा० ॥ ५ ॥

श्रीविमलनाथ जिन स्तवन।

सेवो भवियां विमल जिणेसर, दुलहा स-

---

१ क्लेशथी भरेलां मन होय त्यां सूधीज संसारमां भमवुं रहेछे पण क्लेशने छोडी देनारुं मन थाय त्यारे भवनो पार पामेछे।

ज्जन संगाजी । एहवा प्रभुनुं दरशण लहेवुं, ते आलशमां गंगाजी ॥ १ ॥ अवसर पामी आलस करशे, ते मुरखमां पहेलोजी ॥ भूख्याने जिम घेवर देतां । हांथ न मांडे घहेलोजी ॥ २ ॥ भव अनन्तमां दरशण दीठुं, प्रभु एहवा देखाडेजी । विकट ग्रंथ जे पोळि पोळियो, कर्म्म विवर उघाडे जी ॥ ३ ॥ तत्त्व प्रीत करी पाणी पाए, विमलालोके आंजिजी । लोयण गुरु परमान्न दिए तव, भ्रम नाखे सवि भांजिजी ॥ ४ ॥ भ्रम भाग्यो तव प्रभुशुं प्रेमे, वात करुं मन खोलीजी । सरव तणे जे हीयडे आवे, तेह जणावे बोलीजी ॥५॥ श्री नयविजय विबुध पय सेवक, वाचक जश कहे साचुं जी । कोड कपड जो कोइ देखावे, तोही प्रभु विण नवि राचुं जी ॥ ६ ॥



श्रीअनंतनाथ जिन स्तवन ।

श्री अनतजिनशुं करो । साहेलडियां । चोल मजीठनो रंग रे । गुण वेलडियां । साचो रंग ते धर्मनो॥ सा०॥ बीजो रंग पतंगरे ॥ गु० ॥ १ ॥ धरम रंग जीरण नहि॥ सा० ॥ देह ते जीरण थायरे ॥गु०॥

सोनुं ते विणशे नहि ॥ सा० ॥ घाट घडामण जायरे ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रांबुं जे रस वेधीउं ॥ सा० ॥ ते होये जाचूं हेमरे ॥ गु० ॥ फरी त्रांबुं ते नवि होवे ॥ सा० ॥ एहवो जगगुरु प्रेमरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ उत्तम गुण अनुरागथी ॥ सा० ॥ लहिये उत्तम ठामरे ॥ गु० ॥ उत्तम निज महिमा वधे ॥ सा० ॥ दीपे उत्तमधामरे ॥ गु० ॥ ॥ ४ ॥ उदक[1]बिन्दु सायर भल्यो ॥सा०॥ जिम होय अखय अभंगरे ॥ गु० ॥ वाचक जश कहे प्रभुगुणे ॥ सा० ॥ तिम मुज प्रेम प्रसंगरे ॥ गु० ॥ ॥ ५ ॥



श्रीधर्मनाथ जिन स्तवन ।

(बेडले भार घणो छे राज वातो केम करो छो, ए देशी)

थाशुं प्रेम बन्यो छे राज, निरवहेश्यो तो लेखे । मैं रागी प्रभु थें छो निरागी, अणजुगते होए हासी । एकपखो[2] जे नेह निरवहीश्यो, तेमां ही कीसी शाबाशी ॥ था० ॥ १ ॥ निरागी सेवे कांई होवे, इम मनमें नवि आणुं । फले अचेतन पण जिम सुरमणी, तिम तुम भगति प्रमाणुं ॥ था० ॥ २ ॥ चन्दन शीतलता उपजावे, अगनि ते[3] शीत मिटावे ।

१ पाणीनु टीपुं । २ एकना मनमां बहु स्नेह होय अने बीजाना मनमां कशुं पण न होय तेवो । ३ टाढ ।

सेवकनां तिम दुःख गमावे, प्रभु गुण प्रेम स्वभावे ॥ था० ॥ ३ ॥ व्यसन उदय जलधी अणुहारे, शशिनो तेज संबंधे। अणुसंबंधे कुमुद अणुहारे, शुद्ध स्वभाव प्रबंधे ॥ था० ॥ ४ ॥ देव अनेरा तुमथी छोटा, थे जगमां अधिकेरा। जश कहे धर्म जिणेसर थाशुं, दिल मान्या हे मेरा ॥ था० ॥ ५ ॥



श्रीशान्तिनाथ जिन स्तवन।

(घोडलियो मूक्यो सरोवरियारी पाल, ए देशी)

धन दिन वेला धन वली तेह, अचिरारो नंदन जिन जंदी भेटशुं जी। लहेशुं रे सुख देखी मुखचन्द, विरह व्यथानां दुख सवि मेटशुंजी ॥१॥ जाण्यो रे जेणे तुज गुण लेश, बीजा रे रस तेहने मन नवि गमेजी। चाख्यो रे जेणे अमी लवलेश, बाकस बुकस तस न रुचे किमेजी ॥२॥ तुज समकित रस स्वादनो जाण, पाप कुमतने बहु दिन सेविउं जी। सेवे जो करमने योगे तोहि वांछे ते समकित अमृत धुरे लिख्युं जी ॥३॥ ताहरुं ध्यान ते समकित रूप,

१ भली आवशे। २ पोषशुं। ३ ज्यारे। ४ अमृत।

तेहज ज्ञान ने चारित्र तेह छे जी। तेहथी रे जाए सघलाँ पाप, ध्याता रे ध्येय स्वरूप होयें पछेजी ॥ ४ ॥ देखी रे अदभुत ताहरुं रूप, अचरिज भविक अरूपी पद वरेजी ।· ताहरी गत तुं जाणे हो देव, समरण भजन ते वाचक जश करेजी ॥५॥

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन।

साहेलांहे कुंथु जिणेसर देव, रतन दीपक[1] अति दीपतो हो लाल। साहेलांहे मुज मन मंदिर मांहे, आवे जो अरिबल[2] जीपतो हो लाल ॥१॥ सा० मिटे तो मोह अंधकार, अनुभव तेजे झलहले हो लाल। सा० धूम कखाय न रेख, चरण चित्रामण नवि चले हो लाल ॥ २ ॥ सा० पात्र कर्यें नहि हेठ, सूरज तेजे नवि छुपे हो लाल । सा० सर्व तेजनुं तेज, पहेलांथी वाधे पछे हो लाल ॥ ३ ॥ सा० जेह न मरुतने[3] गम्य, चंचलता जे नवि लहे हो लाल। सा० जेह सदा छे रम्य[4], पुष्टगुणे नवि कृश[5] रहे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० पुदगल तेल न खेप, तेह न शुद्ध दशा दहे हो लाल । सा० श्रीनयविजय सुशीश, वाचक जश एणि परे कहे हो लाल ॥ ५ ॥

१ दीवो। २ शत्रु बल। ३ पवन। ४ मनोहर। ५ दुर्बल।

श्रीअरनाथ जिन स्तवन ।

(आसणरा योगी, ए देशी)

श्रीअरजिन भवजलनो तारु । मुज मन लागे वारुरे । मन मोहन स्वामी ॥ बांहे ग्रही ए भवि-जन तारे। आणे शिवपुर आरेरे ॥म०॥१॥ तप जप मोह महा तोफाने, नाव न चाले मानेरे ॥ म० ॥ पण नवी भय मुज हाथो हाथे, तारे ते छे साथेरे ॥ म० ॥ २ ॥ भगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधीकुं, ज्ञानीने फल देई रे ॥ म० ॥ कायाकष्ट विना फल लहीए, मनमां ध्यानज धरीये रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जे उपाय बहु-विधनी रचना, योगमाया ते जाणोरे ॥ म० ॥ शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय ध्याने, शिव दे प्रभु सपराणोरे ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रभु पाय वलग्या ते रह्या ताजा, अलगा अंग न साजारे ॥ म० ॥ वाचक जश कहे अवर न ध्याउं, ए प्रभुना गुण गाउंरे ॥ म० ॥ ५ ॥

श्रीमल्लिनाथ जिन स्तवन ।

(नाभीरायके बार, ए देशी)

तुज मुज रीझ नीरीझ, अटपट एह खरीरी । लटपट नावे काम, खटपट भांज परीरी ॥ १ ॥

---

१ भव समुद्रमांथी पार उतारनार। २ सारु।

तेहज ज्ञान ने चारित्र तेह छे जी। तेहथी रे जाए सघलां पाप, ध्यातारे ध्येय स्वरूप होयें पछेजी ॥ ४ ॥ देखीरे अद्भुत ताहरुं रूप, अचरिज ज्ञविक अरूपी पद वरेजी ।ताहरी गत तुं जाणे हो देव, समरण ज्ञजन ते वाचक जश करेजी ॥५॥

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ।

साहेलांहे कुंथु जिणेसर देव, रतन दीपक[1] अति दीपतो हो लाल। साहेलांहे मुज मन मंदिर मांहे, आवे जो अरिबल[2] जीपतो हो लाल॥१॥सा० मिटे तो मोह अंधकार, अनुज्ञव तेजे ऊलहले हो लाल। सा० धूम कखाय न रेख, चरण चित्रामण नवि चले हो लाल ॥ २ ॥ सा० पात्र कर्यें नहि हेठ, सूरज तेजे नवि छुपे हो लाल । सा० सर्व तेजनुं तेज, पहेलांथी वाधे पछे हो लाल ॥३॥ सा० जेह न मरुत[3]ने गम्य, चंचलता जे नवि लहे हो लाल। सा० जेह सदा छे रम्य[4], पुष्टगुणे नवि कृश[5] रहे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० पुदगल तेल न खेप, तेह न शुरू दशा दहे हो लाल । सा० श्रीनयविजय सुशीश, वाचक जश एणि परे कहे हो लाल ॥ ५ ॥

१ दीवो। २ शत्रु बल। ३ पवन। ४ मनोहर। ५ दुर्बल।

श्रीअरनाथ जिन स्तवन ।

(आसणरा योगी, ए देशी)

श्रीअरजिन भवजलनो तारु । मुज मन लागे वोरुरे । मन मोहन स्वामी ॥ बांहे ग्रही ए भवि- जन तारे । आणे शिवपुर ओरेरे ॥म०॥१॥ तप जप मोह महा तोफाने, नाव न चाले मानेरे ॥ म० ॥ पण नवी भय मुज हाथो हाथे, तारे ते छे साथेरे ॥ म० ॥ २ ॥ भगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधीकुं, ज्ञानीने फल देई रे ॥ म० ॥ कायाकष्ट विना फल लहीए, मनमां ध्यानज धरीये रे ॥ म०॥ ३ ॥ जे उपाय बहु- विधनी रचना, योगमाया ते जाणोरे ॥ म० ॥ शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय ध्याने, शिव दे प्रभु सपराणोरे ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रभु पाय वलग्या ते रह्या ताजा, अलगा अंग न साजारे ॥ म० ॥ वाचक जश कहे अवर न ध्याउं, ए प्रभुना गुण गाउंरे ॥ म० ॥ ५ ॥

श्रीमल्लिनाथ जिन स्तवन ।

(नाभीरायके बाग, ए देशी)

तुज मुज रीझ नीरीझ, अटपट एह खरीरी । लटपट नावे काम, खटपट भांज परीरी ॥ १ ॥

---

१ भव समुद्रमांथी पार उतारनार । २ सारं ।

मल्लीनाथ तुज रीझ, जन रीझें न हुये री। दो ए री-झणनो उपाय, साहमुं कांइ न जुयेरी ॥ २ ॥ [1]दुराराध्य छे लोक, सहुने सम न सरीरी । एक दुहवाए गाढ, एक जो बोले हसीरी ॥ ३ ॥ लोक लोकोत्तर वात, रीझवे दाई जूइरी। तात चक्रधर पूज, चिन्ता एह हुइरी ॥ ४ ॥ रीझववो एक सांइं, लोक ते वात करीरी। श्रीनयविजयसु शीश, एहज चित्त धरीरी० ॥ ५ ॥

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

(पांडव पांचे वंदतां, ए देशी)

मुनिसुव्रत जिन वंदतां, अति उलसित तन मन थाय रे। [3]वंदन [4]अनोपम निरखतां, म्हारां नवनवनां दुःख जायरे॥ जगत गुरु जागतो सुखकंदरे, सुखकंद अमंद आनंद ॥ ज० ॥ १ ॥ निशदिन सूतां जागतां, हीयडाथी न रहे दूररे। [5]जब उपगार संभारियें, [6]तब उपजे आणंद पूररे ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ प्रभु उपगार गुणें भर्यो, मन अवगुण एक न समायरे। गुण गुण अनुबंधी हुआ, ते तो अ-

---

१ दुःखे करीने आराधवा योग्य। २ प्रभु । ३ मुख । ४ जेनी बरोबरी करी शके एवी कोई वस्तु न होय एवुं। ५ ज्यारे । ६ त्यारे ।

क्षय भाव कहायरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ [1]अक्षय पद दीये प्रेम जे, प्रभुनो ते अनुभवरूपरे । अक्षर स्वर [2]गोचर नहि एतो, [3]अकल [4]अमाय [5]अरूपरे ॥ ज० ॥ ४ ॥ अक्षर थोडा गुण घणा, सज्जनना ते न लखायरे। वाचक जश कहे प्रेमथी पण, मन मांहे परखायरे ॥ ज० ॥ ५ ॥

श्री नमिनाथ जिन स्तवन ।

श्रीनमि जिननी सेवा करतां, [6]अलिय विघन सवि दूरे नासे जी। अष्ट महासिद्धि नवनिधि लीला, आवे बहु महमूर पासे जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ [7]मयमत्ता अंगण गज गाजे, राजे [8]तेजी तुखार चंगा जी । बेटा बेटी [9]बंधव जोडी, लहीये बहु अधिकार रंगा जी ॥ श्री० ॥२॥ [10]वल्लभ संगम रंग लहीजे, अणवाहला होय दूर सहजे जी। वांछातणो विलंब न हूजो. कारज सीझे भूरि सहजेजी ॥श्री० ॥ ३ ॥ चंद्रकिरण यश उज्ज्वल उल्लसे, सूर्य तुल्य प्रताप दीपे जी । जे प्रभु भगति करे नित

१ जेनो कोइ दिवस नाश नथी ते। २ जाणवामां–जोवामां। ३ कळाय नहि। ४ माया रहित। ५ रूप रहित। ६ अप्रिय। ७ मदमस्त हाथी। ८ पाणीदार सुंदर घोडा। ९ भाइनी जोड। १० व्हालानो मेळाप।

विनये, ते अरीया बहु ताप जीपे जी ॥ श्री० ॥ ॥४॥ मंगल माला लच्छि विशाला, बाला बहुले प्रेम रंगेजी । श्रीनयविजय विबुध पय सेवक, कहे लहिये प्रेम सुख अंगे जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥



श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन।

तोरणथी रथ फेरी गयारे हां । पशुआं शिर-देइ दोष मेरे वालिमा । नव भव नेह निवारीयो-रे हां । श्यो जोइ आव्या जोष ॥ मे०॥१॥ चंद्र कलंकी जेहथीरे हां । राम ने सीता वियोग ॥ मे० ॥ तेह कुरंगने वयणडेरे हां । पति आवे कुण लोक ॥ ॥ मे० ॥ २ ॥ उतारी हुं चित्तथीरे हां, मुगति धूतारी हेत ॥ मे० ॥ सिद्ध अनंते भोगवीरे हां । तेहश्युं कवण संकेत ॥ मे० ॥ ३ ॥ प्रीत करतां सोहली-रे हां, निरवहतां जंजाल ॥ मे० ॥ जेहवो व्याल खेलाववोरे हां, जेहवी अगननी झाल ॥ मे० ॥ ॥ ४ ॥ जो विवाह अवसर दियोरे हां, हाथ उपर नवि हाथ ॥ मे० ॥ दीक्षा अवसर दीजीये

१ जे हरिणना लीधे चंद्रने लांछन लाग्युं छे, अने राम सिताने वियोग थयो, ते हरिणना कहेवा ऊपर कोण भरोसो राखे । २ साप । ३ परणवा वखते हाथ ऊपर हाथ न आप्यो, पण हवे दीक्षा वखते

रे हां। शिर उपर जगनाथ ॥मे०॥५॥ इम विलवती राजुल गइरे हां । नेम कने[1] व्रत लीध ॥ मे० ॥ वाचकयश कहे प्रणमीयेंरे हां, ए दंपति[2] दोइ सिद्ध ॥ मे० ॥ ६ ॥

श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

(राग मल्हार)

वामानंदन जिनवर मुनिवरमां वडोरे ॥ के० ॥ ॥ मु० ॥ जिम सुर[3]मांहि सोहे, सुरपति[4] पर[5]वडोरे ॥ ॥ के०॥ सु० ॥ जिम गिरिमांहि सुराचल[6], मृगमांहे केसरिरे ॥ के० ॥ मृ० ॥ जिम चंदन तरुमांहे[7], सुभटमांही सुरअरिरे[8] ॥ के० ॥ सु० ॥ १ ॥ नदीयामांहि जिम गंग, अनंग सरूपमांरे[9] ॥ के० ॥अ०॥ फूलमांहि अरविंद[10], भरतपती भूपमांरे ॥ के० ॥ ॥ भ० ॥ ऐरावण[11] गजमांहि, गरुड खगमां[12] यथारे ॥ के० ॥ ग० ॥ तेजवंत मांहि भाण[13], वखाणमां जिनकथारे ॥ के०॥ व० ॥ २ ॥ मंत्रमांहि नवकार, रतनमांहि सुरमणी[14]रे ॥ के० ॥ र० ॥ सागरमांहि

मारा माथा पर तो हाथ राखो । [1] पासे । [2] धणी धणीयाणी । [3] देवता । [4] इन्द्र । [5] श्रेष्ठ । [6] मेरु पर्वत । [7] झाडमां । [8] दैत्य-रावण वगेरे । [9] कामदेव । [10] कमल । [11] ऐरावत हाथी । [12] पक्षीओमां । [13] सूर्य । [14] चिन्तामणि ।

स्वयंभू[1]-रमण शिरोमणी रे ॥ के० ॥ र० ॥ शुक्ल ध्यान जिम ध्यानमां, अति निर्मलपणेरे ॥ के० ॥ अ० ॥ श्रीनयविजय विबुध पय, सेवक इम भणेरे ॥ के० ॥ ॥ से० ॥ ३ ॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन ।

गिरुआरे गुण तुम तणा, श्रीवर्धमान जिनरायारे । सुणतां श्रवणे अमी झरे, माहरी निर्मल थाए कायारे ॥ गि० ॥ १ ॥ तुम गुणगण गंगाजले, हुं झीली निरमल थाऊंरे । अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाऊंरे ॥ गि० ॥२॥ झील्या[2] जे गंगाजले, ते छिल्लर[3] जल नवी पेसेरे । मालती फूले मोहिया, ते बावले जइ नवी बेसेरे ॥ गि० ॥ ३ ॥ इम अमे तुज गुण गोठशुं, रंगे राच्याने वली माच्यारे । ते किम परसुर[4] आदरुं, जे परनारी वश राच्यारे ॥ गि० ॥ ४ ॥ तूं गति तूं मती आशरो, तूं आलंबन मुज प्यारोरे । वाचक जस कहे माहरे, तूं जीव जीवन आधारोरे ॥ गि० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीयशोविजयोपाध्याय कृत चोवीशी १ समाप्त ॥



१ स्वयंभूरमण समुद्र । २ न्हाया । ३ न्हाना तलावडामां । ४ बीजा देवोने ।

श्रीयशोविजयोपाध्यायकृत चोवीशी ९ जी।

श्रीऋषभ जिन स्तवन।

(मेरो प्रभुनीको मेरो प्रभुनीको, ए देशी)

ऋषभ जिनंदा ऋषभ जिनंदा, तुं साहिब हुं हुं तुज वंदा। तुजश्युं प्रीति वनी मुज साची, मुज मन तुज गुणश्युं रह्यो माची॥ ऋ० ॥१॥ दीठा देव रुचे न अनेरा, तुज पाखली चितरुं दिये फेरा। स्वामीश्युं कामणरुं कीधुं, चित्तरुं अमारुं चोरी लीधुं ॥ ऋ० ॥ २ ॥ प्रेम वंधाणो ते तो जाणो, निरवहश्यो तो होशे वखाणो। वाचक जश विनवे जिनराज, बांह्य ग्रह्यानी तुजने लाज ॥ ऋ० ॥ ३ ॥



श्रीअजित जिन स्तवन।

(कपूर होइ अति ऊजलुंरे, ए देशी)

विजयानंद गुणनीलोजी, जीवन जगदाधार०। तेहश्युं मुज मन गोठमीजी, ठाजे वारोवार। सोभागी जिन तुज गुणनो नहीं पार, तुं तो दोलतनो दातार॥ सो० ॥१॥ जेहवी कूवा ठांहमीजी, जेहवुं वननुं फूल। तुजशुं जे मन नवि मिल्युंजी, तेहवुं तेहनुं शूल ॥ सो० ॥ २ ॥ माहारुं तो मन धुरिथ-

कीजी, हलिउं तुज गुण संग । वाचक जश कहे राखजोजी, दिन दिन चढतो रंग ॥ ३ ॥

श्रीसम्भवनाथ जिन स्तवन ।

सेनानंदन साहिबो साचोरे, परि परि परख्यो हीरो जाचोरे । प्रीति मुद्रिका तेहश्युं जोडीरे, जाणुं में लही कंचन कोडीरे ॥ १ ॥ जेणे चतुरशुं गोठी न बांधिरे, तिणे तो जाण्युं फोकट वाधीरे । सुगुण मेलावे जेह उछाहोरे, मणुअ जनमनो तेहज लाहोरे ॥२॥ सुगुण शिरोमणि संभवस्वामीरे, नेह निवाह धुरंधर पामीरे । वाचक जश कहे मुज दिन वलियोरे, मनह मनोरथ सघलो फलीयोरे ॥ ३ ॥

श्रीअभिनन्दन जिन स्तवन ।

(गोडी गाजेरे, ए देशी)

शठ सेवोरे अभिनन्दन देव, जेहनी सारेरे सुर किंनर सेव । एहवो साहिब सेवे तेह हजूर, जेहनां प्रगटेरे कीधां पुन्य पंडूर ॥ शे० ॥ १ ॥ जेह सुगुण सनेही साहिब हेज, हगलीलाथी लहीयें सुखसेज । तृण सरखुं लागे सघले साच, ते आ-

गणि आव्युं धरणीराज ॥ शे० ॥ २ ॥ अलवे में पाम्यो तेहवो नाथ, तेहथी हूं निश्चय हुओरे सनाथ। वाचक जश कहे पामी रंग रेली, मानुं फलिय अंगणके सुरतरु वेली ॥ शे० ॥ ३ ॥

श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन।

(घूघरीआलो घाट, ए देशी)

सुमतिनाथ दातार, कीजे ओलग तुम तणीरे। दीजे शिवसुख सार, जाणी ओलग जग धणीरे ॥ १ ॥ अखय खजानो तुज, देतां खोकी लागे नहीरे। किसि विमासण गुज्ज, जाचक थाके ऊभा रहीरे ॥२॥ रयण कोक तें दीध, करण विश्व तदा कियोरे। वाचक जश सुप्रसिद्ध, मागे तीन रतन दिओरे ॥ ३ ॥



श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन।

(आज अधिक भावे करी, ए देशी)

पद्मप्रभ जिन सांभलो, करे सेवक ए अरदास हो। पांति वेसारिओ जो तुम्हें, तो सफल करओ आश हो ॥ प० ॥ १ ॥ जिन शासन पांति तें ठवी, मुज आप्युं समकित थाल हो। हवे नाणा खकि खकि कुण खमे. शिव मोदक

प्रीरसे रसाल हो ॥ प० ॥ २ ॥ गज ग्रासन गलित सीथिं करी, जीवे कीमीना वंश हो । वाचक जश कहे इम चित्त धरी, दीजे निज सुख एक अंश हो ॥ प० ॥ ३ ॥

श्रीसुपास जिन स्तवन ।

(ए गुरु वाल्होरे, ए देशी)

श्रीसुपास जिनराजनोरे, मुख दीठे सुख होईरे । भानु सकल पद में लह्यांरे, जोतो नेह नजरि नरि जोई ॥ ए प्रजु प्यारोरे, माहारा चित्तनो ठारणहार मोहन गारोरे ॥१॥ सिंचे विश्व सुधारसेंरे, चन्द रह्यो पण दूररे । तिम प्रजु करुणा दृष्टिथीरे, लहिये सुख भरपूर ॥ ए० ॥ २ ॥ वाचक जश कहे तिम करोरे, रहिये जेम हजूररे । पीजे वाणी मीठमीरे, जहवो सरस खजूर ॥३॥

श्रीचन्द्रप्रज्ञ जिन स्तवन ।

(भोला शंभु, ए दशी)

मोरा स्वामी चन्द्रप्रज्ञ जिनराय, विनतमी अवधारीयें जीरेजी । मोरा स्वामी तुम्हे छो दीनदयाल, नवजलथी मुज तारीयें जी० ॥ १ ॥

मोरा स्वामी हुं आव्यो तुज पास, तारक जाणी गहगही जी० । मोरा स्वामी जोतां जगमां दीठ, तारक को बीजो नहि जी० ॥ २ ॥ मोरा स्वामी अरज करंतां आज, लाज वधे कहो केणि परी जी० ॥ मोरा स्वामी जश कहे गोपयतुल्य, भवजलधी करुणा धरी जी० ॥ ३ ॥

श्रीसुविधिजिन स्तवन ।

(राग मल्हार)

जिम प्रीति चन्द चकोरने, जिम मोरने मन मेहरे । अम्हने ते तुम्हशुं उल्लशे, तिम नाह नवलो नेह ॥ सुविधि जिणेसरु, सांभलो चतुर सुजाण । अति अलवेसरु ॥ १ ॥ अणदीठे अलजो घणो, दीठे ते तृप्ति न होइरे । मन तोहि सुख मानी लियें, वाहलातणुं मुख जोइ ॥ सु० ॥२॥ जिम विरह कहिये नवि हुये, किजिये तेहवो संचरे । कर जोमी वाचक जश कहे, भांजो ते भेद प्रपंच ॥ सु० ॥ ३ ॥

पीरसे रसाल हो ॥ प० ॥ २ ॥ गज ग्रासन गलित सीथिं करी, जीवे कीमीना वंश हो। वाचक जश कहे इम चित्त धरी, दीजे निज सुख एक अंश हो ॥ प० ॥ ३ ॥

श्रीसुपास जिन स्तवन ।

(ए गुरु वाल्होरे, ए देशी)

श्रीसुपास जिनराजनोरे, मुख दीठे सुख होइरे। मानु सकल पद में लह्यांरे, जोतो नेह नजरि नरि जोई ॥ ए प्रनु प्यारोरे, माहारा चित्तनो ठारणहार मोहन गारोरे॥१॥ सिंचे विश्व सुधारसेंरे, चन्द रह्यो पण दूररे। तिम प्रनु करुणा दृष्टिथीरे, लहिये सुख महमूर ॥ ए० ॥ २ ॥ वाचक जश कहे तिम करोरे, रहिये जेम हजूररे। पीजे वाणी मीठमीरे, जेहवो सरस खजूर ॥३॥

श्रीचन्द्रप्रन्न जिन स्तवन ।

(भोला शंभु, ए दशी)

मोरा स्वामी चन्द्रप्रन्न जिनराय, विनतमी अवधारीयें जीरेजी। मोरा स्वामी तुम्हे छो दीनदयाल, नवजलथी मुज तारीयें जी० ॥ १ ॥

मोरा स्वामी हुं आव्यो तुज पास, तारक जाणी गहगही जी० । मोरा स्वामी जोतां जगमां दीठ, तारक को बीजो नहि जी० ॥ २ ॥ मोरा स्वामी अरज करंतां आज, लाज वधें कहो केणि परी जी० ॥ मोरा स्वामी जश कहे गोपयतुल्य, भवजलधी करुणा धरी जी० ॥ ३ ॥

श्रीसुविधिजिन स्तवन ।

(राग मल्हार)

जिम प्रीति चन्द चकोरने, जिम मोरने मन मेहरे । अम्हने ते तुम्हशुं उल्लशे, तिम नाह नवलो नेह ॥ सुविधि जिणेसरु, सांभलो चतुर सुजाण । अति अलवेसरु ॥ १ ॥ अणदीठे अलजो घणो, दीठे ते तृप्ति न होइरे । मन तोहि सुख मानी लियें, वाहलातणुं मुख जोइ ॥ सु० ॥ २ ॥ जिम विरह कहिये नवि हुये, किजिये तेहवो संचरे । कर जोडी वाचक जश कहे, भांजो ते भेद प्रपंच ॥ सु० ॥ ३ ॥

श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन ।

(भोलुडारे हंसा, ए देशी)

शीतल जिन तुज मुज विचि आंतरुं, निश्चयथी नहि कोय । दंसण नाण चरण गुण जीवने, सहुने पूरण होय ॥ अंतरयामीरे स्वामी सांभलो ॥ १ ॥ पण मुज मायारे भेदि भोलवे, बाह्य देखाडीरे वेष । हियडे जूठीरे मुख अति मीठडी, जेहवी धूरत वेष ॥ अं० ॥ २ ॥ एहनि स्वामीरे मुजथी वेगली, कीजे दीनदयाल । वाचक जश कहे जिम तुम्हस्युं मिली, लहियें सुख सुविशाल ॥ अं० ॥ ३ ॥

श्रीश्रेयांस जिन स्तवन ।

(मुखने मरकलडे, ए देशी)

श्रेयांस जिणेसर दाताजी, साहिब सांभलो । तुम्हे जगमां अति विख्याताजी, साहिब सांभलो । माग्युं देतां ते किशुं विमासोजी, साहिब सांभलो । मुज मनमां एह तमासोजी, साहिब सांभलो ॥ १ ॥ तुम्ह देतां सवि देवार्थेजी, साहिब सांभलो । तो अरज कर्ये स्युं थायेजी, साहिब सांभलो । यश पूरण केम लहिजेजी, साहिब सांभलो ।

जे अरज करिने दीजेजी, साहिब सांभलो ॥२॥
जो अधिकुं द्यो तो देजोजी, साहिब सांभलो ।
सेवक करि चित्त धरज्योजी, साहिब सांभलो ।
जश कहे तुम्ह पद सेवाजी, साहिब सांभलो ।
ते मुज सुरतरु फल मेवाजी, साहिब सांभलो ॥३॥

श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन ।

(विषय न गंजीये, ए देशी)

वासुपूज्य जिन वालहारे, संभारो जिन दास । साहिबस्युं हठ नवि होयेरे, पण कीजे अरदासोरे ॥ चतुर विचारिये ॥ १ ॥ सास पहिला सांभरेरे, मुख दीठे सुख होय । विसारया नवि विसरेरे, तेहस्युं हठ किम होयरे ॥ च० ॥ २ ॥ आमण डुमण नवि टलेरे, खण विण पूरिरे आश । सेवक जश कहे दीजियेरे, निजपद कमलनो वासोरे ॥ च० ॥ ३ ॥

श्रीविमलनाथ जिन स्तवन ।

(ललनानी ढाल)

विलनाथ मुज मन वसे, जिम सीता मन राम ललना । पिक वंछे सहकारने, पंथी मन

जिम धाम ललना ॥ वि० ॥ १ ॥ कुंजर चित्त रेवा वसे, कमला मन गोविंद ल० । गौरी मन शंकर वसे, कुमुदिनी मन जिम चंद ल० ॥ वि० ॥२॥ अलि मन विकसित मालती, कमलिनी चित्त दिणंद ल० । वाचक जशने वालहो, तिम श्री-विमल जिणंद ल० ॥ वि० ॥३॥

श्रीअनंतजिन स्तवन ।

(ढाल रायादानी)

श्रीअनंतजिन सेवियेंरे लाल, मोहनवल्ली कंद । मन मोहनां । जे सेव्यो शिव सुख दियेरे लाल, टाले भव भय फंद ॥ श्री० ॥ म० ॥ १ ॥ मुख मटके जग मोहिओरे लाल, रूप रंग अति चंग ॥ म० ॥ लोचन अति अणीयालमांरे लाल, वाणी गंग तरंग ॥ श्री० ॥ म० ॥ २ ॥ गुण सघला अंगे वस्यारे लाल, दोष गया सवि दूर ॥ म० ॥ वाचक जश कहे सुख लहूंरे लाल, देखी प्रभु मुख नूर ॥ श्री० ॥ म० ॥ ३ ॥

श्रीधर्मनाथ जिन स्तवन ।

(राग मल्हार)

धरमनाथ तुज सरखो, साहिब शिर थकेरे

के साहिब शिर थकेरे । चोर जोर जे फोरवें, मुजश्युं इक मनेरे के मु० । गज निमीलिका करवी, तुजनें नवि घटेरे के तु० । जे तुज सन्मुख जोतां, अरिनुं बल मिटेरे के अ० ॥१०॥ रवि उगे गयणं-गणि, तिमिर ते नवि रहेरे के ति० । कामकुंभ घर आवें, दारिद्र किम लहेरे के दा० । वन वि-चरे जो सिंह तो, बीह न गजतणी रे के बी० । कर्म करे श्युं जोर, प्रसन्न जो जगधणी रे के प्र० ॥ २ ॥ सुगुण निर्गुणनो अंतर, प्रभु नवि चित्तें धरेरे के प्र० । निर्गुण पण शरणागत, जाणी हित करे रे के जा० । चंद त्यजें नवि लंछन, मृग अति सामलो रे के मृ० । जश कहे तिम तुम्ह जाणी, मुज अरि बल दलो रे के मु० ॥३॥

श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ।

जग जन मन रंजे रे, मनमथ बल भंजेरे। नवि राग न दोस तूं, अंजे चित्तश्युं रे ॥१॥ शिर छत्र विराजे रे, देव दुंदुभि वाजेरे । ठकु-राइ इम छाजे, तोहिं अकिंचनो रे ॥ २ ॥ थिरता धृति सारी रे, वरी समता नारी रे। ब्रह्मचारी शि रोमणि, तो पण तुं सुणयो रे ॥ ३ ॥ न धरे भवरं-

गोरे, नवि दोषासंगोरे । मृगलंछन चंगो, तो पण तूं सहीरे ॥ ४ ॥ तुज गुण कुण आखेरे, जग केवली पाखेरे । सेवक जश नाखे, अचिरासुत जयोरे ॥ ५ ॥

श्रीकुंथुनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल वीछियानी)

सुखदायक साहिब सांभलो, मुजने तुमश्युं अति रंगरे । तुम्हे तो निरागी हुइ रह्या, ए श्यो एकंगो टंगरे ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम्ह चित्तमां वसवुं मुज घणुं, ते तो उंबर फूल समानरे । मुज चित्त-मां वसहो जो तुम्हे, तो पाम्या नवे निधानरे ॥ सु० ॥ २ ॥ श्रीकुंथुनाथ अम्ह निरवहुं, इम एकंगो पण नेहरे । इणि आकीने फल पामशुं, वली होशे डुखनो छेहरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ आराध्यो का-मित पूरवे, चिंतामणि पाषाणरे । वाचक जश कहे मुज दीजियें, इम जाणी कोडि कल्याणरे ॥ सु० ॥ ४ ॥

श्रीअरनाथ जिन स्तवन ।

(प्रथम गोवालनीं, ए ढाल)

अरजिन दरिशन दीजियेंजी, भविक कमल

वन सूर । मन तरसे मलवा घणुंजी, तुम्हे तो जइ रह्या दूर । सोभागी तुम्हश्युं मुज मन नेह, तुमश्युं मुज मन नेहलोजी, जिम बपइयां मेह ॥ सो० ॥१॥ आवागमन पथिक तणुंजी, नहि शिव नगर निवेश । कागल कुण हाथे लिखूंजी, कोण कहे संदेश ॥ सो० ॥ २ ॥ जो सेवक संभारस्यो जी, अंतरयामी रे आप । जश कहे तो मुज मन तणोजी, टलशे सघलो संताप ॥ सो० ॥ ३ ॥



श्रीमल्लिनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल रसियानी)

मल्लि जिणेसर मुजने तुम्हे मिल्या, जेह मांहिं सुखकंद वाल्हेसर । ते कलियुग अम्हे गिरुओ लेखवुं, नवि बीजा युगवृंद, वाल्हेसर ॥ म० ॥ १ ॥ आरो सारो रे मुज पांचमो, जिहां तुम दरिशण दीठ वा० । मरुभूमि पण थिति सुरतरु तणी, मेरु थकी हुइ इठ ॥ वा० ॥ २ ॥ पंचम आरेरे तुम्ह मेलावडे, रुडो राख्यो रे रंग वा० । चोथो आरो रे फिरि आव्यो गणुं, वाचक जश कहे चंग ॥ वा० ॥ ३ ॥



श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन।

(वीरमाता प्रीतिकारिणी, ए देशी)

आज सफल दिन मुज तणो, मुनिसुव्रत दीठा। भागी ते भावठि भवतणी, दिवस दुरितना नीठा॥ आ०॥ १॥ आंगणे कल्पवेली फली, घन अमियना वूठा। आप माग्या ते पासा ढल्या, सुर समकित तूठा॥ आ०॥ २॥ नियति हित दान सनमुख हुयें, स्वपुण्योदय साथे। जश कहे साहिब मुगतिनुं, करिउं तिलक निज हाथे॥ आ०॥ ३॥

श्रीनमिनाथ जिन स्तवन।

(ऋषभनो वंश रयणायरु, ए देशी)

मुज मन पंकज भमरलो, श्रीनमिजिन जगदीशोरे। ध्यान करुं नित तुम्ह तणुं, नाम जपुं निशदिसोरे॥ मु०॥ १॥ चित्तथकी कदियें न विसरे, देखीयें आगलि ध्यानिरे। अंतर तापथी जाणियें, दूर रह्यां अनुमानिरे॥ मु०॥ २॥ तुं गति तुं मति आसरो, तुंहिज बंधव मोटोरे। वाचक जश कहे तुज विना, अवर प्रपंच ते खोटोरे॥ मु०॥ ३॥

श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन ।

(राजा जो मिले, ए देशी)

क्या कियो तुम्हे कहो मेरे सांई, फेरी चलें रथ तारण आई । दिल जानि अरे मेरा नाह, न त्यजिये नेह कबु अजानि ॥ दि० ॥ १ ॥ अटपटाइ चले धरि कुछ रोष, पसुअनके शिर दे करि दोष ॥ दि० ॥ २ ॥ रंग बिच भयो याथि भंग, सो तो साचो जानो कुरंग ॥ दि० ॥ ॥ ३ ॥ प्रीति तनकामें तोरत आज, किउं नावे मनमें तुम्ह लाज ॥ दि० ॥ ४ ॥ तुम्ह बहु नायक जानो न पीर, विरह लागि जिउं वैरीको तीर ॥ दि० ॥ ५ ॥ हार ठार शिंगार अंगार, अशन वसन न सुहाई लगार ॥ दि० ॥ ६ ॥ तुज बिन लागे शूनि सेज, नही तनु तेज न हारद हेज ॥ दि० ॥ ७ ॥ आओने मंदिर विलसो भोग, बूढापनमें लीजे योग ॥ दि० ॥ ८ ॥ ठेरुगी में नहि तेरो संग, गइलि चलुं जिउं छाया अंग ॥ दि० ॥ ए॥ इम विलवति गइ गढ गिरनार, देखे प्रीतम राजुल नार ॥ दि० ॥ १० ॥ कंते दीनुं केवलज्ञान, कीधी प्यारी आप समान ॥ दि० ॥ ११ ॥ मुगति

महलमें खेले दोइ, प्रणमें जश उल्लसित तन होइ ॥ दि० ॥ १२ ॥

श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल फागनी)

चउ कषाय पाताल कलश जिहां, तिसना पवन प्रचंड । बहु विकल्प कल्लोल चढतुहे, आरति फेन उदंड ॥ भव सायर भीषण तारीयें हो, अहो मेरे ललना पासजी । त्रिभुवन नाथ दिलमें ए विनती धारीयें हो ॥ १ ॥ जरत उदाम काम वरवानल, परत शीलगिरि शृंग । फिरत व्यसन बहु मघर तिमिंगल, करत हे निगम उमंग ॥ भ० ॥ २ ॥ भमरीयाके बीचिं भयंकर, उलटी गुलटी वाच । करत प्रमाद पिशाचन सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥ भ० ॥ ३ ॥ गरजत अरति फुरति रति बिजुरी, होत बहुत तोफान । लागत चोर कुगुरु मलवारी, धरम जिहाज निदान ॥ भ० ॥ ४ ॥ जुरे पाटियें जिउं अति जोरि, सहस अढार शीलंग । धर्म जिहाज तिउं सज करि चलवो, जश कहे शिव-पुरी चंग ॥ भ० ॥ ५ ॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन।

दुख टलियां मुख दीठें मुज सुख ऊपनांरे, भेट्या भेट्या वीर जिणंदरे। हवे मुज मनमंदिरमां प्रभु आवी वसोरे, पामुं पामुं परमानंद रे ॥ दु० ॥ १ ॥ पीठबंध इहां कीधो समकित वज्रनोरे, काढ्यो काढ्यो कचरो ने भ्रांतिरे। इहां अति ऊंचा सोहे चारित्र चंद्रुआरे, रुडी रुडी संवर भातिरे ॥ दु० ॥ २ ॥ कर्म विवर गोपी इहां मोती झूंबणांरे, झूलइ झूलइ धीगुण आठरे। बार भावना पंचाली अचरय करेरे, कोरि कोरि कोरणि काठरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ इहां आवी समता राणीश्युं प्रभु रमोरे, सारी सारी थिरता सेज रे। किम जइ शकश्यो एक वार जो आवशोरे, रंज्या रंज्या हियडानि हेजरे ॥ दु० ॥ ४ ॥ वयण अरज सुणी प्रभु मनमंदिर आवियारे, आपें तूठा तूठा त्रिभुवन भाणरे। श्रीनयविजय विबुध पय सेवक इम भणेरे, तेणि पाम्या पाम्या कोडि कल्याणरे ॥ दु० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमद्यशोविजयोपाध्याय कृत २ जी चोवीशी संपूर्णा ॥



श्रीयशोविजयोपाध्याय कृत—

चौद बोलनी चोवीशी।



श्रीऋषभदेव जिन स्तवन।

(आज सखी संखेसरो, ए देशी)

ऋषभदेव नितु वंदिये, शिवसुखनो दाता। नाभि नृपति जेहनो पिता, मरुदेवी माता। नयरी विनीता ऊपनो, वृषभ लांछन सोहें। सोवन्न वन्न सुहामणो, दीठडे मन मोहें। हांरे दीठडे मन मोहें ॥ १ ॥ धनुष पांचसें जेहनुं, कायानुं मान। चार सहसश्युं व्रत लीयें, गुण रयण विधान। लाख चोराशी पूर्वनुं, आउखुं पाले। अमिय समी दीयें देशना, जग पातिक टाले ॥ हांरे ज० ॥ २ ॥ सहस चोराशी मुनि-वरा, प्रभुनो परिवार। त्रण लक्ष साध्वी कही, शुभ मति सुविचार। अष्टापद गिरि चढी, टाली सवि कर्म। चढी गुणठाणें चउदमें, पाम्या शिव शर्म ॥ हांरे पा० ॥ ३ ॥ गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी, प्रभु सेवा सारे। जे प्रभुनी सेवा करे, तस विघन

निवारे । प्रभु पूजायें प्रणमें सदा, नव निधि तस हाथे । देव सहस सेवा परा, चालें तस साथे ॥ हांरे चा० ॥ ४ ॥ युगला धर्म निवारणो, शिव मारग भाखे । भवजल पड़ता जंतुने, ए साहिब राखे । श्रीनयविजय विबुध जयो, तपगछमां दीवो । तास शीश भावें भणे, ए प्रभु चिरं जीवो ॥ हांरे ए प्रभु० ॥ ५ ॥



श्रीअजितनाथ जिन स्तवन ।

अजित जिणंद जुहारियेंरे लो, जितशत्रु विजया जातरे सुगुण नर । नयरी अयोध्या उपनोरे लो, गजलंछन विख्यातरे सु० ॥ अ० ॥ १ ॥ उंचपणुं प्रभुजीतणुंरे लो, धनुष साढा सें च्याररे सु० । एक सहसश्युं व्रत लियेरे लो, करुणारस भंडाररे सु० ॥ अ० ॥ २ ॥ बोहोतेर लाख पूरव धेरेरे लो, आउखुं सोवन वानरे सु० । लाख एक प्रभुजीतणारे लो, मुनि परिवारनुं मानरे सु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ लाख त्रण भली संयतीरे लो, ऊपर त्रीश हजाररे सु० । समेतशिखर शिवपद लहीरे लो, पाम्या भवनो पाररे सु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अजित-

बला शासनसुरीरे लो, महायक्ष करे सेवरे सु० । कवि जशविजय कहे सदारे लो, ध्याउं ए जिन-देवरे सु० ॥ अ० ५ ॥

श्रीसंभवनाथ जिन स्तवन ।

(महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं, ए देशी)

माता सेना जेहनी, तात जितारी उदार लालरे । हेम वरण हय लंछनो, सावत्थी शिणगार लालरे । संभव भवभय भंजणो ॥ १ ॥ सहस पुरुषशुं व्रत लिये, च्यारसें धनुष तनु मान लालरे । साठ लाख पूरव धरें, आउखुं सुगुण निधान लालरे ॥ सं० ॥ २ ॥ दोइ लाख मुनिवर भला, प्रभुजीनो परिवार लालरे । त्रण लाख वर संयती, ऊपर छत्रीश हजार लालरे ॥ सं० ॥ ३ ॥ समेतशिखर शिव पद लह्युं, तिहां करे महोच्छव देव लालरे । दुरितारी शासनसुरी, त्रिमुख यक्ष करे सेव लालरे ॥ सं० ॥ ४ ॥ तुं माता तुं मुज पिता, तुं बंधव त्रण काल लालरे । श्रीनयविजय विबुध तणो, शिष्य कहे दुख टाल लालरे ॥ सं० ॥ ५ ॥

श्रीअभिनंदन जिन स्तवन ।

अभिनंदन चंदन, शीतल वचन विलास । संवर सिद्धारथा, नंदन गुणमणि वास ॥ त्रणसें धनु प्रभु तनु, ऊपर अधिक पंचास । एक सहस्रशुं दीक्षा, लिये छांडी भवपास ॥ १ ॥ कंचनवान सोहें, वानर लंछन स्वामी । पंचास लाख पूरव, आयु धरे शिवगामी ॥ वर नयरी अयोध्या, प्रभुजीनो अवतार । संमेतशिखर गिरि, पाम्या भवनो पार ॥ २ ॥ त्रण लाख मुनीश्वर, तप जप संजम सार । षट लक्ष छत्रीश, साध्वीनो परिवार ॥ शासनसुर ईश्वर, संघनां विघन निवारें । काली दुख टाली, प्रभुसेवकने तारें ॥ ३ ॥ तुं भवभय भंजन, जन मन रंजन रूप । मनमथ गद गंजन, अंजन रति हित सरूप ॥ तुं भुवनें विरोचन, गतशोचन जग दीसे । तुज लोचन लीला, लहि सुख नित दीसे ॥ ४ ॥ तुं दोलतदायक, जगनायक जगबंधु । जिनवाणी साची, ते तरिया भवसिंधु ॥ तुं मुनि मन पंकज, भ्रमर अमर नर राय । उभा तुज सेवें, बुध जन तुज जश गाय ॥ ५ ॥

श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन ।

(भोलुडारे हंसा, ए देशी)

नयरी अयोध्यारे माता मंगला, मेघ पिता जस धीर । लंछन क्रौंच करें पद सेवना, सोवन वान् शरीर ॥ १ ॥ मुज मन मोह्युंरे सुमति जिणे-सरे, न रुचे को पर देव । खिण खिण समरुंरे गुण प्रभुजी तणा, ए मुज लागीरे टेव ॥ मु० ॥ २ ॥ त्रणसें धनु तनु आयु धरें प्रभु, पूरव लाख चालीश । एक सहसशुं दीक्षा आदरी, विचरे श्री जगदीश ॥ मु० ॥ ३ ॥ समेतशिखर गिरि शिव पदवी लही, त्रण लाख वीश हजार । मुनि-वर पण लख प्रभुनी संयती, त्रीश सहस वली सार ॥ मु० ॥ ४ ॥ शासनदेवी महाकाली भली, सेवें तुंबरु यक्ष । श्रीनयविजय बुध सेवक भणें, होजो मुज तुज पक्ष ॥ मु० ॥ ५ ॥



श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन ।

(ढाल—झांझरीआनी)

कोसंबी नयरी भलीजी, धर राजा जस तात । मात सुसीमा जेहनीजी, लंछन कमल विख्यात । पद्म प्रभुस्युं लाग्यो मुज मन रंग ॥ १ ॥

त्रीश लाख पूरव धरेंजी, आउखुं नव रवि वन्न । धनुष अढीसें उच्चताजी, मोहे जगजन मन्न ॥ प० ॥ २ ॥ एक सहसश्युं व्रत लियेजी, समेत-शिखर शिव ठाम। त्रण लाख त्रीस सहस जलाजी, प्रज्ञुना मुनि गुणधाम ॥ प० ॥ ३ ॥ शीलधारिणी संयतीजी, चार लाख वीश हजार । कुसुम यक्ष श्यामा सुरीजी, प्रज्ञु शासन हितकार ॥ प० ॥ ४ ॥ ए प्रज्ञु कामित सुरतरुजी, जवजल तरण जिहाज । कवि जशविजय कहे इहांजी, सेवो ए जिन-राज ॥ प० ॥ ५ ॥



श्रीसुपासनाथ जिन स्तवन ।

(नंदनकुं त्रिशला हुलरावे, ए देशी)

तात प्रतिष्ठ ने पृथिवी माता, नयर वारा-णसी जायोरे । स्वस्तिक लंछन कंचन वरणो, प्रत्यक्ष सुरतरु पायोरे । श्रीसुपास जिन सेवा कीजे ॥ १ ॥ एक सहसश्युं दीक्षा लीधी, बे सय धनुष प्रज्ञु कायारे । वीश लाख पूरवनुं जीवित, समेतशिखर शिव पायारे ॥ श्री० ॥ २ ॥ त्रण लाख प्रज्ञुना मुनि गिरुआ, चार लाख त्रीश हजाररे । गुण मणि मंमित शील अखंमित,

साध्वीनो परिवाररे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सुर मातंग ने देवी शांता, प्रभु शासन अधिकारीरे । ए प्रभुनी जेणे सेवा कीधी, तेणे निज दुरगति वारीरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मंगल कमला मंदिर सुंदर, मोहनवल्ली कंदोरे । श्रीनयविजय विबुध पय सेवक, कहे ए प्रभु चिर नंदोरे ॥ श्री० ॥५॥



श्रीचंद्रप्रभ जिन स्तवन ।

(वादल दह दिशि उनह्यो सखि, ए देशी)

श्रीचंद्रप्रभ जिनराजीओ, मुह सोहें पुनिमचंद । लंछन जस दीपे चंद्रनुं, जग जन नयनानंदरे, प्रभु टाले भवभय फंदरे, केवल कमला अरविंदरे, ए साहिब मेरे मन वस्यो ॥ १ ॥ महसेन पिता माता लक्ष्मणा, प्रभु चंद्रपुरी शिणगार। दोढसें धनु तनु उच्चता, शुचि वरणें शशी अनुकाररे, उतारे भवजल पाररे, करे जनने बहु उपगाररे, दुख दावानल जलधाररे॥ए०॥ २ ॥ दश लाख पूरव आउखुं, व्रत एक सहस परिवार । समेत शिखर शिवपद लह्युं, ध्यायी शुभ ध्यान उदाररे, टाली पातिक विस्ताररे, हुआ जगजनना आधाररे, मुनिजन मन पिक सहकाररे ॥ ए० ॥ ३ ॥ मुनि लाख

अढी प्रभुजी तणा, तेम संयम गुणह निधान । त्रण लाख वर साहुणी वली, असीअ सहसनुं मानरे, कहे कवियण जस गुणगानरे, जिणे जित्या क्रोधने मानरे, जेणे दीधुं नरसीदानरे, वरषा-जलधर अनुमानरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ सुर विजय नाम भृकुटी सुरी, प्रभु शासन रखवाल । कवि जश-विजय कहे सदा, ए प्रणमो प्रभु त्रिहु कालरे, जस पद प्रणमे भूपालरे, जस अष्टमी शशि सम भालरे, जे टाले भवजंजालरे ॥ ए० ॥ ५ ॥

श्रीसुविधिनाथ जिन स्तवन ।

(भावना मालती चुसीए, ए देशी)

सुविधि जिनराज मुज मन रमो, सवि गमो भवतणो तापरे । पाप प्रभु ध्यानथी उपशमो, वीशमो चित्त शुभ जापरे ॥ सु० ॥ १ ॥ राय सुग्रीव रामा सुतो, नयरी काकंदी अवताररे । मच्छ लंछन धरे आउखुं, लाख दोइ पूर्व निर-धाररे ॥ सु० ॥ २ ॥ एक शत धनुप तनु उच्चता, व्रत लिए सहस परिवाररे । समेतशिखर शिवपद लहें, फटिक सम कांति विस्ताररे ॥ सु० ॥ ३ ॥ लाख दोइ साधु प्रभुजीतणा, लाख एक सहस

वली वीशरे । साहुणी चरणगुण धारिणी, एह परिवार जगदीशरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अजित सुर वर सुतारा सुरी, नित करे प्रभुतणी सेवरे । श्रीनय-विजय बुध शिष्यनें, चरण ए स्वामि चित्त सेवरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन ।

(कपूर होइ अति ऊजलुं रे, ए देशी)

शीतल जिन भद्दिलपुरीरे, दृढरथ नंदा जात । नेउं धनुष तनु उच्चताजी, सोवन वान विख्यातरे । जिनजी तुजश्युं मुज मन नेह, जिम चातकने मेहरे, तुं छे गुणमणि गेहरे ॥ जि० तु० ॥ १ ॥ श्रीवत्स लंछन सोहतोजी, आयु पूरव लख एक । एक सहसश्युं व्रत लीयेंजी, आणी हृदय विवेकरे ॥ जि० तु० ॥ २ ॥ समेतशिखर शुभ ध्यानथीजी, पाम्या परमानंद । एक लख षट साहुणीजी, एक लाख मुनि वृंदरे ॥ जि० तु० ॥ ३ ॥ सावधान ब्रह्मा सदाजी, शासन विघन हरेइ । देवी अशोका प्रभुतणीजी, अहनिशि भगति करेइरे ॥ जि० ॥ तु० ॥ ४ ॥ परम पुरुष पुरुषोत्तमोजी, तूं नरसिंह निरीह । कवियण

तुज जश गावतांजी, पवित्र करे निज जीहरे ॥ जि० तु० ॥ ५ ॥

श्रीश्रेयांसनाथ जिन स्तवन।

(नयरी अयोध्या जयवतीरे, ए देशी)

सिंहपुरी नयरी ज्जलीरे, विष्णु नृपति जस तात। माता विष्णु महासतीरे, लीजे नाम प्रज्ञातोरे। जिन गुण गाइए ॥ १ ॥ श्रीश्रेयांस जिनेसरुरे, कनक वरण शुचि काय। लाख चोराशी वरषनुंरे, पाले प्रज्ञु निज आयोरे ॥ जि० ॥ २ ॥ एक सहसश्युं व्रत लीयेंरे, असिय धनुष तनु मान। खम्गी लंछन शिव लहेंरे, समेतशिखर शुज्ञ ध्यानरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ सहस चोराशी मुनिवरारे, त्रण सहस लख एक। प्रज्ञुजीनी वर साहुणीरे, अदज्ञुत विनय विवेकरे॥ जि० ॥४॥ सुर मनुजेश्वर मानवीरे, सेवे पय अरविंद। श्रीनयविजय सुशीशनेरे, ए पज्ञु सुरतरु कंदरे ॥ जि० ॥ ५ ॥

श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन।

(ऋषभनो वंश रयणायरु, ए देशी)

श्रीवसुपूज्य नरेसरु, तात जया जस मातारे।

लंछन महिष सोहामणो, वरणे प्रभु अति रातारे॥ गाइयें जिन गुण गहगही ॥ १ ॥ श्रीवासुपूज्य जिणेसरु, चंपापुरी अवताररे। वरष बोतेर लाख आउखुं, सत्तरि धनु तनु साररे ॥ गा० ॥ २ ॥ षट शत साथे संजम लियें, चंपापुरी शिवगामीरे। सहस बहोत्तर प्रभुतणा, नमियें मुनि शिर नामीरे ॥ गा० ॥ ३ ॥ तप जप संयम गुण भरी, साहुणी लाख वखाणीरे। यक्ष कुमार सेवा करे, चंडा देवीमां जाणीरे ॥ गा० ॥ ४ ॥ जनमन कामित सुरमणी, भवदव मेह समानरे। कवी जशविजय कहे सदा, हृदय कमल धरो ध्यानरे ॥ गा० ॥ ५ ॥

श्रीविमलनाथ जिन स्तवन।

सजनी विमल जिनेसर पूजीये, लेइ केसर घोलाघोल। सजनी भगति भावना भावियें, जिम होइ घरे रंग रोल। सजनी विमल जिनेसर पूजीयें ॥ १ ॥ स० ॥ कंपिलपुर कृतवर्मनो, नंदन श्यामाजात। स० अंक वराह विराजतो, जेहना शुचि अवदात ॥ स० वि० ॥ २ ॥ स० साठ धनुष तनु उच्चता, वरस साठ लाख आय। एक सहसश्युं व्रत लिये, कंचनवरणी काय ॥ स० वि०

॥३॥ स० समेतशिखर शिवपद लह्युं, मुनीअरुसठ हजार । स० एक लाख प्रभु साहुणी, वली अठ शत निरधार ॥ स० वि० ॥ ४ ॥ स० षण्मुख दिता प्रभु तणे, शासनधर अधिकार । स० श्रीनयविजय विबुधतणा, सेवकने जयकार ॥ स० वि० ॥ ५ ॥

श्रीअनंतनाथ जिन स्तवन ।

(इडर आंवा आंवलीरे, ए देशी)

नयरी अयोध्या ऊपनारे, सिंहसेन कुल-चंद । सींचाणो लंछन भलोरे, सुयसा मातानो नंद । भविक जन सेवो देव अनंत ॥ १ ॥ वरष त्रीश लाख आउखुंरे, उंचा धनुष पंचाश । कनक वरण तनु सोहतोरे, पूरे जगजन आश ॥ भ० ॥ ॥ २ ॥ एक सहसश्युं व्रत ग्रहीरे, समेत शिखर निरवाण । छासठ सहस मुनीश्वररे, प्रभुना श्रुत गुण जाण ॥ भ० ॥ ३ ॥ बासठ सहस सुसाहु-णीरे, प्रभुजीनो परिवार । शासनदेवी अंकुशीरे, सुर पाताल उदार ॥ भ० ॥ ४ ॥ जाणे निज मन दासनुंरे, तूं जिन जग हितकार । बुध जश प्रेमें विनवेरे, दीजे मुज दीदार ॥ भ० ॥ ५ ॥

श्रीधर्मनाथ जिन स्तवन ।

रतनपुरी नयरी हुओरे लाल, लंछन वज्र उदार मेरे प्यारेरे । भानु नृपति कुल केसरीरे लाल, सुव्रता मात मल्हार ॥ मेरे प्यारेरे धर्म जिनेसर ध्याइयेरे लाल ॥ १ ॥ आयु वरष दश लाखनुंरे लाल, धनु पणयाल प्रसिद्ध । मे० । कंचन वरण विराजतोरे लाल, सहस साथे व्रत लीध ॥ मे० ध० ॥ २ ॥ सिद्धिकामिनी करग्रहेरे लाल, समेतशिखर अतिरंग । मे० । सहस चोसठ सोहामणारे लाल, प्रभुना साधु अभंग ॥ ॥ मे० ध० ॥ ३ ॥ बासठ सहस सुसाहुणीरे लाल, वली उपरि सत चार । मे० । कंदर्पा शासनसुरीरे लाल, किन्नर सुर सुविचार ॥ मे० ध० ॥ ४ ॥ लटकाले तुज लोअणेरे लाल, मोह्या जगजन चित्त । मे० । श्रीनयविजय विबुधतणोरे लाल, सेवक समरे नित्त ॥ मे० ध० ॥ ५ ॥

श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ।

(त्रिभुवन तारण तीरथ, ए देशी)

गजपुर नयर विभूषण, दूषण टालतोरे के दूषण० । विश्वसेन नरनाहनुं कुल अजुआलतोरे के

कुल०। अचिरानंदन वंदन, कीजे नेहश्युंरे के कीजे०। शांतिनाथ मुख पूनिम, शशि परि उल्लश्युंरे के। श०॥१॥ कंचन वरणी काया, माया परिहरेरे के। माया०। लाख वरषनुं आउखुं, मृग लंछन धरेरे के। मृग०। एक सहसश्युं व्रत ग्रहे, पातिक वन दहेरे के। पा०। समेत शिखर शुभ ध्यान थी, शिवपदवी लहेरे के। शिव० ॥२॥ चालीश धनु तनु राजें, भाजे भय घणारे के। भा०।बासठ सहस मुनीसर, विलसें प्रभुतणारे के। वि०। एकसठ सहस छसें वली, अधिकी साहुणीरे के। अ०। प्रभु परिवारनी संख्या, ए साची मुणीरे के॥ ए०॥३॥ गरुड यक्ष निरवाणी, प्रभु सेवा करेरे के॥ प्र०॥ ते जन बहु सुख पावशे, जे प्रभु चित्त धरेरे के। जे०। मद झरता गाजे, तस घरि आंगणेरे के। त०। तस जगहिमकर सम, जश कवियण भणेरे के॥ ज०॥४॥ देव गुणाकर चाकर, हुं छुं ताहरोरे के। हुं०। नेह नजर भरि मुजरो, मानो माहरोरे के। मा०। तिहुअण भासन शासन, चित्त करुणा करोरे के। चि०। कवि जशविजय पयंपे, मुज भव दुख हरोरे के॥ मु०॥५॥

श्रीकुंथुनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल मरकलडानी)

गजपुर नयरी सोहियेंजी साहिब गुणनिलो । श्रीकुंथुनाथ मुख मोहियेंजी साहिब गुणनिलो ॥ सूर नृपति कुल चंदोजी सा० । श्रीनंदन त्रावे वंदोजी ॥ सा० ॥ १ ॥ अजलंछन वंछित पूरेजी सा० । प्रभु समरिओ सकट चूरेजी सा०।पांत्रीश धनुष तनु मानेजी सा०। व्रत एक सहस अनुमानेजी॥सा०॥२॥ आयु वरष सहस पंचाणुंजी सा० । तनु सोवन वान वखाणुंजी सा० ॥ समेत शिखर शिवपायाजी सा० । साठ सहस मुनीश्वर रायाजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ षटशत वली साठ हजारजी सा० । प्रभु साध्वीनो परिवारजी सा० ॥ गंधर्व बला अधिकारीजी सा० । प्रभु शासन सांनिधकारीजी ॥ सा० ॥ ४ ॥ सुख दायक मुखने मटकेजी सा० । लाखेणे लोयण लटकेजी सा० ॥ बुध श्रीनयविजय मुणिंदोजी सा० । सेवकने दिओ आणंदोजी ॥ सा० ॥ ५ ॥

श्रीअरनाथ जिन स्तवन ।

(समर्यांरे साद दिइरे देव, ए देशी)

अरजिन गजपुर वर शिणगार, तात सुदर्शन देवी मल्हार। साहिव सेवियें, मेरे मनको प्यारो सेवियें । त्रीश धनुष प्रजु ऊंची काय, वरष सहस चोराशी आय ॥ सा० ॥ १ ॥ नंदावर्त विराजे अंक, टालें प्रजु जव जावना आतंक सा० ॥ एक सहसश्युं संयम लीध, कनक वरण तनु जगत प्रसिद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ समेत शिखर गिरि सवल उगाह, सिद्धिवधूनो कोरे विवाह । सा० । प्रजुना मुनि पंचास हजार, साठ सहस साध्वी परिवार ॥ सा० ॥ ३ ॥ यक्ष इंद्र प्रजु सेवाकार, धारिणी शासननी करे सार। सा० । रवि उगे नासे जिम चोर, तिम प्रजुना ध्यानें करम कठोर ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं सुरतरु चिंतामणि सार, तुं प्रजु जगति मुगति दातार । सा०। वुध जशविजय करे अरदास, दीठें परमानंद विलास ॥ सा० ॥ ५ ॥

श्रीमल्लिनाथ जिन स्तवन ।

(प्रथम गोवालातणे भवेजी, ए देशी)

मिथिला नयरी अवतर्याजी, कुंज नृपति

कुलभाण । राणी प्रभावती उर धर्योंजी, पचवीश धनुष प्रमाण । भविक जन वंदो मल्लि जिणंद, जिम होयें परम आनंद भविक जन० ॥ १ ॥ लंछन कलश विराजतोजी, नील वरण तनु कांति । संयम लीये शत त्रणस्युंजी, भाजे भवनी भ्रांति भ० वं० ॥ २ ॥ वरष पंचावन सहसनुंजी, पालीए पूरण आय । समेतशिखर शिवपद लह्युंजी, सुर किन्नर गुण गाय ॥ भ० वं० ॥ ३ ॥ सहस पंचा-वन साहुणीजी, मुनि चालीश हजार । वैरोट्या सेवा करेजी, यक्ष कुबेर उदार ॥ भ० वं० ॥ ४ ॥ मूरति मोहनवेलडीजी, मोहे जग जन जाण । श्रीनयविजय सुशीशनेजी, दिये प्रभु कोटि कल्याण ॥ भ० वं० ॥ ५ ॥



श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

(ढाल रसियानी)

पद्मादेवी नंदन गुणनिलो, राय सुमित्र कुल चंद, कृपानिधि । नयरी राजगृही प्रभुजी अवतर्यो, प्रणमें सुरनर वृंद, कृपानिधि, मुनि-सुव्रत जिन भावे वंदियें ॥ १ ॥ कच्छप लंछन

साहिव शामलो, वीश धनुष तनुमान कु०। त्रीश सहस संवत्सर आउखुं, वहु गुण रयण निधान। कु० मु० ॥ २ ॥ एक सहसश्युं प्रजुजी व्रत ग्रहि, समेतशिखर लहि सिद्धि कु०। सहस पंचास विराजे साहुणी, त्रीश सहस मुनि प्रसिद्धि ॥ ॥ कु० मु० ॥ ३ ॥ नरदत्ता प्रजु शासनदेवता, वरुण यक्ष करे सेव कु०। जे प्रजु जगति राता तेहना, विघन हरे नितमेव ॥ कु० मु० ॥ ४ ॥ जावठ जंजन जन मन रंजनो, मूरति मोहनगार कु०। कवि जशविजय पयंपे जवजवे, ए मुज एक आधार ॥ कु० मु० ॥ ५ ॥



श्रीनमिनाथ जिन स्तवन।

(काज सिध्यां सकल हवे सार, ए देशी)

मिथिलापुर विजय नरिंद, वप्रासुत नमि जिनचंद। नीलुप्पल लंछन राजे, प्रजु सेव्यो जावठ जाजे ॥ १ ॥ धनुप पन्नर उंच शरीर, सोवन वान साहस धीर। एक सहसश्युं लिये निरमाय, व्रत वरप सहस दश आय ॥ २ ॥ समेतशिखर आरोही, पुहता शिवपुर निरमोही। मुनि वीश सहस शुज नाणी, प्रजुना उत्तम गुण

खाणी ॥ ३ ॥ वली साध्वीनो परिवार, एक ता-
लीश सहस उदार । सुर भृकुटि देवी गंधारी,
प्रभु शासन सांनिधकारी ॥ ४ ॥ तुज कीरति
जगमां व्यापी, तप तपे प्रबल प्रतापी । बुध श्रीनय-
विजय सुसीस, इम दियें नित नित आसीस ॥५॥



श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल फागनी)

समुद्र विजय शिवादेवी, नंदन नेमिकुमार।
शोरियपुर दश धनुषनुं, लंछन शंख सफार ॥
एक दिन रमतो आवियो, अतुलीबल अरिहंत ।
जिहां हरी आयुधशाला, पूरे शंख महंत ॥ १ ॥
हरी नय नरि तिहां आवे, पेखे नेमि जिणंद ।
सरिखें सम बल परखें, तिहां जिते जिनचंद ॥
आज राज ए हरशे, करशे अपयश भूरि । हरी
मन जाणी आणी, तव थइ गगने अभूरि ॥ २ ॥
अणपरण्यें व्रत लेशे, देशे जग सुख एह । हरी
मत बीहे ईहे, प्रभुस्युं धर्म सनेह ॥ हरी सन-
कारी नारी, तव जन मज्जन जंति । मान्युं मा-
न्युं परणवुं, इम सवि नारी कहंति ॥ ३ ॥ गुण-
मणि पेटी खेटी, उग्रसेन नृप पास । तव हरी

जाचें माचें, माथे प्रेमविलास ॥ तूर दिवाजे गाजें, गाजे चामर कंति । हवे प्रभु आव्या परणवा, नवनवा उत्सव हुंति ॥ ४ ॥ गोखे चढी मुख देखे, राजीमती भर प्रेम । राग अमीरस वरषें, हरषें पेखी नेम ॥ मन जाणे ए टाणे, जो मुज परणे एह । संभारे तो रंभा, सवल अचंभा तेह ॥ ५ ॥ पशुअ पुकार सुणी करी, इणि अवसरे जिनराय । तस दुख टाली वाली, रथ व्रत लेवा जाय ॥ तव बाला दुख झाला, परवशि करेरे विलाप, कहियें जो हवे हुं भंभी, तो देश्यो व्रत आप ॥ ६ ॥ सहस पुरुषश्युं संयम, लिये शामल तनु कंति । ज्ञान लही व्रत आपे, राजीमती शुभ शंति ॥ वरष सहस आउखु, पाली गढ गिरनार । परण्या पूर्व महोत्सव, भव भंभी शिवनार ॥ ७ ॥ सहस अढार मुनीसर, प्रभुजीना गुणवंत । चालीश सहस सुसाहुणी, पामी भवनो अंत ॥ त्रिभुवन अंबा अंबा, देवी सुर गोमेध । प्रभु सेवामां निरता, करता पाप निषेध ॥ ८ ॥ अमल कमल दल लोचन, शोचन रहित निरीह । सिंह मदन गज भेदवा, ए जिन अकल अबीह ॥ शृंगारी गुणधारी, ब्रह्मचारी शिर लीह । कवि

जशविजय निपुण गुण गावे तुज निश दीह ॥ए॥

श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

नयरी वाराणसी अवतर्यो हो, अश्वसेन कुलचंद । वामानंदन गुणनिलो हो, पासजी शिव तरु कंद ॥ परमेसर गुण नितु गाइयें हो ॥ १ ॥ फणिलंछन नव कर तनु जिनजी, सजल घनाघन वन्न । संयम लियें शत तीनश्युं हो, सवि कहे ज्युं धन धन्न ॥ प० ॥ २ ॥ वरष एक शत आउखुं हो, सिद्धी समेत गिरीश। सोल सहस मुनि प्रनुतणा हो, साहुणी सहस अमतीस ॥ प० ॥३॥ धरणराज पद्मावती हो, प्रनु शासन रखवाल । रोग शोग संकट टले हो, नाम जपत जपमाल ॥प०॥ ॥ ४ ॥ पास आशपूरण अब मेरी, अरज एक अवधार । श्रीनय विजय विबुध पय सेवक, जश कहे नवजल तार ॥ प० ॥ ५ ॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन ।

(राग धन्याश्री)

आज जिनराज मुज काज सिध्यां सवे, तुं कृपाकुंन जो मुज्ऊ तूठो । कल्पतरु कामघट कामधेनु मिल्यो, अंगणे अमियरस मेह वूठो ॥

आ० ॥१॥ वीर तुं कुंमपुर नयर जूषण हुओ, राय सिद्धार्थ त्रिशला तनुजो । सिंह लंछन कनक वर्ण कर सप्त धनु, तुज समो जगतमां को न दुजो ॥ आ० ॥ २ ॥ सिंह परे एकलो धीर संयम ग्रहें, आयु बोहोत्तर वरष पूर्ण पाली । पुरी अपापायें निष्पाप शिववहू वर्यो, तिहां थकी सर्व प्रगटी दीवाली ॥ आ० ॥ ३ ॥ सहस तुज चजद मुनिवर महा संयमी, साहुणी सहस छत्रीश राजे । यक्ष मातंग सिद्धायिका वर सुरी, सकल तुज जविकनी जीति जाजे ॥ आ० ॥ ४ ॥ तुज वचन राग सुखसागरे झीलतो, पीलतो मोह मिथ्यात्व वेली । आवीओ जाविओ धरमपथ हुं हवे, दीजियें परमपद होइ वेली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सिंह निशि दीह जो हृदयगिरि मुज रमें, तुं सुगुणलीह अविचल निरीहो । तो कुमतरंग मातंगना यूथथी, मुज नही कोइ लवलेश बीहो ॥ आ० ॥ ६ ॥ शरण तुज चरणमें चरणगुणनिधि ग्रह्या, जव तरण करण दम शरम राखो । हाथ जोमी कहें जशविजय बुध इश्युं, देव निज जवनमां दास राखो ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीयशोविजयोपाध्याय कृत चोद बोल्नी चोविशी संपूर्ण ॥



अथ ।

॥ श्रीदेवविजयजी कृत अष्ट प्रकारी पूजा ॥

तत्र ।

॥ प्रथम न्हवण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अजर अमर निकलंक जे, अगम्य रूप अनंत ।
अलख अगोचर नित्य नमुं, परम प्रभुतावंत ॥ १ ॥
श्रीसंभव जिन गुणनिधि, त्रिभुवन जन हितकार ।
तेहना पद प्रणमी करी, कहिशुं अष्ट प्रकार ॥ २ ॥
प्रथम न्हवण पूजा करो, बीजी चंदन सार ।
त्रीजी कुसुम वली धूपनी, पंचमी दीप मनोहार ॥ ३ ॥
अक्षत फल नैवेद्यनी, पूजा अतिहि उदार ।
जे भवियण नित नित करे, ते पामें भवपार ॥ ४ ॥
रतन जडित कलशे करी, न्हवण करो जिन भूप ।
पातक पंख पखालतां, प्रगटे आतम स्वरूप ॥ ५ ॥
द्रव्य भाव दोय पूजना, कारण कार्य संबंध ।
भावस्तव पुष्टि भणी, रचना द्रव्य प्रबंध ॥ ६ ॥

शुभ सिंहासन मांडीने, प्रभु पधरावो भक्त ।
पंच शब्द वाजित्रशुं, पूजा करियें व्यक्त ॥७॥

॥ ढाल पहेली ॥

(अनेहांरे जिन मंदिर रलियामणुं रे, ए देशी)

अनेहांरे न्हवण करो जिनराजने रे, ए तो शुद्धालंबन देव । परमातम परमेसरू रे, जसु सुरनर सारे सेव ॥ न्ह० ॥ १ ॥ अ० मागध तीर्थ प्रभासनां रे, सुरनदी सिंधुनां लेव । वरदाम क्षीर समुद्रनां रे, नीरे न्हवे जेम देव ॥ न्ह० ॥ २ ॥ अ० तेम भवि भावे तीर्थोदके रे, वासोवास सुवास । ओषधीओ पण भेली करी रे, अनेक सुगंधित खास ॥ न्ह० ॥ ३ ॥ अ० काल अनादि मल टालवा रे, भालवा आतम रूप । जलपूजा युक्ते करी रे, पूजो श्रीजिन भूप ॥ न्ह० ॥ ४ ॥ अ० विप्रवधू जलपूजथी रे, जेम पामी सुख सार । तेम तमे देवाधिदेवने रे, अर्ची लहो भवपार ॥ न्ह० ॥ ५ ॥

(काव्यम्)

विमलकेवलदर्शनसंयुतं सकलजन्तुमहोदयकारणम् ।
सहजशुद्धिकृते स्नपयाम्यहं, जिनवरं नयचन्द्रमयात्ममना ॥१॥

॥ अथ द्वितीय चन्दनपूजा ॥

(दोहा)

हवे बीजी चंदन तणी, पूजा करो मनोहार ।
मिथ्या ताप अनादिनो, टालो सर्व प्रकार ॥१॥
पुद्गल परिचय करी घणो, प्राणी थयो दुर्वास ।
सुगंध द्रव्ये जिन पूजीने, करो निज शुद्ध सुवास ॥

॥ ढाल बीजी ॥

(मनथी डरणां परनारी संग न करणां, ए देशी)

भवि जिन पूजो, दुनियामां देव न दूजो । जे अरिहा पूजे, तस भवनां पातक धूजे ॥ भ० ॥ १ ॥ प्रभु पूजा बहु गुण भरीरे, कीजे मनने रंग । मन वच काया थिर करीरे, अरचो अरिहा अंग ॥ भ० ॥ २ ॥ केसर चंदन घसी घणुं रे, मांहे भेली घनसार । रत्न कचोलीमांहि धरी रे, प्रभु पद चरचो सार ॥ भ० ॥ ३ ॥ भव दव ताप शमाववा रे, तरवा भव जल तीर । आतम सरूप निहालवा रे, रूडो जगगुरु धीर ॥ भ० ॥ ४ ॥ पद जानु कर अंस शिरे रे, भाल गले वली सार । हृदय उदर प्रभुने सदा रे, तिलक करो मन प्यार ॥ भ० ॥ ५ ॥ एणिविध जिनपद

पूजना रे, करतां पाप पलाय । जेम जयसुरने शुभमति रे, पाम्या अविचल ठाय ॥ भ० ॥ ६ ॥

(काव्यम्)

जगदुपाधिचयाद् रहितं हितं, सहजतत्त्वकृते गुणमन्दिरम् ।
विनयदर्शनकेसरचन्दनैरमलह्न्मलहृज्जिनमर्चये ॥ १ ॥

॥ इति द्वितीय चन्दनपूजा समाप्ता ॥

अथ तृतीय कुसुमपूजा ।

॥ दोहा ॥

त्रीजी कुसुमतणी हवे, पूजा करो सद्-भाव । जेम दुष्कृत दूरे टले, प्रगटे आतम स्व-भाव ॥ १ ॥ जे जन षट् ऋतु फूलशुं, जिन पूजे त्रण काल । सुर नर शिव सुख संपदा, पामे ते सुरसाल ॥ २ ॥



ढाल त्रीजी ।

(साहेलडीयांनी देशी)

कुसुम पूजा भवि तुमे करो, साहेलडीयां । आणी विविध प्रकार, गुण वेलडीयां ॥ जाई जूई केतकी सा० । मरुओ सार गु० ॥ १ ॥ मोघरो चंपक मालती सा० । पाडल पद्म ने वेल गु० ॥ बोलसिरी जासूलशुं सा० । पूजो मनने गेल

गु० ॥ २ ॥ नाग गुलाब सेवंतरी सा० । चंपेली मचकुंद गु० ॥ सदा सोहागण दाउदी सा० । प्रियंगु पुंनागना वृंद गु० ॥ ३ ॥ बकुल कोरंट अंकोलथी सा० । केवडो ने सहकार गु० ॥ कुंदादिक पमुहा घणे सा० । पुष्पतणे विस्तार ॥ गु० ॥ ४ ॥ पूजे जे जवि जावशुं सा० । श्रीजिन केरा पाय गु० ॥ वणिक सुता लीलावती सा० । जिम लहे शिवपुर ठाय गु० ॥ ५ ॥

(काव्यम्)

सुकरुणासुनृतार्जवमार्दवैः प्रशमशौचशमादिसुमैर्जनाः ! ।
परमपूज्यपदस्थितमर्चत परमुदारमुदारगुणं जिनम् ॥ ६ ॥

॥ इति तृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥

अथ चतुर्थ धूप पूजा ।

॥ दोहा ॥

अर्चा धूपतणी करो, चोथी हर्ष अमंद ।
कर्मेंधन दाहन जणी, पूजो श्रीजिनचंद ॥ १ ॥
सुविधि धूप सुगंधशुं, जे पूजे जिनराय ।
सुर नर किन्नर ते सवि, पूजे तेहना पाय ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

(सामरी सुरत पर मेरो दिल अटक्यो, ए देशी)

अरिहा आगे धूप करीने, नर भव लाहो लीजेरी । अगर चंदन कस्तूरी संयुत, कुंदरुमांहि धरीजेरी ॥ अरि० ॥ १ ॥ चूरण शुद्धि दशांग अनोपम, तुरुक अंबर भावीजेरी । रत्न जडित धूपधाणामांहे, शुभ घनसार ठवीजेरी ॥ अरि० ॥ २ ॥ पवित्र थई जिन मंदिर जईने, आशय शुद्ध करीजेरी । धूप प्रगट वामांगे धरतां, भव भव पाप हरीजेरी ॥ अरि० ॥ ३ ॥ समता रस सागर गुण आगर, परमातम जिन पूरारी । चिदानंद घन चिन्मय मूरति, झगमग ज्योति सनूरारी ॥ अरि० ॥ ४ ॥ एहवा प्रभुने धूप करंतां, अविचल सुखमां लहियेरी । इहभव परभव संपत्ति पामे, जेम विनयंधर कहियेरी ॥ अरि० ॥ ५ ॥



(काव्यम्)

अशुभपुद्गलसंचयवारणं समसुगन्धकरं तपधूपनम ।
भगवता सुपुरोहितकर्मणा जयवतो यततोऽजयसंपदा ॥ १ ॥

॥ इति चतुर्थ धूपपूजा समाप्ता ॥



अथ पंचम दीपकपूजा ।

॥ दोहा ॥

निश्चय धन जे निजतणुं, तिरोभाव छे तेह ।
प्रभुमुख द्रव्य दीपक धरी, आविरभाव करेह ॥१॥
अभिनव दीपक ए प्रभु, पूजी मांगो हेव ।
अज्ञान तिमिर जे अनादिनुं, टालो देवाधिदेव ॥

ढाल पांचमी ।

(झुमखडानी देशी)

भाव दीपक प्रभु आगले, द्रव्य दीपक उत्साहे । जिनेसर पूजीए । प्रगट करी परमातमा, रूप भावो मन मांहे ॥ जि० ॥ १ ॥ धूम कषाय न जेहमां, न छिपे पतंगने तेज । जि० । चरण चित्रामण नवि चले, सर्व तेजनुं तेजरे ॥जि०॥२॥ अध न करे जे आधारने, समीर तणे नहीं गम्य । जि० । चंचल भाव जे नवि लहे, नित्य रहे वली रम्य ॥ जि० ॥ ३ ॥ तैल प्रक्षेप जिहां नहीं, शुद्ध दशा नहि दाह । जि० । अपर दीपक ए अरचतां, प्रगटे प्रशम प्रवाह ॥ जि० ॥ ४ ॥ जेम जिन-मति ने धनसिरि, दीप पूजनथी दोय । जि० ।

अमर गति सुख अनुभवी, शिवपुर पोहोती सोय ॥ जि० ॥ ५ ॥



(काव्यम्)

बहुलमोहतमिस्रनिवारकं स्वपरवस्तुविकासनमात्मनः ।
विमलबोधसुदीपकमादधे भुवनपावनपारगताग्रतः ॥ १ ॥

॥ इति पंचम दीपकपूजा समाप्ता ॥



अथ षष्ठ अक्षतपूजा ।

॥ दोहा ॥

समकितने अजुवालवा, उत्तम एह उपाय ।
पूजाथी तमे प्रीछजो, मनवंछित सुख थाय ॥१॥
अक्षत शुद्ध अखंडशुं, जे पूजे जिनचंद ।
लहे अखंडित तेह नर, अक्षय सुख आनंद ॥२॥



ढाल ६ठी ।

(धर्म जिणंद दयालजी धर्मतणो दाता, ए देशी)

अक्षत पूजा भवि कीजेजी, अक्षत फल दाता । शालि गोधूम पण लीजेजी अ० । प्रभु सन्मुख स्वस्तिक कीजेजी अ० । मुक्ताफल वीच में दीजेजी अ० ॥ १ ॥ एहवा उज्वल अक्षत

वासीजी अ० । शुभ्र तंदुल वासे उल्लासीजी अ० । चूरक चउगति चित्त चोखेंजी अ० । पूरी अक्षय सुख लहो जोखेजी अ० ॥ २ ॥ पुनरावर्त हरवा हाथेजी अ० । नंदावर्त करो रंग साथेजी अ० । कर जोडी जिनमुख रहीनेजी अ० । एम आखो शिव दीयो वहीनेजी अ० ॥ ३ ॥ जगनायक जगगुरु जेताजी अ० । जगबंधु अमल विभु नेताजी अ० । ब्रह्मा ईश्वर वडभागीजी अ० । योगीश्वर विदित वैरागीजी अ० ॥ ४ ॥ एहवा देवाधिदेवने पूजेजी अ० । भव भवनां पातक धूजेजी अ० । जेम कीर युगल भव पारजी अ० । लहे अक्षत पूजा प्रकारजी अ० ॥ ५ ॥



(काव्यम्)

सकलमङ्गलसंभवकारणं, परममक्षतभावकृते जिनम् ।
सुपरिणाममयैरहमक्षतैः परमया रमया युतमर्चये ॥ १ ॥

॥ इति षष्ठ अक्षतपूजा समाप्ता ॥

अथ सप्तम फलपूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रीकार उत्तम वृक्षनां, फल लेई नर नार ।
जिनवर आगे जे धरे, सफलो तस अवतार ॥१॥

फलपूजाना फलथकी, कोडि होय कल्याण ।
अमर वधू उलट धरी, तस धरे चित्तमां ध्यान ॥२॥

ढाल सातमी ।

(विंछीनी देशी)

फल पूजा करो फलकामी. अभिनव प्रभु पुण्ये पामी हो । प्राणी जिन पूजो । श्रीफल अखोड वदाम, सीताफल दाडिम नाम हो प्रा० ॥ १ ॥ जमरूख तरबुज केलां, निमजां कोहलां करों भेलां हो प्रा० ॥ पीस्तां फनस नारंग, पूगी चूअफल घणुं चंग हो प्रा० ॥ २ ॥ खरबूज डाख अंजीर, अन्नास रायण जंबीर हो प्रा० ॥ मिष्ट लिंबु ने अंगुर, शिंगोडा टेटी बीजपूर हो प्रा० ॥ ३ ॥ एम जे जे विषय लहंत, ते ते जिन भवने ढोयंत हो प्रा० ॥ अनुपम थाल विशाल, तेहमां भरीने सुरसाल हो प्रा० ॥ ४ ॥ फलपूजा करे जे भावे, ते शिव रमणी सुख पावे हो प्रा०॥ दुर्गता नारी जेम लहे. कीर युगल वली तेम हो प्रा० ॥ ५ ॥

(काव्यम्)

अमलशान्तरसैकनिधिं शुचिं, गुणफलैर्मलदोषहरैर्हरम् ।
परमशुद्धिफलाय भजे जिनं, परहितं रहितं परभावतः ॥ १ ॥

॥ इति सप्तम फलपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ अष्टम नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

भव दव दहन निवारवा, जलद घटा सम जेह।
जिनपूजा युगते करी, त्रिविधे कीजे तेह ॥ १ ॥
पूजा कुगतिनी अर्गला, पुण्य सरोवर पाल ।
शिवगतिनी साहेलडी, आपे मंगल माल ॥ २ ॥
शुभ नैवेद्य शुभ भावशुं, जिन आगे धरे जेह ।
सुरनर शिवपद सुख लहे, हलिय पुरुष परे तेह ॥३॥

॥ ढाल आठमी ॥

(श्रावण मासे स्वामी मेली चाल्या रे, ए देशी)

हवे नैवेद्य रसाल प्रभुजी आगेरे । धरतां भवि सुखकार, प्रभुता जागेरे । कंचन भक्ति उदार, थालमां लावो रे । तार तार मुज तार, भावना भावोरे ॥ १ ॥ लापसी सेव कंसार, लाडु ताजारे । मनोहर मोतिचूर, खुरमां खाजा रे । बरफी पेंडा खीर, घेवर घारीरे । साटा सांकली

सार, पूरी खारी रे ॥ २ ॥ कसमसीया कूलेर, सक्करपारा रे। लाखणसाइ रसाल, धरो मनोहारा रे। मोतैया कलिसार, आगे धरीयेरे। भव भव संचित पाप, क्षणमां हरियेरे ॥ ३ ॥ मरकी मेसुर दहींथरां, वरसोलांरे। पापड़ पूरी खास, दोठां धोलां रे। गुंदवड़ां ने रेवड़ी, मन भावेरे। फेणी जलेवी मांहे, सरस सोहावे रे ॥ ४ ॥ शालि दालने सालणां, मन रंगेरे। विविध जाति पकवान, ढोवो चंगेरे। ताल कंसाल मृदंग, वीणा वाजेरे। भेरी नफेरी चंग, मधुरध्वनि गाजेरे ॥ ५ ॥ शोल सजी शणगार, गोरी गावेरे। देतां अढलक दान, जिन घर आवेरे। एणि परे अष्ट प्रकार, पूजा करशे रे। नृप हरिचंद्र परे तेह, भव जल तरशेरे ॥ ६ ॥

(काव्यम्)

सफलजन्मतनजीवितदायिनी, विमलभक्तिविशुद्धिसमन्विता।
भगवत. स्तुतिसारसुखासिका, भवतरामहरास्तु विभो. पुरः ॥ ७ ॥

॥ इत्यष्टमी नैवेद्य पूजा समाप्ता ॥

ढाल नवमी।

(नमो भवि भावशुं ए, ए देशी)

अष्टप्रकारी चित्त भाविये ए, आणी हर्ष अपार। भविक जन सेविये ए। अष्ट महासिद्धि संपजे ए, अरु बुद्धि दातार ॥ भवि० ॥ १ ॥ अरु दिट्ठि पण पामिये ए, पूजाथी भवि श्रीकार । भ० । अनुक्रमे अष्ट करम हणी ए, पंचमी गति लहो सार ॥ भ० ॥ २ ॥ शा न्हाना सुत सुंदरू ए, विनयादिक गुणवंत । भ० । शाह जीवणना कहेणथी ए, कीयो अभ्यास ए संत ॥ भ० ॥ ३ ॥ सकल पंडित शिर सेहरो ए, श्रीविनीतविजय गुरुराय। भ० । तास चरण सेवा थकी ए, देवनां वंछित थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ शशि नयन गज विधु वरू ए, नाम संवत्सर जाण । भ० । तृतीया सित आसो तणीए, शुकरवार प्रमाण ॥ भ० ॥५॥ पादरा नगर विराजता ए, श्रीसंभव सुखकार । भ० । तास पसायथी ए रची ए, पूजा अष्ट प्रकार ॥ भ० ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥

इह जगत स्वामी, मोह वामी, मोक्षगामी, सुखकरू। प्रभु अकल, अमल, अखंड निर्मल, भव्य मिथ्या तम हरू॥ देवाधिदेवा, चरण सेवा, नित्य मेवा, आपीये। निज दास जाणी, दया आणी, आप समोवड थापीये ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनवरवृन्दं शुद्धभावेन कीर्ति-
विमलमिह जगत्यां पूजयन्त्यष्टधा ये।
निजकलिमललीनां कर्मणोऽन्तं विधाय
परमगुणमयं ते यान्ति मोक्षं हि धीराः ॥ १ ॥

॥ इति श्रीदेवविजयजी कृत अष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

